एकादश माला, खंड 2, अंक 7

मंगलवार, 11 जून, 1996
21 ज्येष्ठ, 1918 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

पहला सत्र – भाग दो
(ग्यारहवीं लोक सभा)

सत्यमेव जयते

(खण्ड 2 में अंक 6 से 8 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य: पचास रुपये

लोक सभा के दिनांक 11 जून, 1996 के वाद-विवाद
(हिन्दी संस्करण) का शुद्धि-पत्र

कालम	पंक्ति	के स्थान पर	पढ़िए
9	9	दुर्घनाएं	दुर्घटनाएं
21	24	वरिष्ठत	वरिष्ठतम
31	4	गठित	गणित
35	नीचे से 7	कार्रवा	कार्रवाई
37	नीचे से 13	पृथक्	पृथम
49	नीचे से 2	अस	असर
95	12	याचिका	याचिका समिति
95	नीचे से 2	श्रीमती सुषमा स्वाराज	श्रीमती सुषमा स्वराज
98		होंगी	करेंगी
98	12	अस्वास्थ्य	अस्वस्थ
99	6	श्री बी के गडवी	श्री बी.के. गढ़वी
100	16	नीजिकरण	निजीकरण

सम्पादक मण्डल

श्री सुरेन्द्र मिश्र
महासचिव
लोक सभा

श्रीमती रेवा नैयर
संयुक्त सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक
लोक सभा सचिवालय

श्री केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

श्रीमती चन्दना त्रिवेदी
सम्पादक

श्रीमती सरिता नागपाल
सहायक सम्पादक

श्री देवेन्द्र कुमार
सम्पादक

श्री मुन्नी लाल
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।)

विषय-सूची

एकादश माला, खंड 2, पहला सत्र-भाग दो, 1996/1918 (शक)
अंक 7, मंगलवार, 11 जून, 1996/21 ज्येष्ठ, 1918 (शक)

विषय	कालम
प्रधान मंत्री और सदन के नेता का परिचय	1—2
मंत्रियों का परिचय	2 - 3
विधेयकों पर अनुमति	3
नियम 377 के अधीन मामले	9—12
(एक) बरेली में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 पर एक बाई-पास बनाए जाने की आवश्यकता	
श्री संतोष कुमार गंगवार	9
(दो) गुजरात में कपड़ा मिलों को बन्द होने से रोकने के लिए कदम उठाए जाने की आवश्यकता	
श्री सनत मेहता	9
(तीन) अल्पसंख्यक आयोग की सिफारिशों को लागू कर उड़ीसा के निकटवर्ती राज्यों में रह रहे उड़िया लोगों के हितों की रक्षा किए जाने की आवश्यकता	
श्री श्रीबल्लभ पाणिग्रही	9—10
(चार) बिहार के कोडरमा क्षेत्र में पुलों के निर्माण के लिए प्राथमिकता के आधान पर वित्तीय सहायता उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता	
श्री आर.एल.पी. वर्मा	10
(पांच) बीकानेर और हावड़ा के बीच सीधी रेल सेवा शुरू किए जाने की आवश्यकता	
श्री महेन्द्र सिंह भाटी	10—11
(छ) विशाखापत्तनम हवाइ अड्डे के विकास के लिए कदम उठाए जाने की आवश्यकता	
डा. टी. सुब्बारामी रेड्डी	11
(सात) लोअर दामोदर नदी के आस-पास की भूमि को कृषि योग्य बनाने के कार्य को पूरा करने के लिए एक संशोधित योजना की स्वीकृति दिए जाने की आवश्यकता	
श्री इन्नान मौल्लाह	11- 12
(आठ) कन्याकुमारी को एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन विहार के रूप में विकसित किए जाने की आवश्यकता	
श्री एन. डेनिस	12
मंत्रि-परिषद् में विश्वास का प्रस्ताव	12- 132
श्री एच.डी. देवेगौड़ा	12, 16—21, 27
श्री जसवन्त सिंह	29 —41
श्री ए.आर. अन्तुले	41—47
श्री सोमनाथ चटर्जी	47—53
श्री शरद यादव	53- -63
श्री मधुकर सर्पोतदार	63—70
श्री चतुरानन मिश्र	70—78
श्री राजेश पायलट	79—87
श्रीमती सुषमा स्वराज	87 102
श्री कांशीराम	102—105

विषय	कालम
श्री आनंद मोहन	105—110
श्री मुलायम सिंह यादव	110—121
सरदार सुरजीत सिंह बरनाला	121—124
श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन	126—128
श्री चित्त बसु	128—130
श्री वीरेन्द्र प्रसाद वैश्य	130—132
अध्यक्ष द्वारा घोषणा	113

लोक सभा

मंगलवार, 11 जून, 1996/21 ज्येष्ठ, 1918 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों...

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (चान्दनी चौक-दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, मैंने एक नोटिस दिया है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अभी नहीं। एक मिनट इन्तजार करिये। मैं उस पर आऊंगा, मुझे कुछ औपचारिकताएं पूरी करनी है।

[हिन्दी]

श्री दत्ता मेघे (रामटेक) : अध्यक्ष महोदय, मैंने भी एक नोटिस दिया है।

श्री राम नाईक (मुम्बई उत्तर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा भी एक नोटिस है।

अध्यक्ष महोदय : एक मिनट रूकिए।

[अनुवाद]

मुझे आज कुछ औपचारिकताएं पूरी करनी हैं।

[हिन्दी]

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमें भी सुनिए।

श्री गंगा राम कोली (बयाना) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमको भी चांस मिलना चाहिए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं इस पर बाद में आऊंगा। कृपया मुझे कुछ औपचारिकताएं पूरी करने दें।

पूर्वाह्न 11.02 बजे

प्रधान मंत्री और सदन के नेता का परिचय

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, मुझे प्रधान मंत्री, श्री एच. डी. देवेगौड़ा का इस सभा से परिचय कराते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। हम सभी उनसें परिचित हैं और मेरे विचार से कुछ अधिक कहने की मुझे आवश्यकता नहीं है। मैं उनकी सफलता और भलाई के लिये कामना करता हूं।

मुझे सदन के नेता, श्री राम विलास पासवान का भी परिचय कराते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है।

मैं प्रधान मंत्री जी को केन्द्रीय मंत्रि-परिषद का परिचय कराने का अनुरोध करता हूं।

पूर्वाह्न 11.2½ बजे

मंत्रियों का परिचय

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री एच.डी. देवेगौड़ा) : महोदय, आपकी अनुमति से मैं इस महान सभा से अपने साथियों का परिचय कराना चाहता हूं।

श्री राम विलास पासवान		रेल मंत्री और संसदीय कार्य मंत्री
श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया		कल्याण मंत्री
श्री सी.एम. इब्राहीम		नागर विमानन और पर्यटन मंत्री
श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव		खाद्य मंत्री और नागरिक आपूर्ति मंत्री
श्री इन्द्र कुमार गुजराल	:	विदेश मंत्री
श्री एम. अरूणाचलम	:	शहरी कार्य और रोजगार मंत्री
श्री मुलायम सिंह यादव		रक्षा मंत्री
श्री मुरासोली मारन	:	उद्योग मंत्री
श्री पी. चिदंबरम	:	वित्त मंत्री
श्री एस.आर. बोम्मई		मानव संसाधन विकास मंत्री
श्री टी.जी. वेंकटरामन		जल-भूतल परिवहन मंत्री
श्री ऐरान नायडू		ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार मंत्री
श्री बेनी प्रसाद वर्मा	:	संचार मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री चंद्रदेव प्रसाद वर्मा		ग्रामीण क्षेत्र और रोजगार मंत्रालय में राज्य मंत्री
कैप्टन जयनारायण प्रसाद निषाद	:	पर्यावरण और वन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती कांति सिंह	:	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री

श्री मोहम्मद तसलीमुद्दीन	:	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा. एस. वेणुगोपालाचारी	:	ऊर्जा मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सलीम इकबाल शेरवानी	:	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री
डा.यू. वेंकटेश्वरलू	:	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री

पूर्वाह्न 11.05 बजे

विधेयकों पर अनुमति

[अनुवाद]

महासचिव : महोदय, मैं संसद की दोनों सभाओं द्वारा पारित और राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त निम्नलिखित दस विधेयक सभा पटल पर रखता हूं :

1. वित्त विधेयक,1996
2. विनियोग (रेल) लेखानुदान विधेयक, 1996
3. विनियोग (रेल) विधेयक, 1996
4. विनियोग (रेल) संख्यांक 2 विधेयक, 1996
5. विनियोग (लेखानुदान) विधेयक, 1996
6. विनियोग विधेयक, 1996
7. उत्तर प्रदेश विनियोग (लेखानुदान) विधेयक, 1996
8. उत्तर प्रदेश विनियोग विधेयक, 1996
9. जम्मू-कश्मीर विनियोग (लेखानुदान) विधेयक, 1996
10. जम्मू-कश्मीर विनियोग विधेयक, 1996

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, मुझे एक अनुरोध करना है। शून्य काल के दौरान मामले उठाने की अनुमति हेतु 59 नोटिस प्राप्त हुए हैं। मेरे विचार से हमारे पास इन सबके लिये समय नहीं है। मैंने कुछ मामलों को नियम 377 के अधीन उठाने की अनुमति दी है। शून्य काल के लिये प्राप्त सूचनाओं में से मैंने एक अविलम्बनीय महत्व के मामले जो कि डोडा की घटना के बारे में है को सभा में उठाने की अनुमति दी है। पहले मैं श्री जगमोहन को आमंत्रित करता हूं। आप कृपया संक्षेप में बोलें।

(व्यवधान)

श्री जगमोहन (नई दिल्ली) : महोदय, मैं, आपके माध्यम से, कुछ दिन पूर्व डोडा जिले में हुए जनसंहार में दस मासूम लोगों की हत्या की घटना के संबंध में सभा को कुछ तथ्यों से अवगत कराना चाहता हूं। यह एक अति निंदनीय और दुःखद घटना है। इससे भी ज्यादा निंदनीय और दुख की बात यह है कि इस प्रकार की घटनाएं लगातार हो रही हैं। कुछ दिन पूर्व ही 16 लोगों की निर्मम हत्या कर दी गई थी। उससे पहले 10 लोगों की हत्या कर दी गई और फिर 7 लोगों की हत्या कर दी गई और अभी तक एक भी अपराधी को पकड़ा नहीं जा सका है। यह अति दुख का विषय है। जब कभी भी कोई घटना होती है तो कोई न कोई जाकर वक्तव्य दे देता है और मामला वहीं समाप्त हो जाता है। जब तक सरकार इसे गंभीरता से नहीं लेगी कुछ भी होने वाला नहीं है। यह अति खेद की बात है जम्मू-कश्मीर में, जहां पिछले सात वर्षों से आतंकवाद और तोड़-फोड़ की घटनाएं होती आ रही हैं, वहां एक भी अपराधी को न तो अब तक पकड़ा गया है और न सजा दी गई है। यह किस तरह का प्रशासन है? यह कैसी सरकार है कि अब तक किसी भी व्यक्ति को सजा नहीं मिली है? चाहे भारतीय वायु सेना के अधिकारियों के अपहर्त्ता हों या हत्यारे ही क्यों न रहे हों यहां तक कि केन्द्रीय गृह मंत्री की बेटी के अपहर्त्ता को भी पकड़े जाने के पश्चात् सजा नहीं मिली है। देश में इस तरह का प्रशासन और सरकार कार्य रही है। जब तक हम साहस, दृढ़-निश्चय और इच्छा शक्ति का परिचय नहीं देंगे इस समस्या का अंत नहीं होगा। **(व्यवधान)** जहां तक मेरे योगदान का संबंध है, मैं बताना चाहता हूं कि जब मैं जम्मू-कश्मीर में था जब मैंने समस्याग्रस्त डोडा जिले में शुरूआत में ही समस्या को पूरी तरह से समाप्त कर दिया था। **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री मुनव्वर हसन (कैराना) : सबसे ज्यादा अत्याचार और हत्याएं आपके राज में हुई थी।... **(व्यवधान)**

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर) : कश्मीर की सारी स्थिति को नियंत्रण में करने वाले, यह राज्यपाल थे।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : काफी हो गया। श्री जगमोहन अब कृपया समाप्त कीजिए।

श्री जगमोहन : मैं सिर्फ एक मिनट और लूंगा। यह सच है कि उस समय डोडा जिले में समस्या पूर्ण रूप से समाप्त हो गई थी। उस दौरान वहां ऐसी कोई घटना नहीं घटी थी। **(व्यवधान)** मैं इसको साबित कर सकता हूं। **(व्यवधान)** मैंने न्यायालय का जम्मू में एक अभिहित गठन किया और मामलों को सी.बी.आई. को सौंपा तथा लोगों को गिरफ्तार किया था। सभी सबूत प्रस्तुत किए गये और अभिहित न्यायालय गठित किया गया था। यह अति दुर्भाग्यपूर्ण है कि प्रमाण मिलने के बावजूद भी इस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं। इन लोगों के बर्बरतापूर्ण कृत्यों को सारे विश्व के समक्ष रखा जाना चाहिए ताकि उनको मालूम चले कि जम्मू-कश्मीर मे क्या हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय : मैं प्रो. चमन लाल गुप्ता को बोलने की अनुमति दे रहा हूं क्योंकि वह उसी निर्वाचन क्षेत्र से चुनकर आए हैं।

[हिन्दी]

प्रो. चमन लाल गुप्ता (ऊधमपुर) : अध्यक्ष महोदय, ये जो इन्सीडैंट डोडा के अन्दर हुआ है, उसमें सबसे बड़ा कारण सिक्योरिटी फोर्सिस बनी हैं, जो कि इलैक्शन करवाने के लिए वहां भेजी गयी थी। उनको इमीडिएटली विदड्रा न किया जाये। टैरोरिस्ट्स तीन महीने पहले से ही चैलेंज कर रहे थे। उन्होंने यह कहा कि जैसे ही ये सिक्योरिटी फोर्सिस विदड्रा होंगी, हम आपको देख लेंगे। मैंने यह बात छः दिन पहले प्रैस के अन्दर कही थी।

जनाबे आला, हुआ यही कि सिक्योरिटी फोर्सिस विदड्रा होनी शुरू हो गयी और नतीजे के तौर पर आपने लोगों को इस बात के लिए तैयार नहीं किया कि वे टेरोरिस्ट्स का मुकाबला कर सकें।

लोग बाकायदा ट्रेनिंग लेने के लिए उनके पास आते हैं। वे उनको ट्रेनिंग दे देते हैं लेकिन हथियार नहीं देते। ... **(व्यवधान)** इस समय भी आप भद्रवाह में जाकर देखिए, दो सौ लोग हैं जिन्हे ट्रेनिंग दे चुके हैं। वे एक्सपर्ट हो गए हैं। जिन्होंने ट्रेनिंग ली है, वे लोगों के सामने है लेकिन उनके पास हथियार नहीं है। वे आज अपने घर में नहीं जा सकते। ये जो घटना घटी है, इसका मेन कारण इमीडिएट विदड्राल ऑफ दी सिक्युरिटी फोर्सेस है। ... **(व्यवधान)** इस मसले में मेरा आपसे निवेदन है कि जब चुनाव के लिए बात की गई तो वहां पर चुनाव का माहौल नहीं था लेकिन फिर भी लोगों ने डटकर, हिम्मत करके और उनके हर तरह के चैलेंज को कबूल करके इलैक्शन के लिए काम किया और वोट डाले। उस वोट डालने के मसले को जब टैरोरिस्ट्स इस तरह से चैलेंच कर रहे हैं तो वहां पर जो ऑन स्पॉट ऐडमिनिस्ट्रेशन थी उसकी ड्यूटी थी कि वह यह देखती कि सिक्युरिटी फोर्सेस विदड्रा न की जाए। लेकिन अफसोस की बात है कि वहां से इमीडिएटली विदड्राल शुरू हुआ जिसके नतीजे के तौर पर यह घटना हमारे सामने आई है। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : महोदय, कृपया कश्मीर से निर्वाचित हमारे सदस्यों में से एक को इस पर बोलने की अनुमति दीजिए।

[हिन्दी]

प्रो. चमन लाल गुप्ता : जब तक आप वहां के लोगों को हथियार नहीं देंगे, वहां पर हथियार है लेकिन दिए नहीं जा रहे हैं। ...**(व्यवधान)** जो पाकिस्तान से, अफगानिस्तान से आए लोग हैं उनका मुकाबला कैसे करें। ...**(व्यवधान)** कम से कम दस हजार लोग छः दिनों में माईग्रेट करके आ गए हैं। आप माईग्रेशन को रोकना चाहते हैं या फिर कश्मीर की तरह चाहते हैं कि चार लाख लोग और आ जाएं। माईग्रेशन को रोकने का एक ही तरीका है कि वहां पर सिक्युरिटी फोर्सेस को फ्री हैंड दीजिए। उनको वहां पर रखा जाए और लोगों को आर्म दिए जाएं। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : महोदया, अब व्यवस्था का कोई प्रश्न नहीं उठाया जायेगा।

श्रीमति गीता मुखर्जी : आपने स्वयं ही कहा है कि नियम 377 के अधीन मामले उठाये जायेंगे। नियम 377 के अधीन मामले उठाने के लिए सदस्यों को विषय-वस्तु लिखित रूप से पढ़नी होगी। लेकिन अब क्या चल रहा है?

अध्यक्ष महोदय : मैंने कहा है कि यह मामला नियम 377 के अधीन नहीं आता। मैं नियम 377 के अधीन मामले उठाने की अनुमति दे रहा हूं। मैंने यह भी कहा है कि मुझे शून्य काल के दौरान मामले उठाने के सम्बन्ध में लगभग 59 नोटिस मिले हैं। उन्हें समायोजित करना संभव नहीं है। लेकिन चूंकि डोडा जनसंहार का मामला एक महत्वपूर्ण मामला है, इसलिए मैं इसे शून्य काल के दौरान उठाये जाने वाले मामले की तरह अनुमति दे रहा हूं। मैंने यही कहा है।

[हिन्दी]

श्री मंगतराम शर्मा (जम्मू) : अध्यक्ष महोदय, जम्मू कश्मीर में जो टैरोरिज्म के वाकयात हो रहे हैं, जो बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं ...**(व्यवधान)**

श्री चार्ज फर्नान्डीज (नालन्दा) : अध्यक्ष महोदय, यूरिया के आयात का मामला उठाना है। ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैंने अभी आपको अनुमति नहीं दी है। अभी नहीं।

[हिन्दी]

श्री मंगत राम शर्मा : वहां पर जो बेगुनाह लोगों की हत्याएं हो रही हैं, मैं और मेरी पार्टी उसे कन्डैम करती है। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री सुरेश कलमाडी (पुणे) : महोदय, माननीय सदस्य का यह प्रथम भाषण है। कृपया उसे पूरा करने की अनुमति दीजिए।

[हिन्दी]

श्री मंगत राम शर्मा : उनकी ऐक्टीविटीज कम्युनल लाइन पर है। ... **(व्यवधान)** जम्मू कश्मीर में सैकुलर लाइन पर सियासत चल सकती है। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री प्रिय रंजन दास मुंशी (हावड़ा) : महोदय, जब भारतीय जनता पार्टी का सदस्य बोलता है, तो हम किसी तरह की बाधा नहीं डालते। श्री शर्मा को अपना भाषण समाप्त करने की अनुमति दी जानी चाहिये। ... **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य अपना प्रथम भाषण दे रहे हैं। जब कोई माननीय सदस्य अपना पहला भाषण दे रहा हो, तो हमें किसी तरह का व्यवधान नहीं डालना चाहिये। यही नियम है। कृपया उन्हें परेशान मत कीजिये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री मंगत राम शर्मा : मैं अर्ज कर रहा था कि जम्मू कश्मीर में जो टैरोरिस्टस एक्टीविटीज हो रही हैं और जो बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं, मैं और मेरी पार्टी, हम जो वहां से चुनकर आए हैं, उसे कन्डैम करते हैं। ...**(व्यवधान)***

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना भाषण समाप्त कीजिये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री विनय कटियार : माननीय सदस्य ने जो भारतीय जनता पार्टी पर आरोप लगाया है, ...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मैं उसे देख लूंगा।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, कृपया बैठ जाइये। मैं कार्यवाही-वृत्तांत देखूंगा।

[हिन्दी]

श्री विनय कटियार : पहले यह शब्द वापस लें। ... **(व्यवधान)**

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (चादंनी चौक-दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, मैंने आपको नोटिस दिया है। .... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं सरकार से अनुरोध करता हूं कि वह इस घटना की जांच करें।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री गुलाम रसूल कार (बारामूला) : कुछ लोग कश्मीर में शांति के स्थान पर आतंक को फैला रहे हैं, ऐसे लोग ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब कृपया बैठ जाइये। श्री रसूल, कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अब बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : रसूल जी, मैं बोल रहा हूं। आपको खड़े नहीं होना चाहिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : रावत जी, कृपया बैठ जाइये। क्या मुझे सभा को पुनः याद दिलाना होगा कि इस सभा की कार्यवाही का सीधा प्रसारण किया जा रहा है? मेरे पास बहुत से पत्र आ रहे हैं और लोग हमारे व्यवहार पर बहुत टीका-टिप्पणियां कर कर रहे हैं। यह कोई तरीका नहीं है। हमारे समक्ष एक महत्वपूर्ण कार्य है, विश्वास प्रस्ताव है और इस पर चर्चा शुरू की जानी है।

(व्यवधान)

श्री बी.के. गढ़वी (बनासकांठा) : अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : श्री गढ़वी, आप पहले भी इस सभा के सदस्य रह चुके हैं। आपको नियमों की जानकारी है। शुन्य-काल के दौरान व्यवस्था का कोई प्रश्न नहीं उठाया जाता है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब, हम नियम 377 के अधीन मामले उठायेंगे।

---

* अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही-वृत्तांत से निकाल दिया गया।

नियम 377 के अधीन मामले

पूर्वाह्न 11.21 बजे

[हिन्दी]

(एक) बरेली में राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 पर एक बाई पास बनाए जाने की आवश्यकता

श्री संतोष कुमार गंगवार (बरेली) : बरेली राष्ट्रीय राजमार्ग 24 (दिल्ली-लखनऊ) के मध्य स्थित मुख्य महानगर है। इस राष्ट्रीय राजमार्ग पर अत्यधिक यातायात चलता है। ट्रैफिक का घंटों-घंटों जाम रहना, दुर्घनाएं होना सामान्य बात हो गई है। उक्त राष्ट्रीय राजमार्ग को चार लेन का बनाये जाने तथा बरेली के ऊपर बाई पास के निर्माण की मांग पिछले काफी समय से की जा रही है।

मेरा केन्द्र सरकार से आग्रह है कि इस महत्वपूर्ण समस्या को ध्यान में रखते हुए उक्त मार्ग पर बरेली पर बाई पास निर्माण एवम् इसे चार लेन का बनाये जाने की स्वीकृति प्रदान करें।

[अनुवाद]

(दो) गुजरात में कपड़ा मिलों को बंद होने से रोकने के लिए कदम उठाये जाने की आवश्यकता

श्री सनत मेहता (सुरेन्द्रनगर) : महोदय, गुजरात में राष्ट्रीय कपड़ा निगम तथा गुजरात राज्य कपड़ा निगम दोनों की कुल 22 कपड़ा मिलों के बंद होने का खतरा उत्पन्न हो गया है जिसके परिणामस्वरूप 20 हजार मजदूर बेरोजगार हो जाएंगे तथा गुजरात में निजी तथा सरकारी क्षेत्र की कपड़ा मिलों में बेरोजगारों की संख्या 80 हजार तक पहुंच चायेगी।

यह स्थिति भारतीय औद्योगिक विकास बैंक की रिपोर्ट के कारण उत्पन्न हुई है जिसकी नियुक्ति औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड ने की है।

कपड़ा मंत्रालय तथा एन.आर.एफ. अधिकारियों को समय रहते इस संबंध में उचित कदम उठाने चाहिए।

(तीन) अल्पसंख्यक आयोग की सिफारिशों को लागू कर उड़ीसा के निकटवर्ती राज्यों में रह रहे उड़िया लोगों के हितों की रक्षा किए जाने की आवश्यकता

श्री श्रीबल्लभ पाणिग्रही (देवगढ़) : महोदय, उड़ीसा से लगते हुए अन्य राज्यों में करीब 60 लाख उड़िया लोग रहते हैं। यह दुख और चिंता का विषय है कि इन इलाकों में अल्पसंख्यक आयोग की बहुत सी सिफारिशें इन क्षेत्रों में लागू नहीं की गई हैं जिसके परिणामस्वरूप उड़िया लोग अपने आपको उपेक्षित महसूस कर रहे हैं और इसी कारण उनमें असंतोष की भावना पैदा हो गई है।

मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि वह यह सुनिश्चित करे कि सभी राज्य सरकारें इन क्षेत्रों में अल्पसंख्यक आयोग की सिफारिशों को अक्षरशः लागू करें।

[हिन्दी]

(चार) बिहार के कोडरमा क्षेत्र में प्राथमिकता के आधार पर पुलों के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराये जाने की आवश्यकता

श्री आर.एल.पी. वर्मा (कोडरमा) : अध्यक्ष महोदय, सर्वांगीण ग्रामीण विकास एवं यातायात व्यवस्था में अत्यन्त पिछड़ा वनांचल भू-भाग के अन्तर्गत कोडरमा लोक सभा क्षेत्र की पांच नदियो पर पुल निर्माण विगत 50 वर्षों से संभव नहीं होने से जन-जन को अपार कष्ट उठा कर 50 से 100 कि.मी. दूरी अनावश्यक रूप से तय करने के लिए विवश होना पड़ता है। इन पांच पुलों के अभाव में 40-50 लाख की आबादी प्रभावित है। जिसमें हजारी बाग, कोडरमा, गिरीडिह एवं नवादा जिले आते हैं।

भारत सरकार के अनुरोध है कि आन्दोलन ग्रस्त वनांचल क्षेत्र के विकास के दृष्टिकोण से निम्नांकित पांच लोक महत्व के पुलों के निर्माण हेतु राज्य सरकार को आवश्यक आर्थिक सहायता दे कर इन को प्राथमिकता के आधार पर निर्माण करने के लिए आवश्यक निर्देश दें।

1. बड़ाकर नदी पुल - परसाबाद रेलवे स्टेशन एवं बरकट्टा रोड के बीच,
2. सकरी नदी पुल - मालडा - गांवा - पटना के बीच,
3. सकरी नदी पर पुल - जोरासीमर - गांवा - सतगांवा रोड के बीच,
4. मरकच्चों नदी पर पुल - मरकच्चो - नवागढ़ चट्टी - धनवार रोड के बीच,
5. ईरगा नही पर पुल - झारखण्ड धाम - परसन - धनवार रोड के बीच,

[हिन्दी]

(पांच) बीकानेर और हावड़ा के बीच सीधी रेल सेवा शुरू किये जाने की आवश्यकता

श्री महेन्द सिंह भाटी (बीकानेर) : अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अधीन एक महत्वपूर्ण मामला आपकी अनुमति से सदन में उठाना चाहता हूं।

मेरे निर्वाचन क्षेत्र बीकानेर के लाखों व्यवसायी पश्चिमी बंगाल की राजधानी में अपना व्यवसाय करते हैं। ये यात्री बीकानेर से अधिकतर रेल द्वारा यात्रा करते हैं। परन्तु खेद की बात है कि सैकड़ों यात्रियों के बीकानेर से हावड़ा एवं हावड़ा से बीकानेर आवागमन की

असुविधा को नजरअन्दाज किया जा रहा है। इस संबंध में बीकानेर में एक सर्वदलीय आन्दोलन बीकानेर से सीधी हावड़ा रेल सेवा चालू करने की मांग ले कर चल रहा है और इस संबंध में पूर्व रेल राज्यमंत्री, श्री सुरेश कलमाडी जी, ने सीधी रेल सेवा शुरू करने का आश्वासन भी दिया था, परन्तु अभी तक कोई कार्यवाई नहीं हुई है।

अतः मैं माननीय अध्यक्ष महोदय के माध्यम से सरकार से आग्रह करूंगा कि वे बीकानेर से हावड़ा तक सीधी रेल सेवा शुरू करने की घोषणा करें।

[अनुवाद]

(छः) विशाखपत्तनम हवाई अड्डे के विकास के लिए कदम उठाये जाने की आवश्यकता

डा.टी. सुब्बारामी रेड्डी (विशाखापत्तनम) : अध्यक्ष महोदय, विशाखपत्तनम हवाई अड्डे पर अभी केवल बोइंग विमान ही उतर सकते हैं और वह भी सूरज छिपने से पहले। उद्योगों के तेज विकास के लिए इस हवाई अड्डे का विकास किया जाना अत्यावश्यक है, जो गरीबी दूर करने और रोजगार के अवसर बढ़ाकर युवाओं के बीच निराशा दूर करने का एकमात्र साधन है। विशाखापत्तनम सिविल हवाई अड्डा भारतीय नौसेना के नियंत्रनाधीन है जिसे विमानपत्तन का विकास और विस्तार करने का काम नहीं करता है। विशाखपत्तनम हवाई अड्डे का उन्नयन, रखरखाव तथा विस्तार एयरबस तथा रात के समय उड़ानों के प्रचालन के लिए बहुत आवश्यक है।

इसलिए, मैं केन्द्र सरकार से अनुरोध करता हूं कि वे विशाखापत्तनम हवाई अड्डे के विकास का कार्य भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण को सौंपे। मैं माननीय नागर विमानन मंत्री से अनुरोध करता हूं कि वे पहल करें तथा आवश्यक कार्यवाही करें।

(सात) लोअर दामोदर नदी के आस-पास की भूमि को कृषि योग्य बनाने के कार्य को पूरा करने के लिए संशोधित योजना को स्वीकृति दिये जाने की आवश्यकता

श्री हन्नान मोल्लाह (उलूबेरिया) : लोअर दामोदर नदी के आस पास की भूमि को कृषि योग्य बनाने के कार्य को पूरा करने हेतु पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा 1979 में भेजी गई संशोधित योजना को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृति न दिये जाने के कारण पश्चिम बंगाल के कई भागों जिसमें हावड़ा, हुगली वर्तमान और मिदनापूर जिले शामिल है, में बाढ़ और जल-प्लावन के कारण गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। इसके साथ ही बाढ़ रोकने के लिए रूपनारायणपुर नदी के तल को गहरा करने का कार्य भी अत्यावश्यक है। परन्तु गंगा बाढ़ नियंत्रण आयोग इस कार्य को शुरू नहीं कर सका है।

दक्षिण बंगाल का काफी बड़ा हिस्सा और मेरा पूरा निर्वाचन क्षेत्र लोअर दामोदर नदी के आस पास की भूमि को कृषि योग्य बनाने के कार्य के पूरा न होने के कारण प्रति वर्ष गंभीर समस्याओं का सामना करता है।

मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि यह कार्य शुरू करने में वह और अधिक विलम्ब न करे।

(आठ) कन्याकुमारी को एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक विहार के रूप में विकसित किये जाने की आवश्यकता

श्री एन. डेनिस (नागरकोइल) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे देश के सुदूर दक्षिणी हिस्से, कन्याकुमारी का विकास एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल के रूप में किये जाने की आवश्यकता है। प्रतिदिन हजारो देशी और विदेशी पर्यटक, तीर्थ यात्री और अन्य व्यक्ति इस सुदूर दक्षिणी हिस्से को देखने आते हैं जहां तीन समुद्रों का मिलन होता है और सूर्योदय तथा सुर्यास्त के दृश्य देखने को मिलते हैं। यहां पर लोग समुद्र के बीच बने प्रसिद्ध विवेकानन्द रॉक मेमोरियल जहां विवेकानन्दजी ने साधना की थी, गांधी मैमोरियल बिल्डिंग **'गांधी मंडपम'** तथा अन्य पर्यटकों को आकर्षित करने वाले दृष्य देखने और प्रसिद्ध भगवती अम्मा मन्दिर में पूजा करने आते हैं। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भी, इस स्थान का विकास किया जाना आवश्यक है। अब, अनेक कठिनाईयों जैसे पानी का अभाव, होटलों की अपर्याप्तता, समुचित रेल और विमान सेवाओं के अभाव के कारण, पर्यटक अपने आपको बहुत पंगु महसूस करते हैं।

इसलिए, केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि वह एक मास्टर प्लान लागू करके इन कठिनाइयों को दूर करने तथा कन्याकुमारी को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने के लिए तत्काल कदम उठाए।

पूर्वाह्न 11.32 बजे

मंत्रि परिषद् में विश्वास प्रस्ताव

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री एच.डी. देवेगौड़ा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

> "कि यह सभा मंत्रि परिषद् में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ :

> "कि यह सभा मंत्रि परिषद् में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

इस पर चर्चा के लिए सात घंटे का समय आबंटित किया गया है।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज (नालंदा) : अध्यक्ष जी, यह सदन चलाने का तरीका नहीं है। ...**(व्यवधान)**

श्री राजेन्द अग्निहोत्री (झांसी) : अध्यक्ष जी, यह भ्रष्टाचार का मुद्दा है, आप इसे दबाने की कोशिश न करें।... **(व्यवधान)**

श्री जार्ज फर्नान्डीज : आप मुझसे पूछिये कि मैं क्या चाहता हूं। मैं कुछ बातें आपके समाने रखना चाहता हूं। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया इधर देखिए, कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे शून्यकाल के लिए 59 सूचनाएं प्राप्त हुई है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप पहले मेरी बात क्यों नहीं सुनते?

[हिन्दी]

प्लीज, पहले आप सुन लीजिए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं आप सबको अवसर देना चाहता था। मैंने सूचनाएं पढ़ी हैं। उनमें से अनेक मामले संसद सदस्यों के निर्वाचन क्षेत्रों में हुई घटनाओं से संबंधित हैं। मैं संसद सदस्यों की भावनाओं को समझता हूं। मैं भी एक संसद सदस्य हूं और आपकी तरह, मेरा भी एक निर्वाचन-क्षेत्र है। इसलिए, मैं उस बात को समझता हूं। जिन मामलों का उल्लेख किया गया है, मैं आपको आश्वासन देता हूं...

(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : मैं निर्वाचन क्षेत्र के मामले की बात नहीं कर रहा हूं। मैं एक राष्ट्रीय मामले की बात कर रहा हूं। **(व्यवधान)** मैंने कोई प्रस्ताव पेश नहीं किया है। मैं राष्ट्रीय मुद्दे की बात कर रहा हूं। **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : जब अध्यक्ष जी खड़े हो गये हैं, तो आप लोगों को खड़े नहीं होना चाहिए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री जार्ज, ऐसा नहीं है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि सब मामले संसद सदस्यों के सम्बद्ध निर्वाचन क्षेत्रों से संबंधित हैं। कुछ अन्य मामले भी हैं जिनकी चर्चा वाद-विवाद के दौरान की जा सकती है।

(व्यवधान)

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों सहित यह एक राष्ट्रीय मुद्दा है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय पुलिय संगठन का संबंध है। हम चाहते हैं कि सभा इस बारे में चर्चा करे। यह सभा कल स्थगित हो जाएगी। हम इस बारे में कब चर्चा करेंगे?

अध्यक्ष महोदय : श्री जार्ज, जब मैं खड़ा हूं तो आपको खड़ा नहीं होना चाहिए। आप इतना अच्छी तरह जानते हैं।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : मैं क्षमा चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है। मैं जो कहना चाहता हूं, वह यह है कि विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान अन्य मामलों को भी उठाया जा सकता है।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : कुछ ऐसे मामले हैं जिनको चर्चा से पहले स्पष्ट किया जाना चाहिए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष जी, हम चाहते हैं कि सदन की कार्यवाही ठीक चले। सदन शांति के साथ चले। अगर चर्चा में थोड़ी गर्मा-गर्मी होती है तो वह बात अलग है।

लेकिन सारी दूनिया देख रही है, सारा देश देख रहा है, इसलिये सदन ... **(व्यवधान)** अध्यक्ष महोदय, मामला 377 का नहीं है। आपने कुछ सदस्यों को अनुमति दी और कुछ बिना अनुमति के रह गये। सब सदस्यों को अनुमति नहीं दी जा सकती है। मैं आपकी कठिनाई से परिचित हूं। यह अधिवेशन एक विशेष कार्य के लिये बुलाया गया है। वह कार्य हमें सम्पन्न करना है, लेकिन बाहर का घटना चक्र हमारे कब्जे में नहीं है और हमारे हिसाब से नहीं चल रहा है। आज जिस प्रस्ताव पर चर्चा होने जा रही है, उसमें युरिया स्कैंडल बड़े पैमाने पर उठने वाला है। मैं इसके विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं। आप कहेंगे कि जब चर्चा होगी तब उसको उठाया जा सकता है, लेकिन अगर चर्चा में उसको उठाया जायेगा तो उसके साथ न्याय नहीं होगा। यह जो कुछ स्कैंडल है, ऐसे पांच साल पूरे स्कैंडलों से भरे हुए थे, लेकिन 130 करोड़ रुपया गायब हो गया। वह किस की जेब में गया और कहां गया? इसकी सी.बी.आई. इनक्वायरी कर रही है। इनक्वायरी में कहां तक प्रगति हुई है, सदन को इस बारे में विश्वास में लिया जाना चाहिये। पहले भी ऐसे हो चुका है। प्रधान मंत्री अब भाषण देने के लिये खड़े हो रहे हैं। वह हमें यह आश्वासन दें कि इस सम्बन्ध में शाम तक सारे तथ्य सदन के सामने रखे जायेंगे जिससे कल फिर इस मामले को उठाया जा सके। इस मामले को विश्वास प्रस्ताव के नाम पर दबने नहीं दिया जायेगा। आखिर यहां संख्या बल से फैसला होना

है, लेकिन मैं समझता हूं कि यह भ्रष्टाचार कोई संख्या का मामला नहीं है। उधर बैठे हुए सदस्य इसमें रूचि रखते होंगे कि यह क्या हुआ है। यह बहुत बड़ा स्कैंडल है। इसके लिये कौन जिम्मेदार है? मैं चाहता हूं कि प्रधान मंत्री महोदय इस पर वक्तव्य दें। इस बारे में जो भी कुछ हुआ है, उससे सदन को शाम तक अवगत कराया जाये। प्रधान मंत्री खुद किसान हैं। प्रधान मंत्री के सत्ता सम्भालते ही यूरिया का मामला आ गया, किसानों से जुड़ा हुआ मामला आ गया। हम प्रधान मंत्री से आश्वासन चाहते हैं कि यह जो 133 करोड़ रुपया है, यह पूरी की पूरी रकम वसूल की जायेगी और किसी को माफ नहीं किया जायेगा चाहे कोई कितना भी बड़ा हो। हमे वापस रुपया चाहिये। वह देश की गाढ़ी कमाई का पैसा है, पसीने की कमाई है। इस तरह से किसी को रुपये लूटने की और विदेशी बैंक में जमा करने की इजाजत नहीं दी जा सकती है।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अध्यक्ष महोदय, मैं एक ही बात कहना चाहता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : विपक्ष के नेता का जो कुछ कहना था, वह कह चुके हैं यह काफी है।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अध्यक्ष महोदय, नेता विरोधी दल ने जो बात छेड़ी है, मैं उसी पर कुछ सफाई और करना चाहता हूं। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया नहीं।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : नेता विरोधी दल ने जो मांग की है, उसमें क्या-क्या चीजे हैं, वह मैं प्रधान मंत्री जी से सुनना चाहता हूं ... **(व्यवधान)** हम जानना चाहते हैं कि यूरिया आयात करने का ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : हम इस मुद्दे पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। यह काफी है। नहीं, मैं इस मुद्दे पर चर्चा की अनुमति नहीं दूंगा।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : क्या-क्या चीजें सामने आई हैं, वह हमें बतायो जाये ... **(व्यवधान)** अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री मेरी बात सुनने के लिये तैयार हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह काफी है। मैं इस मुद्दे पर चर्चा की अनुमति नहीं दे सकता हूं। इतना पर्याप्त है। अब माननीय प्रधान मंत्री जी बोलेंगे।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : अध्यक्ष महोदय, विश्वास-मत के प्रस्ताव पर अपने विचार व्यक्त करने से पूर्व विपक्ष के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी तथा अन्य वरिष्ठ नेता श्री जार्ज फर्नान्डीज ने उर्वरक से संबंधित मुद्दा उठाया था, जिसमें लगभग 133 करोड़ रुपये की धनराशि अंतर्ग्रस्त है। उन्होंने यह भी कहा था कि सरकार को आज सांय तक इस बारे में सुस्पष्ट उत्तर दे देना चाहिए। मैं इस सभा को यह आश्वासन देना चाहता हूं कि किसी भी तथ्यों को छुपाने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता... **(व्यवधान)** मैं भी इसका रहस्योद्घाटन करने का इतना ही इच्छुक हूं ...**(व्यवधान)** मैं भी यही जानना चाहता हूं कि इसके लिए वास्तव में कौन व्यक्ति दोषी हैं तथा यह भी जानना चाहता हूं कि इसके लिए कौन जिम्मेदार हैं ...**(व्यवधान)**। कृपया थोड़ी-देर के लिए मुझे सहयोग दीजिए। हमें जांच पूरी होने से पहले ही निष्कर्ष नहीं निकालने चाहिये। जांच चल रही है।

महोदय, जहां तक मुझे याद है कि हमारे माननीय विपक्ष के नेता- जो प्रधान मंत्री थे तथा लगभग पन्द्रह दिन उसी कुर्सी पर विराजमान रहे हैं, जिस पर मैं बैठा हूं - ने भी इस विशेष मामले का अध्ययन किया है तथा संबंधित अधिकारियों को इसकी तेजी से जांच करने के निर्देश दिये हैं। मैं जांच-कार्य में हस्तक्षेप नहीं कर रहा हूं। मैंने इस संबंध में अभी तक किसी अधिकारी को नहीं बुलाया है, मैं तो केवल इस मामले से सम्बद्ध दस्तावेजों का अध्ययन कर रहा हूं। इन दस्तावेजों से कुछ तथ्य उजागर हुए हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या वे तथ्य सही हैं तथा वास्तविकताओं पर आधारित हैं। मैं समाचार-पत्रों में छपी खबरों पर नहीं जाना चाहता। जब तक केन्द्रीय जांच ब्यूरो के निदेशक मुझे पूरी जानकारी नहीं दे देते, तब तक बिना समुचित सामग्री के हम इस सभा के समक्ष उत्तर नहीं दे सकते ...**(व्यवधान)** कल मैं अविश्वास-प्रस्ताव पर उत्तर दूंगा। ...**(व्यवधान)** माफ कीजिए, विश्वास के प्रस्ताव पर। इस विशिष्ट मामले पर, मैं इस सभा के समक्ष सारी सामग्री एवं संबंधित तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूं। मैं इस यूरिया घोटाले से संबंधित कोई भी बात छिपाना नहीं चाहता... **(व्यवधान)**

डा. मुरली मनोहर जोशी (इलाहाबाद) : प्रधान मंत्री महोदय, आज सांय तक इस मुद्दे पर तथ्यों सहित उत्तर देने में आपको क्या परेशानी है? यह एक साधारण-सी बात है। विपक्ष के नेता ने आपसे अनुरोध किया है कि आज सांय तक तथ्यों सहित उत्तर दे दें... **(व्यवधान)**

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : जैसा कि मैंने आपको बताया, जांच अभी चल रही है। अतः, संबंधित अधिकारी हैदराबाद में हैं। वे वापस आयेंगे तथा सभी संबंधित दस्तावेज एवं पूरा विवरण देंगे। जब तक

मुझे पूरी सामग्री नहीं मिल जाती, तब तक मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता। मैं सभा को गुमराह नहीं करूंगा। इसी कारण मैं ऐसा कह रहा हूं। मेरा मन साफ है। मैं सारी सामग्री देना चाहता हूं ...**(व्यवधान)**

डा. मुरली मनोहर जोशी : क्या आप कल सभा के समक्ष सभी तथ्य प्रस्तुत कर देंगे? ... **(व्यवधान)** मैं प्रधान मंत्री महोदय से यह अनुरोध करता हूं कि वह सभा के समक्ष तथ्य प्रस्तुत करें, न कि बहस का उत्तर। हम चाहते हैं कि इस सभा के समक्ष तथ्यों को अलग-से प्रस्तुत किया जाये। प्रधान मंत्री ने अभी-अभी अपना वक्तव्य दिया है। इस मुद्दे के संबंध में सरकार के पास जो तथ्य मौजूद हैं, उन्हें सरकार द्वारा एक वक्तव्य के रूप में इस सभा के समक्ष रखा जाये ... **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : गृह मंत्री महोदय...

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भूतपूर्व गृह मंत्री महोदय, मेरे विचार से यह मांग उचित नहीं हैं। जबकि इस मामले पर जांच चल रही है, आप यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि सभी तथ्यों को इस सभा के समक्ष रखा जाये। ऐसा करने से जांच-कार्य पर प्रतिकुल असर पड़ेगा। मेरे विचार से आप आवश्यकता से अधिक मांग कर रहे हैं। जो कुछ जानकारी भी उपलब्ध है, मेरे विचार से प्रधान मंत्री महोदय पहले ही कह चुके हैं कि वह इस संबंध में अपना अन्तिम उत्तर दे देंगे। लेकिन, इस स्तर पर, मेरे विचार से आप पूरे तथ्य रखने की मांग नहीं कर सकते हैं क्योंकि ऐसा करने से जांच कार्य पर प्रतिकुल प्रभाव पडेगा।

(व्यवधान)

डा. मुरली मनोहर जोशी : यदि प्रधान मंत्री महोदय अपने उत्तर में इस बारे में तथ्य बताने को तैयार हैं, तो उन्हीं तथ्यों को उनके वक्तव्य के रूप मे रखने में क्या कठिनाई है। **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : अब हम उनकी बात सुन लें।

डा. मुरली मनोहर जोशी : वह गृह मंत्री भी हैं। वह प्रधान मंत्री भी हैं। वह ये सभी बातें जानते हैं। अतः, सभा के समक्ष इस संबंध में अलग से एक पूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किया जा सकता है।

अध्यक्ष महोदय : डा. जोशी, बस बहुत हो गया।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, नहीं। आप ऐसा नहीं कर सकते। इस प्रकार बिना सोचे-समझे आरोप मत लगाइये। मैं आपको बोलने की अनुमति नहीं देता। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : अरे, क्या बात कर रहे हो?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मैं इस माननीय सभा का विश्वास प्राप्त करने के लिए खड़ा हुआ हूं क्योंकि माननीय राष्ट्रपतिजी ने मुझे प्रधान मंत्री पद की जिम्मेदारी सम्भालने के लिए बुलाया है। उन्होंने मुझे यह भी कहा है कि मैं इस सभा के समक्ष पेश होऊं तथा इस महीने की 12 तारीख से पहले विश्वास का मत प्राप्त करूं।

इस समय मैं केवल कुछ ही शब्द कहना चाहता हूं। हमारे भारतीय इतिहास में पहली बार ग्यारवीं लोक सभा अपना एक अद्भूत स्वरूप लेकर आई है। इस सभा की संरचना में लगभग 32 राष्ट्रीय दलों के साथ-साथ क्षेत्रीय दल भी शामिल हैं।

महोदय, मुझे पता है कि इस संसद में मुझसे अधिक वरिष्ठ, परिपक्व एवं अनुभवी अनेक नेता मौजूद हैं। इस विकट स्थिति में प्रधान मंत्री के रूप में प्रशासन की जिम्मेदारी मुझ पर थौपी गई है क्योंकि कांग्रेस सहित सभी धर्म निरपेक्ष दलों ने मुझे कहा है कि ...

[हिन्दी]

एक माननीय सदस्य : कांग्रेस सेक्यूलर नहीं है।

[अनुवाद]

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : कृपया प्रतीक्षा कीजिये। कृपया कुछ समय के लिए रूकिए। आप जो कुछ भी कहना चाहते हैं, उसके लिए आपको पर्याप्त अवसर मिलेगा मैं आपके बीच में बाधा उत्पन्न नहीं करूंगा। मैं पूरी चर्चा के दौरान बैठा रहूंगा तथा इस सदन से बाहर नहीं जाऊंगा। मैं प्रत्येक माननीय सदस्य के विचार सुनूंगा तथा चर्चा के दौरान जो भी मुद्दे उठाये जायेंगे, उन सभी का उत्तर देने की कोशिश करूंगा।

महोदय, यह स्थिति कैसे उत्पन्न हुई? ग्यारहवीं लोक सभा के चुनावों से पहले बहुत-से राजनैतिक पण्डितों तथा समाचार-पत्रों के स्तम्भ-लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किये थे कि ग्यारवीं लोक सभा 'त्रिशंकु संसद' के रूप में सामने आएगी। गत एक वर्ष से, इस देश में मीडिया के माध्यम से सार्वजनिक और निजी दोनों ही रूप में यह बहस हो रही थी कि केन्द्र में सरकार बनाने के लिए किसी भी राजनैतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलेगा। ग्यारहवीं लोक सभा के चुनावों से पहले यही मत व्यक्त किया जा रहा था।

महोदय, ग्यारहवीं लोक सभा के चुनाव समाप्त हो जाने के बाद, जनता ने क्या जनादेश दिया है? जनता ने इस देश को चलाने के लिए

किसी भी एक राजनैतिक दल को जनादेश नहीं दिया है। हां, विपक्ष के हमारे माननीय नेता को, जो भूतपूर्व प्रधान मंत्री है, राष्ट्रपतिजी द्वारा जारी नियुक्ति आदेश के अनुसार प्रधान मंत्री पद का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए इस देश को चलाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। चूंकि राष्ट्रपति जी ने अपनी सूझबूझ के अनुसार यह सोचा था कि यह सबसे बड़ा दल है, उन्होंने यह अवसर उन्हें दिया तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी को 31 मई, 1996 से पहले अपना बहुमत सिद्ध करने के लिएं कहा। 27 एवं 28 मई को जो घटित हुआ तथा इस सभा में जो चर्चा हुई, मैं उसके विस्तार में नहीं जाना चाहता। 28 मई को श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपना त्याग पत्र दे दिया। उसी दिन राष्ट्रपति जी ने मुझे बुलाया तथा सरकार के गठन के लिए नियुक्ति आदेश दिये। सभी धर्मनिरपेक्ष दलों ने 15 मई बैठक की तथा मुझे धर्मनिरपेक्ष मोर्चे का नेता चुन लिया।

महोदय, मैं इस सभा का सदस्य नहीं हूं। इसके बावजूद, समूचे संयुक्त मोर्चे के मित्र दलों ने निर्णय लिया तथा मुझ में विश्वास व्यक्त किया, जबकि जहां तक संसदीय प्रणाली के कार्यकरण का संबंध है, मैं ज्यादा अनुभवी एवं परिपक्व राजनीतिज्ञ नहीं हूं। उन सभी ने मुझ में विश्वास व्यक्त किया तथा मुझे जिम्मेदारी लेने को कहा। साथ ही, कांग्रेस कार्य समिति ने 12 मई, को एक प्रस्ताव पारित किया था जिसमें कहा गया था कि वे सरकार नहीं बना रहे हैं और यह भी कहा गया था कि वे भा.ज.पा. सरकार को किसी भी कीमत पर समर्थन नहीं देंगे और यदि कोई धर्मनिरपेक्ष दल यह उत्तरदायित्व लेगा तो वे बिना शर्त अपना समर्थन देंगे। यह कांग्रेस कार्य समिति का प्रस्ताव था। इस पृष्ठभूमि में राष्ट्रपति जी ने 28 मई को 8 बजे मुझे बुलाकर यह नया कार्य लेने के लिए कहा था।

मैं एक बहुत छोटा आदमी हूं। यदि हम इतिहास को देखें तो इसी पद पर, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जो हमारे भारतीय इतिहास में एक शीर्षस्थ व्यक्ति थे, ने प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया, अंतिम तक, अर्थात श्री अटल बिहारी वाजपेयी चाहे वे दस या पन्द्रह दिन तक रहे, संसदीय जीवन में उनके अनुभव और प्रौढ़ता के लिए मैं उनका सम्मान करता हूं। मैं अब उनका स्थान राष्ट्रपति जी की सदन में बहुमत सिद्ध करने की शर्त पर ले रहा हूं। समय सीमा 12 जून तक है। इसीलिए मैं इस माननीय सभा के समक्ष इस विश्वास प्रस्ताव पर इसमें अंतिम विचार जानने के लिए आ रहा हूं।

हमें वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना चाहिए सहयोगी दलों के साथ भा.ज.पा. बहुमत सिद्ध क्यों नहीं कर सकी? इसे 15 दिन का समय दिया गया था। मैं इसका कोई प्रयोजन नहीं बता रहा हूं। उन्होंने यह देखने के लिए कि अन्य दलों से बहुमत लिया जाये, कोई गलत तरीका नहीं अपनाया। हमारे वरिष्ठ नेताओं के अनुसार उन्होंने इसी सभा में यह बताया था कि वे किसी तरह की जोड़ तोड़ नहीं करना चाहते और वे यह देखना चाहते थे कि उनकी सरकार जारी रहे क्योंकि वे संख्या में अधिक थे। अटल बिहारी जी ने यह तर्क दिया था। यदि संख्या पर विचार किया जाना है, तो 160 और सहयोगी दलों की संख्या मिला कर 542 के सदन में लगभग 194 बनती है, क्या यह कहना संभव है कि उन्हें जनादेश मिला है?

मैं यह प्रश्न आपके विचारार्थ रखता हूं।

महोदय, आज, मैं एक बार फिर इस बात को दोहराता हूं कि जनादेश मिली जुली सरकार के पक्ष में है। यह बिल्कुल स्पष्ट है, ग्यारहवीं लोक सभा में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला है। कांग्रेस ने दूसरा स्थान प्राप्त किया है और अन्य सभी दलों को, एक या दो को छोड़कर, संयुक्त मोर्चा में 192 सदस्य लाने में सफल रहे थे।

महोदय, हमारा साझा कार्यक्रम है। हमने प्राथमिकता निर्धारित की है, और इन सभी बातों को पहले ही राष्ट्र को सम्मुख रखा गया है। और सदन के माननीय सदस्य साझे कार्यक्रम के बारे में अपने मत व्यक्त कर सकते हैं।

महोदय, इस निर्णायक सभा में मैं इस सभा के सभी सदस्यों से यह अनुरोध करता हूं कि, जब राजनैतिक माहौल इतना भ्रामक है, जब राजनैतिक माहौल इतना अस्थिर है, तो हमें आवश्यक सहयोग के साथ कार्य करना चाहिए। मैं उनसे सरकार को केवल सही कार्यों के लिए ही अपना पूरा सहयोग देने का आग्रह करता हूं। यदि उन्हें लगे कि सरकार सही दिशा में नहीं जा रही है, तब वे सरकार की गलती को उजागर करने के लिए स्वतंत्र हैं। मैं कुछ छिपा नहीं रहा हूं। मैं इस बात को बहुत स्पष्ट कर रहा हूं। यदि यह सरकार, अथवा यह मंत्रालय किसी बात पर गलती पर है, तो वे इसे उजागर कर सकते हैं। इस सदन को इस सरकार के गलत कार्यों को उजागर करने का हर अधिकार है मैं इस सदन के प्रति उत्तरदायी हूं। मैं इस देश की 90 करोड़ जनसंख्या के प्रति उत्तरदायी हूं। मैं आपको इस संबंध में आश्वस्त करना चाहता हूं।

एक नया अध्याय प्रारम्भ हो गया है। मिली जुली सरकार का समय आ गया है। महोदय, यह लगभग दो वर्ष पूर्व भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति, श्री वेंकटरमन ने बताया था। मिली जुली सरकार का समय आ गया है। ऐसा मत उन्होंने लगभग दो वर्ष पूर्व व्यक्त किया था। यह सही निकला है। आज कुछ मित्रों के दिमाग में कुछ शक है कि श्री देवेगौड़ा सभी मामलों में समझौता करेंगे। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं-मैं इस माननीय सभा को यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि—कांग्रेस ने अपना समर्थन देते समय कोई शर्त नहीं रखी है। यही नहीं, अब तक उन्होंने किसी मामले में हस्तक्षेप नहीं किया है। कोई निर्णय लेने में उन्होंने कोई हस्तक्षेप नहीं किया है। लेकिन मैंने स्वयं ही यह निर्णय लिया कि सदन द्वारा अपना ठोस समर्थन दिए जाने तक, सभा में विश्वास मत प्राप्त किए जाने तक, कोई महत्वपूर्ण निर्णय न किया जाये। मैंने अपने सभी मंत्रियों को इस माह की बारह तारीख तक, कल परिणाम जानने तक कोई प्रमुख निर्णय न लेने के लिए

अनुदेश जारी किए हैं। मैं वर्तमान मिली जुली सरकार की समय अवधि के बारे में शक नहीं करना चाहता। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं। जनादेश मिली जुली सरकार के लिए है और यह सरकार पांच वर्षों तक चलेगी। हम यह सिद्ध करने जा रहे हैं।

महोदय, यह आत्म प्रशंसा की बात नहीं है। मैं डेढ़ साल कर्नाटक का मुख्य मंत्री रहा। मैंने पिछले डेढ़ वर्ष में कर्नाटक में एक भी घोटाला नहीं होने दिया। मैं आपको यह बताना चाहता हूं, कि अन्य वरिष्ठ नेताओं की तुलना में मैं एक अनुभवहीन राजनीतिज्ञ हो सकता हूं, लेकिन इस सभा को मैं एक बात बता रहा हूं...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदयः कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको इसकी अनुमति नहीं दे रहा हूं।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : महोदय, मुख्य मंत्री के रूप में मैंने क्या किया है, यह तो समय बतायेगा।

यह सरकार अल्पसंख्यकों, पिछड़े वर्गों के लोगों, कृषि से जुड़े लोगों के लिए क्या करने जा रही है, इसका उल्लेख हमारे कार्यक्रम में किया गया है।

मध्याह्न 12.00 बजे

कुछ देर के लिए इन्तजार कीजिए। मैं इस सदन से भाग नहीं रहा हूं।...**(व्यवधान)** कृपया इन्तजार कीजिए। हमें देखना चाहिए।

मुझे सदन की संरचना और इस सदन के बहुत से नेताओं की वरिष्ठता के बारे में पूरी जानकारी है। तीन पूर्व प्रधान मंत्री हैं और इन्द्रजीत गुप्तजी और सोमनाथ चटर्जी जैसे वरिष्ठत कामरेड हैं। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता। तीन वर्ष पूर्व मैं पीछे की बैंच पर, कोने में बैठा था। मैंने पीछे की सीट पर बैठ कर सभा की कार्यवाहियों को देखा था। जब ये सभी वरिष्ठ नेता बोला करते थे, तो मैं बहुत ध्यानपूर्वक सुनता था—मुझे सीखने दें और मैं वरिष्ठ नेताओं से कुछ सीखना चाहता हूं। अपने राजनैतिक जीवन में यह मेरी विशेषता है। मैं आपको स्पष्ट रूप से यह बताना चाहता हूं कि मैं यह नहीं कहने जा रहा हूं कि मैं बहुत विद्वान हूं। न मैं अर्थशास्त्री हूं और न ही वैज्ञानिक। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं इस देश के लोगों की समस्याओं को जानता हूं। मैं आपको एक बात बताऊंगा। ...**(व्यवधान)** महोदय, इसी पद पर 17 अथवा 18 वर्षों तक कई नेताओं ने प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया है। और आज यदि मैं यहां पर 5 वर्ष के लिए हूं या 5 महीने के लिए हूं यह मापदण्ड नहीं होगा बल्कि इस देश की जनता के लिए एक प्रधान मंत्री की हैसियत से जो काम करूंगा वही महत्वपूर्ण होगा। मैं अपने समय का प्रत्येक मिनट और प्रत्येक घंटा देश के लिए लगाऊंगा और मैं यह साबित कर दूंगा कि मैं इस देश के गरीब तबके, दलित लोगों और अल्पसंख्यकों के साथ हूं। मैं यह करने जा रहा हूं। यही मेरी चिन्ता है। इस तरह मैं कार्य करता हूं। इस तरह से मैंने कार्य किया है और मैं यह पूरी ईमानदारी से कह रहा हूं। मैं वचन दे रहा हूं। यदि मैं कोई गलती करूं, तो यह सदन उसकी जांच कर सकता है। मैं आपको केवल बात बताना चाहता हूं। महोदय, मैं सभा का अधिक समय नहीं लेना चाहता क्योंकि और बहुत से सदस्यों को बोलना है। इस वाद-विवाद में और कई वरिष्ठ नेताओं को भाग लेना है और मेरे विचार से हमारे निवर्तमान प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी आज बोलेंगे। मैं केवल आपको यह आश्वासन देता हूं कि जो प्रश्न उठाये जायेंगे, उनका कल में विस्तृत उत्तर दूंगा और इस सभा द्वारा अपेक्षित सभी जानकारी मैं सभा को प्रदान करूंगा।

इन शब्दों के साथ, मैं बड़ी विनम्रता से इस सदन के सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि वे इस विश्वास प्रस्ताव को स्वीकृत करें।

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : मैं जानना चाहता हूं कि इस परिचर्चा की समय-सीमा क्या है? आपने सात घंटे बताया है। अभी वाजपेयी जी बोलने के इच्छुक नहीं हैं। किसी ने मुझे बताया कि वह कल बोलेंगे। पहले यह माना जा रहा था कि ये सभी वक्ता आज ही इन सात घन्टों के अन्दर ही बोलेंगे।...**(व्यवधान)** आज जो भी निर्णय लेंगे हम सभी उसको मानेंगे। परन्तु, कृपया आप यह बताइये कि आपका निर्णय क्या है क्योंकि कल की बैठक में यह हमने आपके ऊपर छोड़ दिया था और आपने कहा था कि आप हमें सूचित करेंगे। हमें सूचित नहीं किया गया है। अगर मैं आपके निर्णय लेने के अधिकार क्षेत्र में दखलअंदाजी नहीं कर रहा तो आप कृपया हमें अपने निर्णय से अवगत कराएं ताकि हम भी अपने वक्ताओं के बारे में निर्णय ले सकें।

अध्यक्ष महोदय : मैंने घोषणा कर दी है कि सात घन्टे निर्धारित किये गए हैं। प्रत्येक दल को, जिसमें छोटे दल भी शामिल हैं, समय दिया गया है और संख्यानुसार ही आबंटित किया गया है। मेरे विचार में कुछ मिनट पश्चात् आपको यह ब्यौरा मिल जाएगा। अगर आप आबंटित समय का ध्यान रखते हुए चलेंगे तो भोजनावकाश के बिना हम आज ही परिचर्चा समाप्त कर सकेंगे।

श्री राम नाईक (मुम्बई उत्तर) : जहां तक भोजनावकाश और समय का संबंध है, हमने कल ही आपको अपने विचार स्पष्ट कर दिये थे। मैं यह इसलिये कह रहा हूं क्योंकि समिति में हुई चर्चा को यहां उठाया जा रहा है। कल ही हमने आपको स्पष्ट कर दिया था कि हम चाहते हैं कि परिचर्चा दो दिल चले। हमने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि हमारी तरफ से श्री जसवंत सिंह चर्चा आरम्भ करेंगे और श्री वाजपेयी कल बोलेंगे। इन सभी बातों को अति स्पष्ट कर दिया गया था। इसलिये, हम चाहते हैं कि परिचर्चा कल तक चले। हमने यह कल ही कह दिया था। हम यह आपके और सभा के ध्यान में इसलिये ला रहे हैं क्योंकि समिति में हुई चर्चा को माननीय सदस्य यहां पर उठा रहे हैं।...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : इससे क्या फर्क पड़ता है? महत्वपूर्ण यह है कि परिचर्चा सात घंटे के अन्दर ही समाप्त करनी है।

(व्यवधान)

श्री राम नाईक : महत्वपूर्ण तो चर्चा है...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : महत्वपूर्ण यह है कि हमको सात घंटे के अन्दर चर्चा करनी है। आज करें या कल करें यह महत्वपूर्ण नहीं है।

(व्यवधान)

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी (दमदम) : वे ज्योतिष के कारणों से कल ही चर्चा करना चाहते हैं। वे परिचर्चा के लिये निर्धारित किए गए घन्टों में रूचि नहीं रखते हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, सारा सदन यह चाहेगा कि विश्वास के प्रस्ताव पर विस्तार से चर्चा हो, गइराई में चर्चा हो और जितने दृष्टिकोण सदन में हैं, वे सामने आएं।...**(व्यवधान)** अब अगर आप कहेंगे कि चर्चा आज ही खत्म हो,...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, इस सदन में हम भी मौजूद हैं और सदन का समय कितना होना चाहिए, यह आम सहमति से होता है। कोई बहुमत के आधार पर सदन नहीं चल सकता। आप बहुमत के आधार पर सरकार चला सकते हैं, सदन नहीं चला सकते।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर): हम यह सब काफी समय से सुन रहे हैं। हम जानते हैं कि अंततः क्या होगा।...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, सदन को ठीक तरह से चलाने में हम आपके साथ सहयोग करने को तैयार हैं, लेकिन सहयोग दोनों तरफ से होना चाहिए।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप कृपया उनकी बात तो सुनिये। मैंने उनको बोलने की अनुमति दी है। कृपया सुनिये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, पिछली बार जब विश्वास का प्रस्ताव आया था, तब भी हमारे मित्र कह रहे थे कि चर्चा की आवश्यकता नहीं है। एक ही दिन वोट डाल दिए जाएं, मामला खत्म कर दिया जाए। लेकिन हमने चर्चा पर जोर दिया। बहुत अच्छी चर्चा हुई। सारे देश ने उस चर्चा को सुना।...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, अगर माननीय सदस्य शान्ति रखें, तो मैं बोलूं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मैं नहीं समझता कि नयी सरकार देश में यह धारणा पैदा करना चाहेगी कि वह चर्चा से बचना चाहती है, चर्चा से डरती है। फिर चर्चा कराने में क्या कठिनाई है?...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, चर्चा पहले दो दिन हुई थी, इस समय तो और अधिक समय देने की आवश्यकता है, लेकिन कल वोट होना है। राष्ट्रपति महोदय ने 12 तारीख की तिथि निश्चित की है। अगर आप सब दृष्टिकोणों को सुनना चाहते हैं और सचमुच में इस विषय पर गम्भीरता से चर्चा चाहते हैं, तो कल चर्चा चलाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

रेल मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री राम विलास पासवान) : अध्यक्ष जी, सदन या सरकारी पक्ष चर्चा से नहीं बचना चाहता है। मैं आपसे यह आग्रह करना चाहता हूं कि यह नो कोनफिडेन्स मोशन नहीं है। यह कोनफिडेन्स मोशन है। नो कोनफिडेन्स मोशन और कोनफिडेन्स मोशन में फर्क है।...**(व्यवधान)**

श्री गिरधारी लाल भार्गव (जयपुर) : ये इधर कुछ बोलते हैं और उधर कुछ बोलते हैं।...**(व्यवधान)**

श्री राम विलास पासवान : मैं कितने शांत तरीके से बैठकर सुन रहा हूं। आप भी सुन लें।...**(व्यवधान)** नो कोनफिडेन्स मोशन में सरकार के खिलाफ चार्जिज लगते हैं और लगाये जाते हैं। अभी तो हमने कोई काम नहीं किया है। हम तो कोनफिडेन्स सिद्ध करने के लिए आये हैं।...**(व्यवधान)**

श्री गिरधारी लाल भार्गव : हमने भी कोई काम नहीं किया था। ...**(व्यवधान)**

श्री दाऊ दयाल जोशी (कोटा) : आप लोग तो 133 करोड़ रुपये खा गये।...**(व्यवधान)**

श्री राम विलास पासवान : अध्यक्ष महोदय, मैं विरोधी दल के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी से आग्रह करना चाहता हूं कि हम लोग कभी भी उनके भाषण में नहीं टोकते हैं।...**(व्यवधान)** आप कृपया सुन तो लीजिये।

श्री लाल मुनि चौबे (बक्सर) : अध्यक्ष महोदय, पासवान जी क्या कोई टीचर हैं जो कि हम लोगों को पढ़ा रहे हैं।...**(व्यवधान)**

श्री राम विलास पासवान : अध्यक्ष महोदय, सरकार को भी अपना पक्ष रखने का अधिकार है। मैं अटल बिहारी वाजपेयी जी से आग्रह करना चाहता हूं कि वे अपने मैम्बरों को समझायें कि वे इस तरह की भाषा का प्रयोग न करें। यहां न तो कोई टीचर है और न ही कोई स्टूडेंट है। ये नये मैम्बर हैं।...**(व्यवधान)** कृपया आप ऐसा न बोलें।...**(व्यवधान)**

श्री राजीव प्रताप रुडी (छपरा) : ये नये मेम्बर नहीं हैं। चौबे जी मंत्री रह चुके हैं और चार बार एम.एल.ए. भी रह चुके हैं।... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपसे कहा कि आप बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री राम विलास पासवान : मैं आपके माध्यम से इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि हम लोग पिछली बार भी जब कोनफिडेन्स मोशन के लिए आये थे तो हम लोगों की यही राय थी और पूरा देश भी जानना चाहता है कि सरकार के पास विश्वास है या नहीं? सरकार बहुमत में है या नहीं? इसलिए उस समय भी हम लोगों ने आग्रह किया था कि जितनी जल्दी चर्चा खत्म हो जाये, जितनी जल्दी वोटिंग हो जाये उतनी ही जल्दी देश में से यह कनफ्यूजन का वातावरण दूर हो जायेगा। आज भी सरकार के पक्ष से, सरकार की तरफ से हम आग्रह करना चाहते हैं। पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर की हैसियत से मैं आग्रह करना चाहता हूं...**(व्यवधान)** कल भी कई सदस्यों की यही राय थी...**(व्यवधान)** बी.जे.पी. को छोड़कर कल भी कई सदस्यों की यही राय थी आज ही चर्चा समाप्त हो जाये। श्री जसवन्त सिंह ने कल जरूर यह कहा था कि हम दो दिन चाहते हैं। हम लोगों ने कहा कि चर्चा दिनों पर नहीं चलती। चर्चा घंटे के ऊपर चलती है और घंटे आप तय करें। आपने इसके लिए सात घंटे तय कर दिये हैं। अगर यह चर्चा सात बजे तक होती है तो सात बजे कर दें, आठ बजे कर दें, नौ बजे कर दें...**(व्यवधान)** लेकिन आज इस चर्चा को खत्म किया जाये जिससे देश से कनफ्यूजन का वातावरण खत्म हो। यदि प्रधान मंत्री जी जवाब कल देना चाहते हैं तो वे कल दें।

अध्यक्ष महोदय, हमारा आपसे यह आग्रह है कि आज जो लोग चर्चा में भाग लेना चाहते हैं, वे भाग लें।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैंने दोनों पक्षों के विचार सुन लिये हैं।

श्री प्रमोद महाजन (मुम्बई उत्तर-पूर्व) : महोदय, सुझाव है कि भोजनावकाश रद्द कर दिया जाए और सभा का समय बढ़ा दिया जाए। मैं कहना चाहता हूं कि अगर आप सात घन्टे की चर्चा चाहते हैं तो ठीक है, परन्तु भोजनावकाश होना चाहिये और सभा अपराह्न 6.00 बजे स्थगित हो जाए। इससे आपको पर्याप्त समय मिल जाएगा हमें समिति में लिए गए निर्णय को लागू करना चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : मैंने दोनों पक्षों के विचार सुन लिये हैं।

श्री प्रमोद महाजन : आप हमें भोजनावकाश रद्द करने के लिये बाध्य नहीं कर सकते हैं। हम भोजनावकाश रद्द करना नहीं चाहते हैं। सभा का समय अपराह्न 6.00 बजे के बाद नहीं बढ़ाया जाना चाहिये। आप सात घन्टे तक चर्चा कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय : मैंने दोनों पक्षों की बात सुन ली है। मैं सदन की भावना समझ सकता हूं। क्या आप श्री जसवंत सिंह को बोलने देंगे?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री जसवंत सिंह जी को बोलने दें।

श्री सत्यदेव सिंह (बलरामपुर) : महोदय, प्रत्येक सदस्य को भोजनावकाश और सभा के समय की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिये।

अध्यक्ष महोदय : सभा की भावना क्या है? सभा भोजनावकाश चाहती है अथवा नहीं चाहती है?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह क्या है? आप भोजनावकाश के लिये क्यों झगड़ा कर रहे हैं? यह एक अति महत्वपूर्ण चर्चा है।

(व्यवधान)

श्री प्रमोद महाजन : क्या आप बहुमत के आधार पर भोजनावकाश के बारे में निर्णय लेना चाहते हैं? ऐसा कभी नहीं हुआ है।

अध्यक्ष महोदय : मेरा मानना है कि चर्चा जारी रह सकती है। भोजनावकाश नहीं होना चाहिये। श्री जसवंत सिंह जी कृपया बोलिये।

(व्यवधान)

श्री मधुकर सर्पोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : इस पर कार्य मंत्रणा समिति में चर्चा हो चुकी है और यहां पर चर्चा की आवश्यकता नहीं है। अगर चर्चा कल तक चलने वाली ही है जैसा कि माननीय प्रधान मंत्री कह रहे हैं कि वह कल उत्तर देंगे, तो इसको कल तक बढ़ाने में क्या दिक्कत है? चर्चा आज भी हो और कल भी जारी रहे। यही मेरा निवेदन है...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : आप मेरे निर्णय को सुनिये। कार्य मंत्रणा समिति में...

(व्यवधान)

श्री प्रमोद महाजन : अगर विपक्ष के नेता कल बोलते हैं तो इसमें क्या गलत है? अगर माननीय प्रधान मंत्री कल बोलने वाले हैं, तो विपक्ष के नेता को आधा घंटा देने में क्या परेशानी है? आप लोकतांत्रिक मूल्यों का हवाला दे रहे हैं। माननीय प्रधान मंत्री कह दें ...**(व्यवधान)** इसमें क्या परेशानी है? आप आज क्यों समाप्त करना चाहते हैं?

अध्यक्ष महोदय : इसमें कोई दिक्कत नहीं है।...

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हमको आबंटित समयावधि से चलना चाहिये। आप कल अथवा आज जब चाहें, बोल सकते हैं परन्तु आबंटित समय के अन्दर ही बोलना होगा। भा.ज.पा. को एक घन्टा चौवन मिनट आबंटित किए गए हैं। इस समयावधि में कौन बोलेगा और कितनी देर बोलेगा, यह आपको सुनिश्चित करना है।

श्री आई.डी. स्वामी (करनाल) : यह एक महत्वपूर्ण चर्चा है। सम्पूर्ण विश्व की आंखें इस पर टिकी हुई हैं।...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री जय प्रकाश (हिसार) : अध्यक्ष महोदय, आखिर हम भी तो जन प्रतिनिधि हैं, कहीं से चुनकर आये हैं।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : अध्यक्ष महोदय, ऐसा संकेत क्यों दिया जा रहा है कि सरकार चर्चा से बचना चाहती है? ...**(व्यवधान)** ऐसा आभास कराया जा रहा है कि सरकार सभा में चर्चा को जल्दी समाप्त कराना चाहती है। ऐसा संकेत नहीं दिया जाना चाहिये। महोदय, मेरा यह निवेदन है।

श्री एच.डी. देवेगौड़ा : अध्यक्ष महोदय, मैं एक विनम्र निवेदन करना चाहता हूं। पूर्व प्रधान मंत्री और विपक्ष के नेता समेत कई माननीय सदस्यों ने पूर्व की कुछ घटनाओं के ऊपर प्रकाश डालने के लिये कहा है। पिछले दस दिनों में, हमने कोई भी गलती नहीं की है। अगर हमने कोई गलती की है, तो हम उसे स्वीकार करने के लिये तैयार हैं।

यदि माननीय भूतपूर्व प्रधान मंत्री एवं विपक्ष के नेता कल बोलना चाहते हैं तथा अगर वह पिछली सरकार से संबंधित कुछ मुद्दे उठाना चाहते हैं, तो उनका उत्तर देने से पहले, मुझे संबंधित दस्तावेजों को अध्ययन करना आवश्यक होगा। विपक्ष के माननीय नेता द्वारा जो मुद्दा उठाया जायेगा उसके सभी पहलुओं के विषय में इस सभा में उत्तर देने में आज मैं असमर्थ हूं। इसी वजह से विपक्ष के माननीय नेता से मेरा यह विनम्र निवेदन है कि यदि वह विगत से संबंधित कोई मुद्दा उठाना चाहते हैं, तो वह आज ही ऐसा कर लें। तभी मैं सारा मामला समझ पाऊंगा तथा बाद में इस सभा के समक्ष उत्तर दे पाऊंगा। मैं बिल्कुल साफ तौर पर यह कहना चाहता हूं कि मैं कोई इतना कुशल राजनीतिज्ञ नहीं हूं। उत्तर देने से पहले, मुझे रिकार्डों का अध्ययन करना होगा। यदि वह यह मुद्दा कल उठाना चाहते हैं तथा सभी विषयों पर सरकार से जवाब मांगते हैं, तो मेरे जैसे व्यक्ति के लिए ऐसा कर पाना अत्यंत दुष्कर होगा। मेरा उनसे यही अनुरोध है कि कृपया इस बारे में विचार करें। यदि वह विगत से संबंधित कोई मुद्दा उठाना चाहते हैं, तो उन्हें ऐसा आज ही करना चाहिए तथा अपनी बात आज ही समाप्त करनी चाहिए। मैं सभी बातों का जवाब देने के लिए तैयार हूं। किसी बात को छिपाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। मेरी तो यही प्रार्थना है।

अध्यक्ष महोदय : मेरे विचार से यह अनुरोध उचित है।...

(व्यवधान)

श्री प्रमोद महाजन : महोदय, यह बिल्कुल अनुचित है। ...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने मुझसे एक अपील की है और उन्होंने कहा है कि अगर पुराने मामले मैं उठाना चाहता हूं तो उनका जवाब देना उनके लिए कल सम्भव नहीं होगा।

मेरा निवेदन है कि जो पुराने मामले हैं और जो पुराने मामलों के लिऐ जिम्मेदार थे, वह इस सदन में मौजूद हैं, वह जवाब दे सकते हैं, अपनी सफाई दे सकते हैं। आपने भी उनके साथ गठबन्धन किया है तो आप भी बच नहीं सकते हैं। लेकिन मैं पुराने मामले उठाने पर जोर नहीं दूंगा। मैं कुछ और मुद्दे खड़े करूंगा। उदाहरण के लिए, अध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्र की सुरक्षा का मामला उठाना चाहता हूं।

एक माननीय सदस्य : आज उठाइये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर प्रधान मंत्री को पुराना रिकार्ड देखना है तो मैं उनकी मदद नहीं कर सकता। यह बहस कल चलेगी।

एक मानीय सदस्य : नहीं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर मैं सी.टी.बी.टी. के बारे में बोलना चाहता हूं और मैं सरकार से उसकी नीति का स्पष्टीकरण चाहता हूं तो क्या मुझे यह अधिकार नहीं है? आप इस पर रोक लगा रहे हैं। इसका जबाव देने के लिए आपको अध्ययन करना पड़ेगा, इसलिए आज नहीं हो सकता। मेरा निवेदन है कि चर्चा कल भी चलानी चाहिए।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात यह कहना चाहता हूं कि ऐसी बातों पर निर्णय लेना सत्तारूढ़ दल की मर्जी पर निर्भर करता है। मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूं। यदि आप श्री वाजपेयी को कल बोलने की अनुमति देते हैं, तो यह आपका निर्णय है। इसके बाद, मुझे यह फैसला करना है कि हमारे नेता कब बोलेंगे। फिर, मैं उनका नाम कल बोलने के लिए रखना चाहूंगा... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर) : अध्यक्ष महोदय, संतोष मोहन देव जी बचाव के लिए गलत तर्क दे रहे हैं।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री राम नाईक : महोदय, एक मिनट। हमें बहुत खुशी है कि भूतपूर्व प्रधान मंत्री एवं भूतपूर्व विपक्षी नेता इस सभा में बोलना चाहते हैं। हम आज अथवा कल उनकी बात सुनना चाहते हैं। लेकिन हम उनकी बात इस सभा में ही सुनना चाहते हैं। विपक्ष का नेता होने के नाते उन्हें पहले बोलना चाहिए था, लेकिन वह चुप रहे। कम-से-कम कल तो उन्हें बोलने दीजिए। हम इस बात से सहमत हैं।

अध्यक्ष महोदय : मेरे विचार से हम इस मुद्दे पर काफी चर्चा कर चुके हैं। इस संबंध में मैं बाद में निर्णय लूंगा। मैं तत्काल निर्णय नहीं दूंगा। हम यह सुनिश्चित करें कि बहस जारी रहे।

श्री जसवन्त सिंह जी...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : अध्यक्ष महोदय, इस विश्वास के प्रस्ताव का विरोध करने के संबंध में अपने सुस्पष्ट तर्क देने से पहले, मैं दो प्रारम्भिक बातें अवश्य कहना चाहता हूं। सबसे पहले तो आपसे एक अनुरोध है। आप हम सभी के अधिकारों के परिरक्षक हैं। आप हमारे परिरक्षक हैं। आप न केवल संसद के सभी सदस्यों के अधिकारों के निधान हैं, बल्कि आप ही के माध्यम से इस सभा का संचालन होता है। आपको जानकारी देना मेरा कार्य नहीं है। मुझे याद नहीं है कि मध्याह्न भोजनावकाश होगा अथवा नहीं या सभा का समय कभी बहुमत होने अथवा बहुमत न होने के आधार पर बढ़ता जायेगा अथवा नहीं जैसे सभा के मूल एवं रोजमर्रा के प्रश्नों का समाधान सर्वसम्मति से किया गया हो। मेरी तो आपसे केवल यही प्रार्थना है कि इस रास्ते को न अपनाएं। यह सभा सभी के सहयोग से ही कार्य कर सकती है। सभा के कार्यकरण का प्रश्न बहुमत अथवा अल्पमत से संबंधित नहीं है।

[हिन्दी]

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरा निजी मत था कि इस बहस में हिस्सा लेते हुए मैं अपने विचारों को हिन्दी में रखूं। वह केवल इसलिए नहीं कर रहा हूं।

[अनुवाद]

माननीय प्रधान मंत्री का सम्मान करते हुए, मैं उस भाषा में बोलना चाहूंगा जो इस देश की भी भाषा है तथा जो...की भी भाषा है।... **(व्यवधान)**

श्री शरद पवार (बारामती) : मेरा कहना है कि आप नियम विरूद्ध बात कर रहे हैं।...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : क्षमा चाहता हूं...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : जसवन्त सिंह जी, आप उनकी बात पर क्यों जाते हैं?

(व्यवधान)

श्री जसवन्त सिंह : मैं अंग्रेजी में बोलना चाहता हूं...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : आप जिस भी भाषा में चाहें, बोल सकते हैं।

(व्यवधान)

श्री जसवन्त सिंह : मैं इस बात को समझ नहीं सका हूं।

अध्यक्ष महोदय : आपको यह स्पष्टीकरण नहीं देना है कि आप किसी भाषा विशेष में क्यों बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री जसवन्त सिंह : बारामती से निर्वाचित माननीय सदस्य का कहना है कि मैं नियम विरूद्ध बात कर रहा हूं। ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसा मैं शिष्टाचार की भावना से कर रहा हूं।...**(व्यवधान)**

श्री शरद पवार : यह शिष्टाचार की भावना नहीं है। ...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : यदि बारामती से निर्वाचित माननीय सदस्य हस्तक्षेप करना चाहते हैं, तो मैं निश्चित रूप से उसका उत्तर दूंगा।

श्री शरद पवार : आप हिन्दी में बोल सकते हैं। इसमें कोई समस्या नहीं है।

श्री सुरेश कलमाडी (पुणे) : जसवन्त सिंह जी, आपकी अंग्रेजी हिन्दी से अच्छी है। अतः आप अंग्रेजी में ही बोलिए...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : प्रधान मंत्री महोदय ने अपनी प्रारम्भिक टिप्पणी-महोदय जिसे कि मैं समर्थन प्रणाली की रूपरेखा, रेखाचित्र एवं बाहरी नक्शा मानता हूं—में यह कहा है कि ग्यारहवीं लोक सभा की संरचना अनोखी होने के बावजूद, वह इस सभा का समर्थन क्यों प्राप्त करना चाहते हैं। प्रत्येक लोक सभा अपनी संख्या-बल में अनोखी होती है। लेकिन उन्होंने इस लोक सभा को अनोखी इसलिए कहा है क्योंकि आज इसकी संरचना में 32 दल प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। निस्संदेह, गत एक महीने से अब तक, जैसाकि हम सुनते आ रहे हैं, इस तथाकथित 'धर्मनिरपेक्ष' गुट में अलग-अलग विचारधाराओं के दल शामिल हैं, अतः निष्कर्ष यही है कि ये 'धर्मनिरपेक्ष नहीं हैं। निस्संदेह, ये अलग- अलग विचाराधाराओं वाले दल जो इकट्ठे हुए हैं मैं उसे नकारता हूं। देश की शासन-व्यवस्था को चलाने के लिए ये जो अलग-अलग श्रेणियों के लोग एक साथ जमा हुए हैं मैंने उसको भी अस्वीकार किया है।

अपराह्न 12.30 बजे

(श्री पी.एम. सईद पीठासीन हुए)

प्रधान मंत्री महोदय ने हमें बताया है कि यह गठबंधन का युग है। निस्संदेह, यह उसी प्रकार के गठबंधन का युग है जिसके बारे में वह बोले हैं, बल्कि उन्होंने इसका विश्वास के प्रस्ताव में भी सीधे रूप से उल्लेख किया है। मेरा भी यही मानना है तथा मैं इस बात को

दोहराने में हिचकिचाऊंगा नहीं कि 1996 के जनादेश में एक भाव छिपा है तथा हुआ यह है कि संसद के गणित के हिसाब से 1996 के जनादेश का यह असमंजसपूर्ण स्थिति है तथा संसद के गठित के हिसाब से यह संसद त्रिशंकु बन गई है। वर्ष 1996 के जनादेश की भावना निश्चित रूप से कांग्रेस पार्टी के पक्ष में नहीं है। कांग्रेस पार्टी की सदस्य संख्या स्पष्ट रूप से कम होकर आधी रह गई है। इस पार्टी के जिस छोटे से गुट के नेता माननीय प्रधान मंत्री है और जो इस सरकार का महत्वपूर्ण भाग है उस छोटे गुट में लगभग 45 माननीय सदस्य है जिन के दम पर माननीय प्रधान मंत्री कहते हैं कि एक मिली जुली सरकार बनी है। हम इस तर्क को स्वीकार करते हैं कि एक मिली जुली सरकार अस्तित्व में आयी है, लेकिन चुनाव पूर्व के गठबंधन अधिक विश्वसनीय है।

एक अन्य कठिनाई भी है। यह गठबन्धन एक अनोखा गठबंधन है, जिस नई प्रणाली बाहर से समर्थन के इस तरीके, का हमें इसी संसद में पूर्व अनुभव है। महोदय, बाहर से यह समर्थन...**(व्यवधान)**

श्री सुरेश कलमाडी : अकालियों की तरह।...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : नहीं, अकाली अन्य दलों के साथ, समर्थन दे रहे हैं...**(व्यवधान)**

श्री सुरेश कलमाडी : क्या यह चुनाव से पूर्व तय किया गया था?...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : बाहर से समर्थन प्रणाली में...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : उन्हें बोलने दीजिए।

श्री जसवन्त सिंह : ... इस सरकार के बारे में हम इस बात से परेशान हैं कि इसमें गठबंधन होने से पूर्व न्यूनतम सांझा आर्थिक अथवा राजनैतिक दर्शन जैसी कोई बात नहीं थी इसलिए इस संसद में अस्तित्व में आने के पश्चात्, एक समझौता किया गया और उस राजनैतिक व्यवस्था को अब संयुक्त मोर्चा कहा जा रहा है और हमें राजनैतिक व्यवस्था को स्वीकार करने के लिए कहा गया है। मुझे खेद है कि हम ऐसा नहीं कर सकते।

मैं यह स्पष्ट कर दूं कि यदि मैं बाहर से इसका समर्थन न करूं तो भी इस तरह की राजनैतिक व्यवस्था सभी तरह की आन्तरिम कठिनाइयों से ग्रस्त है यदि मेरे माननीय मित्र श्री सोमनाथ चटर्जी यह समझते हैं कि प्रधान मंत्री के खिलाफ कोई सबूत नहीं है तो उनकी पार्टी सरकार में शामिल क्यों नहीं होती? यदि निवर्तमान प्रधान मंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव का संयुक्त मोर्चा द्वारा तैयार किए गये कार्यक्रमों में इतना अधिक विश्वास है, तो कांग्रेस पार्टी उसमें शामिल क्यों नहीं होती?

कांग्रेस पार्टी में ऐसे बहुत से लोग हैं जो वास्तव में उनकी पार्टी में शामिल होने के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं आप उनको शामिल होने की अनुमति प्रदान क्यों नहीं करते?...**(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : आप अपनी परवाह क्यों नहीं करते?...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : मैं अपना ध्यान रखूंगा...**(व्यवधान)** मुझे अपनी ध्यान रखना है...**(व्यवधान)** मैं ससंद में अपनी देखभाल केवल प्रत्यायक स्थापित करके ही कर सकता हूं।...**(व्यवधान)** मैं नहीं जानता हूं कि कांग्रेस किस बात का विरोध कर रही है...**(व्यवधान)** यह कहना मुझे बहुत आश्चर्यजनक लगता है कि कांग्रेस पार्टी के पास कोई सत्ता नहीं है, वे स्वयं इसे इतना अधिक उपहासपूर्ण पाते हैं... **(व्यवधान)** महोदय, मुझे अनुमति दीजिए...**(व्यवधान)**

श्री सुरेश कलमाडी : हम बहुमत के बिना सरकार नहीं बनाना चाहते...**(व्यवधान)**

श्री सत्यजीत सिंह दिलीप सिंह गायकवाड (बडोदरा) : प्रधान मंत्री ने कांग्रेस नीतियों का अनुसरण करने का आश्वासन दिया है। इसीलिए, कांग्रेस पार्टी बाहर से समर्थन दे रही है। हम सत्तालोलुप नहीं हैं...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : अब आपको कोई उत्तर नहीं देना है। जब कांग्रेस पार्टी से सदस्य बोलेंगे, तो यदि वे चाहेंगे तो उत्तर देंगे। कृपया उनके भाषण में व्यवधान मत डालिए।

श्री जसवन्त सिंह जी, कृपया अपना भाषण जारी रखिए।

श्री जसवन्त सिंह : महोदय, मुझे इस व्यवस्था के खोखलेपन का इंगित करने के लिए एक दस्तावेज से उद्धृत करने की अनुमति प्रदान कीजिए। मैं यह एक दस्तावेज से उद्धृत कर रहा हूं और मैं सभा को इसकी जानकारी दूंगा कि इसका लेखक कौन है या किसी माननीय सदस्य ने ऐसा कहा है। इसमें कहा गया है;

> "दो वर्ष पूर्व राज्य में चुनाव कराए गए थे। एक विशेष राजनैतिक गठबन्धन के कारण, डी.एम.के., जिसने लगभग 13 वर्षों तक प्रत्येक चुनाव हारा था, पुनः सत्ता में आ गई। फिर भी हमने डी.एम.के. को सचेत किया था कि उन्हें यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि उन्हें तमिलनाडु के लोगों का समर्थन प्राप्त है।"

क्योंकि उनके पास समर्थन नहीं था।

महोदय, वकील उस दिन की कार्यवाही का सार का तर्क दे रहे हैं और उस दिन सदस्य द्वारा जिनका नाम मैं एक मिनट में बताऊंगा, दिए गये तर्क का सार यह है। इस माननीय सदस्य द्वारा चार मुद्दों का उल्लेख किया गया है, जो मैं करना चाहता हूं। इसमें कहा गया है :

> "जब मैं ऐसा करता हूं, तो मुझे बहुत गम्भीर आरोप लगाने पड़ेंगे; और मैं माननीय सदस्यों से धैर्य रखने के लिए कहूंगा। मैं ऐसा पूरे उत्तरदायित्व का भावना से करता हूं। मैं उस प्रत्येक वक्तव्य को जिम्मेदारी ले रहा हूं

जो मैं देता हूं और यह सब कहने के बाद अन्त में, मेरी यही मांग होगी, और मैं माननीय सदस्यों से यह अनुरोध करता हूं कि वे मेरी इस मांग का समर्थन करें कि तमिलनाडु में विगत दो वर्षों में जो कुछ हुआ है उसका पता लगाने के लिए एक उच्च शक्ति प्राप्त जांच समिति की स्थापना की जानी चाहिए। मैं यह नहीं चाहता कि मेरे आरोप केवल आरोप रहे। हम में से जो भी ये आरोप लगाते हैं, उन्हें आरोपों के समर्थन में साक्ष्य प्रस्तुत करने का अवसर मिलना चाहिए।"

महोदय, वे आरोप कौन से हैं जो इतनी गम्भीरता से लगाये गये थे? चार मुख्य शीर्ष हैं। इसमें कहा गया है :

"पहली बात उग्रवादियों, विशेषकर एल.टी.टी.ई., की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तमिलनाडु में कानून-व्यवस्था तन्त्र को कमजोर किया जाना है। दूसरे राष्ट्रीय मोर्चा जो अब संयुक्त मोर्चा कहलाता है की एक ओर मंत्रियों के साथ और दूसरी तरफ एल.टी.टी.ई. के साथ राजनैतिक मिलीभगत है। तीसरा मुख्य सिविल अधिकारियों की अपने निजी हितों और डी.एम.के. के राजनैतिक हितों को आगे बढ़ाने की चाल है। और चौथा, वर्ष 1990 के दौरान वी.पी. सिंह सरकार तथा करुणानिधि सरकार द्वारा तमिलनाडु में हो रही इन घटनाओं को छिपाने का प्रयास किया गया, जिन्हें आसूचना प्रतिवेदनों द्वारा सामने लाया गया था।"

महोदय, मेरे पास कुछ और पैरा भी हैं और मैं आपकी कृपा चाहता हूं क्योंकि वे तुरन्त और तत्कालीक महत्व के हैं। ...**(व्यवधान)**

श्री श्रीकान्त जेना (केन्द्रपाड़ा) : क्या वे दस्तावेजों की फोटो कापी थीं?...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : यह दस्तावेज की फोटो कापी नहीं है। ...**(व्यवधान)**

श्री एम.पी. वीरेन्द्र कुमार (कालीकट) : आपके दल ने बहुमत साबित करने के लिए डी.एम.के. के से भी समर्थन का अनुरोध किया था...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : महोदय, यहां कुछ बहुत गम्भीर बातें कहीं गई हैं।

ई.पी.आर.एल.एफ. का संदर्भ देते हुए इसमें कहा गया है :

"ई.पी.आर.एल.एफ. के, विशेषकर श्री पदमनाभा और अन्य वरिष्ठ नेताओं की प्रत्येक गतिविधि की जानकारी राज्य पुलिस द्वारा एल.टी.टी.ई. को दी गई थी। जब जून के पहले या दूसरे सप्ताह में पदमनाभा मद्रास आया, तो मद्रास में उनके आने की सूचना एल.टी.टी.ई. को दी गई थी। ई.पी.आर.एल.एफ. हाउस जहां स्थित था, उसकी सूचना एल.टी.टी.ई. को दी गई थी और 19 जून, 1990 को, मद्रास में अब तक का सर्वाधिक कायरतापूर्ण अपराध किया गया था।"

तत्पश्चात, यह अरोप, कि

"मद्रास के तत्कालीन मुख्य मंत्री ने इन दूतों से मुलाकात की, उस दिन अर्थात इस हत्या के सात दिन पश्चात्, डो. एम.के. द्वारा एल.टी.टी.ई. चार लाख रुपये को दिए गये थे। उस समय संसद के एक माननीय सदस्य वहां उपस्थित थे।"

ये आरोप हम नहीं लगा रहे हैं। ये आरोप श्री वी.पी. सिंह और उनके सहभागियों जो आज आपके साथ सरकार में बैठे हैं पर लगाए जा रहे हैं। और माननीय प्रधान मंत्री गठबंधन और साझे कार्यक्रम के युग को बात करते हैं।...**(व्यवधान)**

श्री चन्द्र शेखर (बलिया) : आप और मैं श्री वी.पी. सिंह का समर्थन कर रहे थे।

श्री जसवन्त सिंह : चन्द्र शेखर जी मैं और आप श्री वी.पी. सिंह का समर्थन नहीं कर रहे थे। प्रश्न यह नहीं है। मैं उसके बारे में बात नहीं कर रहा हूं। मैं उस बात की संगतता के बारे में बात कर रहा हूं जो अब कही जा रही है। यदि हम वी.पी. सिंह जी का समर्थन कर रहे थे तो हम विरोध भी कर रहे थे।

सभापति महोदय : श्री जसवन्त सिंह जी, कृपया अपनी बात जारी रखिए।

श्री जसवन्त सिंह : मैं माननीय चन्द्र शेखर जी की बात का उत्तर दे रहा हूं।...**(व्यवधान)**

श्री चन्द्र शेखर : सभापति महोदय, जैसा कि श्री जसवन्त सिंह जी ने स्वीकार किया है, क्या मैं एक नम्र निवेदन कर सकता हूं? यह बेहतर होगा कि इन सब बातों को छोड़ दिया जाए क्योंकि इसके लिए उस ओर बैठे कोई सदस्य भी जिम्मेदार हैं यही तो मैंने कहा है।

श्री जसवन्त सिंह : मैं माननीय चन्द्र शेखर जो जैसे एक बहुत ही वरिष्ठ सदस्य की बातों का जवाब देने के लिए बाध्य हूं। वह ज्येष्ठ व्यक्ति हैं। व्यक्तिगत रूप से मैं उनका बहुत आदर करता हूं और उनकी इस प्रकार की सलाह को नकार देना सामान्य तौर पर मेरे लिए बहुत कठिन होगा। परन्तु जहां तक चन्द्र शेखर जी की बात है, वह कहते हैं कि इन सब गूढ़ बातों का उल्लेख न किया जाए। बेहतर यही होगा कि ऐसा न किया जाए क्योंकि ऐसा करके हम गूढ़ बातों को उजागर कर रहे होंगे ।...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आपने पहले ही इसको उल्लेख कर दिया है। कृपया अपनी बात आगे जारी रखिए। यह पहले से ही रिकार्ड किया जा चुका है।

श्री जसवन्त सिंह : मैं उत्तर दे रहा हूं। आप बताइये कि मैं क्या करूं?

सभापति महोदय : अब आप आगे बोलिए।

श्री जसवन्त सिंह : महोदय, अब यहां पर एक माननीय सदस्य बोल रहे हैं। मैं इसका उल्लेख क्यों कर रहा हूं? इसलिए क्योंकि इस सब बातों की जड़ में राजनैतिक नैतिकता का महत्वपूर्ण पहलू शामिल है। ऐसे गम्भीर आरोप लगाने के बाद यह कहा जा सकता है कि इसमें राजनैतिक नैतिकता की बात शामिल है। महोदय, क्या आप जानते हैं कि इस सदन में ऐसा बयान किसने दिया था। क्या मुझे उस व्यक्ति का नाम लेना होगा जिसने ऐसे बयान दिये हैं? मैं यह नहीं कहता। मेरे साथी माननीय मुरसोली मारन और मैं, कई दशकों से एक दूसरे को जानते हैं। माननीय मुरसोली मारन अच्छी तरह से जानते हैं कि ये आरोप क्या थे। इन आरोपों के लिए उनको दोष नहीं दिया जा सकता। दोष तो माननीय श्री चिदम्बरम जी का है। उन्होंने वर्ष 1991 में, इस सदन में ये आरोप लगाए थे। इन आरोपों को लगाने के बाद आप वह इस प्रकार की व्यवस्था के अनुयायी हो गए हैं। इस व्यवस्था के सिद्धान्तानुयायी और प्रवक्ता बन गए हैं और यह हमें राजनैतिक नैतिकता की शिक्षा देते हैं। इस प्रकार की बदतर राजनैतिक अनैतिकता इस बात से प्रकट हो जाती है कि इस सदन में कहा कुछ जाता है और इसके पूर्ण विपरीत रूप में उनका आचरण होता है। इस दस्तावेज में जो आरोप लगाए गए हैं, उस पर थोड़ा ध्यान दें। यह कोई गुप्त दस्तावेज नहीं है। श्रीकान्त जी, यह उस सदन की कार्यवाही है जिसके आप भी सदस्य रह चुके हैं।

श्री ई. अहमद (मंजेरी) : कृपया अब आप केवल तारीख बता दीजिए।

श्री जसवन्त सिंह : मैं आपको तारीख बता दूंगा। तारीख है 25 फरवरी, 1991 क्या आप उस बात का उल्लेख कर रहे हैं जब उन्होंने पूछा कि क्या कोई जांच की गई है? क्या उन आरोपों से श्री चिदम्बरम जी संतुष्ट हैं?...**(व्यवधान)** मुझे चन्द्र शेखर जी को याद दिलाने के लिए मत कहिए।

श्री चन्द्र शेखर : मैं ऐसा नहीं कहूंगा क्योंकि यहां पर बहुत लोग हैं।

श्री जसवन्त सिंह : महोदय, श्री चिदम्बरम द्वारा सदन में एक बहुत गम्भीर आरोप लगाया गया है।

> "कोई कार्रवा शुरू करने से पहले मुझे विश्वास में लें ताकि मैं अपने साथियों को सचेत कर सकूं।"

श्री चिदम्बरम ने यह वक्तव्य तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्य मंत्री के सम्बन्ध में दिया था जो पुनः तमिलनाडु के मुख्य मंत्री बने हैं और श्री चिदम्बरम ने उनका समर्थन मांगा है। उन्होंने अपने दल के साथ छल करते हुए राजनैतिक गठबंधन किया और उनका सहारा लेकर संसद में प्रवेश किया।...**(व्यवधान)** अब हमें पाठ पढ़ा रहे हैं।

माननीय प्रधान मंत्री जी ने अपने भाषण का आरम्भ इस बात का खुलासा करते हुए किया कि इतने दलों के बीच आखिर किस प्रकार का गठबंधन हुआ है महोदय, हमें इस गठबंधन की सार्थकता पर विश्वास नहीं है क्योंकि इससे संसद के गणित को ही नहीं बल्कि इस प्रकार के अवसरवादी गठबंधन के कारण सम्पूर्ण राजनैतिक नैतिकता को चोट पहुंची हैं।

मैं यहां पर श्री सोमनाथ चटर्जी के तथा मेरे हस्तक्षेप के बारे में उल्लेख नहीं करना चाहता। उन्होंने उस दिन भी उनसे सवाल किया था।

श्री सोमनाथ चटर्जी : तब, आप मेरा समर्थन कर रहे थे।

श्री जसवन्त सिंह : मैं आपका समर्थन कर रहा था। निश्चित रूप से यही बात है। ऐसी त्रासदी हुई है। मुझे इस बात का आश्चर्य है कि श्री सोमनाथ चटर्जी सत्ता पक्ष के सदस्य के रूप में बैठे हुए हैं और मुझे इस बात का भी आश्चर्य होता है कि मेरे मित्र श्री निर्मल कान्ति चटर्जी को सत्ता पक्ष में पीछे बिठा दिया गया है। वह उस स्थान पर अच्छे नहीं लगते हैं। वह अजीब से लगते हैं। मुझे विश्वास है कि उन्हें अजीब-सा लगता होगा।...**(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपके पास अधिकार छीन लेने वाले लोग हैं। आपने पहले हमारा इस्तेमाल किया है।...**(व्यवधान)**

श्री जसवन्त सिंह : महोदय, यह मेरे लिए आवश्यक है कि मैं इसमें से केवल एक अथवा दो पंक्तियां उद्धृत करूं। यहां पर एक बहुत ही गम्भीर आरोप लगाया गया है।...**(व्यवधान)**

चिन्ता मत करिए। मैं, मुझे आबंटित समय में से भी कम समय लूंगा।

सभापति महोदय : वह मेरा काम कर रहे हैं।

श्री जसवन्त सिंह : श्री करूणानिधि के खिलाफ ही नहीं बल्कि श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के खिलाफ भी एक आरोप लगाया गया है। इस बारे में श्री चिदम्बरम को क्या कहना है? अब वह इनके गुरु ही नहीं हैं बल्कि आदर्श हैं। उन्होंने विभिन्न कारणों से इन सबको एक जुट किया है। एक घटक जिसे इस व्यवस्था के थोड़ी देर पहले तक मांडा के राजा साहब ने एक जुट रखा अब मांडा के उन्हीं राजा साहब के बारे में श्री चिदम्बरम का कहना क्या है?

> "श्री वी.पी. सिंह की सरकार बनने के बाद फरवरी 1990 में तमिलनाडु में एक अल्फा कक्ष की स्थापना की गई थी।"

मैं अगप के अपने मित्रों से अनुरोध करता हूं कि वे जिनके साथ बैठे हैं, उनका गम्भीरतापूर्वक विरोध करें क्योंकि ये स्थायी मित्र नहीं हैं। ये अवसरवादी दल हैं। मांडा के राजा साहब के बारे में श्री चिदम्बरम जी के जो विचार थे, मैं उनको भी दोहराना चाहता हूं।

"श्री चिदम्बरम : श्री वी.पी. सिंह आपको कई बातों का जवाब देना है। मेरे प्रिय मित्र श्री श्रीकान्त जी, आपसे निवेदन है कि आप ध्यानपूर्वक मेरी बात सुनें। श्री वी. पी. सिंह, आपको कई बातों का जवाब देना है। आपकी बारी आयेगी। यदि आप सत्ता में बने रहते, तो सम्पूर्ण तमिलनाडु को, सम्पूर्ण भारत को तबाह कर देते।"

मैं यह सब कुछ क्यों कह रहा हूं? ऐसा कहते हुए मुझे कोई प्रसन्नता नहीं हो रही है। मैंने इसका उल्लेख इसलिए किया है क्योंकि यह जो बीमारी है वह मात्र भ्रष्टाचार अथवा वित्तीय प्रकृति की नहीं है। भ्रष्टाचार की यह बीमारी पूर्णरूप से राजनैतिक है और यदि यही वो कारण है जिसके लिए मोर्चा, नामक अपवित्र गठबंधन हुआ है तो कृपया हम सब सभा की स्थिति को देखें। यदि वे यथार्थवादी होते, तो पाते कि सभा में उनका मात्र एक वर्ग पर अधिकार है। कुल छह वर्गों में से पांच वर्ग, वास्तव में उनका विरोध करते हैं और इसी एक वर्ग के आधार पर यह दावा किया गया कि चूंकि वह हमारे साथ है, भीतर से हो अथवा बाहर से, हम सरकार बनाना चाहते हैं।" यह उनकी गहनतम राजनैतिक अनैतिकता को व्यक्त करती है। यही राजनैतिक अनैतिकता उनको उनके सम्पूर्ण मामले को मात्र दो बातों पर आधारित करने को प्रेरित करती हैं और वो हैं : भजपा को सत्ता में आने से रोको।

श्री सोमनाथ चटर्जी : स्वाभाविक तो है।

श्री जसवन्त सिंह : उन आधारों पर हम उनको समर्थन नहीं दे सकते।...**(व्यवधान)** मैं नहीं चाहता...

सभापति महोदय, क्या आप चाहते हैं कि मैं अपना भाषण समाप्त कर दूं?

सभापति महोदय : जी, नहीं। आप अपना समय ले रहे हैं।

श्री जसवन्त सिंह : मुझे यूरिया से संबंधित दुर्भाग्यपूर्ण मामले के बारे में दो शब्द कहना है। मैं समचार-पत्रों की खबरों से उद्धत नहीं कर रहा हूं। मेरे पास प्रथक् इत्तला रिपोर्ट की एक प्रति है। यह प्राथमिक रिपोर्ट है। यह रिपोर्ट हमारे कार्यकाल में दर्ज नहीं की गई थी। मैं इस रिपोर्ट को पूरा उद्धत नहीं करना चाहता, इसलिए यहीं पर अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। यहां पर स्थिति कुछ ऐसी है जबकि एक ऐसी कम्पनी से, जो कि अस्तित्व में नहीं है, यूरिया खरीदने के लिए 133 करोड़ रुपये निकाले गये। यह मांग की गई कि उस आर्डर को पूरा करने के लिए कम से कम बीमा तो कराई जाए जो कि लेन-देन को पूरा करने के लिए किया जाने वाला एक वैध, दैनिक वाणिज्यिक कार्य है। आपके पास बीमा की व्यवस्था होनी चाहिए और उसके लिए भी अग्रिम राशि का भुगतान किया जाता है। जो बीमा कराया जाता है उसमें माल की सुपुर्दगी शामिल नहीं होती। कोई बीमा नहीं कराया गया कोई यूरिया की खरीद नहीं की गई। भारतीय करदाताओं की 133 करोड़ रुपये की धनराशि बाहर भेज दी गई।

हम सरकार से स्पष्टीकरण की मांग क्यों कर रहे हैं? हम सरकार को स्पष्टीकरण के लिए इसलिए कह रहे हैं क्योंकि इस सरकार का अस्तित्व ही कांग्रेस के सभी सदस्यों के समर्थन पर निर्भर है। जब तक कांग्रेस पार्टी इसका समर्थन नहीं करती, आप अपने न्यूनतम साझा कार्यक्रम को अंशतः भी क्रियान्वित करने की स्थिति में नहीं है। कांग्रेस पार्टी में आज तक दुविधा की स्थिति बनी हुई है, वह पूर्ण रूप से बचनबद्ध नहीं है, कांग्रेस पार्टी ने यह नहीं कहा है कि आपका न्यूनतम साझा कार्यक्रम उन्हें स्वीकार्य है। जिस दिन वे स्वयं इसकी वचनबद्धता देंगे...

श्री शरद पवार : हमने कहा है।

श्री जसवन्त सिंह : आपने कहा है। यह आपको पूरी तरह से स्वीकार्य है, जिसमें भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष के साथ-साथ भ्रष्टाचार के बारे में उन्होंने जो कुछ कहा है, वह शामिल है।...**(व्यवधान)**

अनेक माननीय सदस्य : जी हां, हमने कहा है।

श्री जसवन्त सिंह : मैं पुनः आश्वस्त हो गया हूं। मुझे खुशी है कि कांग्रेस और वास्तव में इसके दो प्रवक्ताओं ने यह बात कही है। माननीय पूर्व प्रधान मंत्री और कांग्रेस पार्टी में उनके प्रमुख राजनीतिक प्रतिद्वंदी बारामती से माननीय सदस्य...**(व्यवधान)** यही बात समाचार पत्रों में कही गई है। मैं यह नहीं कह सकता कि आप वास्तव में उनके प्रतिद्वंदी हैं या नहीं।...**(व्यवधान)**

श्री शरद पवार : गलत शब्द मत बोलिए।

श्री जसवन्त सिंह : अगर आप नहीं...**(व्यवधान)**

श्री पी.वी. नरसिंह राव (बरहामपुर) : महोदय, वह यह प्रश्न पूछ रहे थे कि क्या कांग्रेस पार्टी सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा घोषित न्यूनतम साझा कार्यक्रम का समर्थन करती है तथा उससे सहमत है अथवा नहीं। मैं उन्हें बताता हूं कि यह पहले ही स्वीकार किया जा चुका है। उसमें कुछ मतभेद हो सकते हैं, कुछ मामलों में हम चाहते हैं कि तेजी से काम किया जाये। इन सभी मामलों पर चर्चा करके उनका हल निकाला जा सकता है। सैद्धान्तिक रूप से तथा कार्यक्रम की विषय-वस्तु के सम्बन्ध में हमें ऐसा कुछ नहीं लगता, जिसका हम विरोध कर सकें अथवा विरोध करना चाहें। इसलिए, हम उनका समर्थन करते हैं और यही बात मेरे प्रवक्ताओं ने कही है। इस बात को उसी उचित व्यक्ति ने सार्वजनिक किया है, जिसे इसे करना चाहिये था और मुझे विश्वास है कि कार्यकारिणी समिति भी, जब भी इसकी बैठक होगी, इसका समर्थन करेगी।

श्री जसवन्त सिंह : सभापति महोदय, वास्तव में यह मुझे पुनः आश्वासन देने का मामला नहीं है। माननीय प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा को यह सुनकर बहुत तसल्ली होनी चाहिये हालांकि मुझे विश्वास नहीं है कि कांग्रेस पार्टी के बाकी सदस्यों को इससे तसल्ली हुई है अथवा नहीं या उनकी कोई अलग योजना है।...**(व्यवधान)**

श्री पी.वी. नरसिंह राव : वह अपने प्रश्न से हटकर बोल रहे हैं।

श्री जसवन्त सिंह : सभापति महोदय, माननीय पूर्व प्रधान मंत्री द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण से वास्तव में मेरी चिंता और गहरी हो गई है।

मेरी यह चिंता स्पष्ट रूप से न्यूनतम साझा कार्यक्रम को लेकर है। इसे वास्तव में न्यूनतम साझा कार्यक्रम होना चाहिये, इसे साझा न्यूनतम कार्यक्रम नहीं होना चाहिए। लेकिन मेरा प्रश्न यह नहीं है। मेरा कहना यह है कि भ्रष्टाचार संबंधी अध्याय इतना अस्पष्ट क्यों है। ऐसा स्पष्ट रूप से इसलिए है क्योंकि कांग्रेस ने इसे समर्थन दिया है, क्योंकि आप पहले से ही...**(व्यवधान)** अतः, आप निश्चित रूप से विश्वास प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर सकते।

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी : पुस्तक यह कहती है कि यह प्रमुख नीतिगत मामलों और न्यूनतम कार्यक्रम के सम्बन्ध में अपनाया गया एक साझा दृष्टिकोण है। मेरा यही कहना है।

श्री जसवन्त सिंह : इसे ठीक करने का काम प्रोफेसर के सिवाय और कौन कर सकता है। लेकिन प्रश्न यह है कि कांग्रेस ने इस प्रकार के कार्यक्रम को अंततः समर्थन दे ही दिया है। अतः, मुझे प्रसन्नता है कि कम्युनिस्टों ने भी अभयदान दे दिया है और जनता दल ने भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष करने का विचार छोड़ दिया है, इसीलिए इस कार्यक्रम में भ्रष्टाचार के मामले पर बहुत ही कम कहा गया है और इसीलिए हमने यह यूरिया का मामला उठाया है। 'यूरिया' एक अन्य पहलू है। 'यूरिया' भ्रष्टाचार का प्रतीक है, उस भ्रष्टाचार का, जिसकी शुरूआत मुख्य रूप से राजनीतिक भ्रष्टाचार से होती है।

महोदय, मुझे एक बात और कहनी है।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आज का दिन, आपके अच्छे दिनों में से नहीं है।...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

तेरह दिन का सुलतान।

[अनुवाद]

श्री जसवन्त सिंह : मैंने ये सब बातें नहीं कही है।

श्री संतोष मोहन देव : आप मेरे अच्छे मित्र हैं। 13 दिन के मंत्रालय ने आपको बिगाड़ दिया है। आप एक अच्छे सदस्य हैं। आज आपको क्या हो गया है?

श्री जसवन्त सिंह : ऐसा नहीं है।

महोदय, मुझे एक बात और कहनी है। मेरे नेता, पूर्व प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी इसका उल्लेख करेंगे। यह मामला राष्ट्रीय सुरक्षा का है। मैं आपका ध्यान निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में चल रहे सम्मेलन की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। प्रधान मंत्री महोदय, मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर भी दिलाना चाहता हूं कि सम्मेलन में सम्मेलन के अध्यक्ष द्वारा 28 मई को एक नया विषय लाया गया हैं। प्रधान मंत्री महोदय, मैं आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि यह अध्याय भारत की आवश्यकताओं को किसी भी प्रकार से पूरा करने वाला नहीं है। यह सम्मेलन 28 जून को समाप्त हो रहा है। आपके माननीय विदेश मंत्री ने बुद्धिमतापूर्वक देश को सूचित किया है पूर्व सरकार की नीतियां जारी रहेंगी। मेरे विचार में उनका तात्पर्य पूर्व कांग्रेस सरकार से है और अगर पूर्व सरकार की नीतियां जारी रही तो फिर यह केवल मामला और भी गहन चिंता का हो जाता है क्योंकि व्यापक परमाणु अप्रसार संधि के सम्बन्ध में पूर्व सरकार की कोई नीति नहीं थी। और यह इतना कहकर चुप नहीं रह सकती कि जब तक विश्वव्यापी निःशस्त्रीकरण नहीं जो जाता, तब तक हम व्यापक परमाणु अपसार संधि का विरोध करना जारी रखेंगे। व्यापक परमाणु अप्रसार संधि, जो आज देश के सामने अत्यधिक महत्वपूर्ण सुरक्षा सम्बन्धी मसला है, के सम्बन्ध में नीति संबंधी स्पष्ट वक्तव्य देने का समय आ गया है। यह 28 जून तक इंतजार करने का प्रश्न नहीं है। मेरे विचार में, इस सरकार को 20 जून से पहले ही निर्णय पड़ेगा। चुनाव स्पष्ट है। आप व्यापक परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं कर सकते और अगर आप उस पर हस्ताक्षर नहीं कर सकते तो फिर निःशस्त्रीकरण का भ्रमजाल उत्पन्न करने वाले इन सम्मेलनों में जाकर आप दिग्भ्रमित मत होइये। इससे आप राष्ट्रीय हितों की अपूरणीय क्षति करेंगे।

इस मामले पर मैं और विस्तार से नहीं बोलूंगा क्योंकि आज मेरे पास सीमित समय है और मैं अपना भाषण समाप्त करूंगा।

जितने अच्छे ढंग से शासन हो सके, उतने अच्छे ढंग से शासन कीजिये। लेकिन इस देश पर शासन करने के लिए आपको बहिष्कारवादी और नकारने वाला दृष्टिकोण त्यागकर सबके साथ मिलकर चलने का भाव अपनाना होगा। आपको सकारात्मक रवैया अपनाना होगा और मैं आपको, प्रधान मंत्री महोदय आपको सचेत करता हूं कि अगर आपके साथ आपके मुख्य प्रवक्ता जैसे तत्व हैं, जो कल तक आपके अन्य सहयोगियों के कटु आलोचक थे, तो फिर यह आपके सरकार में बने रहने अथवा स्थायित्व के लक्षण नहीं है। हमारा उसमें कोई योगदान नहीं है। आपके घटक स्वयं उसमें योगदान कर रहे हैं।

प्रधान मंत्री महोदय, आप यह भी दर्शाते हैं कि इस देश पर शासन करने का काम, इस देश के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने में इस प्रकार का रवैया नहीं अपनाना चाहिये, जैसाकि अपनाया जा रहा है।

अपराह्न 1.00 बजे

अगर इस सरकार में हम अपना विश्वास मत अभिव्यक्त करने में असमर्थ रहे हैं, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि हम इस मोर्चे के इस तर्क को समझने में असमर्थ रहे हैं कि हम सत्ता में इसलिए हैं, क्योंकि हमें भारतीय जनता पार्टी को सत्ता में आने से रोकना है। यह हमारी बात का जवाब नहीं है। अगर वह आकर यह कहते कि हम सत्ता में इसलिए हैं क्योंकि हम देश की सेवा करना चाहते हैं और इसी आधार पर हमने चुनाव लड़ा है, इसीलिए हम सत्ता में आ रहे हैं और व सदस्य जो यहां एकत्रित बैठे हैं, समवेत रूप से एक राजनीतिक दर्शन, एक आर्थिक विचार को दर्शाते हैं, तो निश्चित रूप से वह एक अलग बात होती। यह एक खंडित विचार है, यह विभाजित विचार है। यह केवल विभाजित विचार ही नहीं है बल्कि यह एक ऐसा विचार है, जो एक साथ सत्ता हासिल करने, सिर्फ हासिल करने के लिए उत्पन्न हुआ है। हम यह समझ पाने में असमर्थ हैं कि उनका समर्थन करने के लिए यह एक पर्याप्त आधार है। अतः, मैं माननीय प्रधान मंत्री द्वारा पेश किये गये प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

सभापति महोदय : श्री ए.आर. अन्तुले।

श्री सत्य देव सिंह : हमने भोजन का समय न देने का निर्णय नहीं लिया है।

सभापति महोदय : इस बात का निर्णय पहले ही अध्यक्ष महोदय द्वारा लिया जा चुका है।

(व्यवधान)

श्री संतोष मोहन देव : महोदय, पूरा राष्ट्र इस प्रसारण को देख रहा है...**(व्यवधान)**। माननीय सदस्य यह नहीं समझ पा रहे हैं कि क्या हम दोपहर के भोजन के लिए जाएं अथवा नहीं। आप निर्णय लीजिए, हम वहीं करेंगें।

सभापति महोदय : माननीय सदस्यगण, अध्यक्ष महोदय इस बात का निर्णय पहले ही ले चुके हैं कि हम बैठे रहेंगे और दोपहर के भोजन के लिए नहीं जायेंगे। अतः माननीय सदस्य श्री अन्तुले अब बोलेंगे। ...**(व्यवधान)**

श्री ए.आर. अन्तुले (कुलाबा) : माननीय सभापति महोदय ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : कृपया दखल नहीं दीजिए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री राम नाईक (मुम्बई उत्तर) : सभापति जी, समय के बारे में कल जो फाईनल हुआ है, उसे इस प्रकार मजबूरी से किया जाए तो वह अच्छा नहीं है। ऐसे सदन नहीं चल सकता।...**(व्यवधान)** समय हमेशा सहमति से तय होता है।...**(व्यवधान)**

अपराह्न 1.03 बजे

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय : अपने आपको और अधिक भूखा नहीं रखिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, अब सभा दोपहर के भोजन के लिए अपराह्न 2.00 बजे तक के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 1.04 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा मध्याह्न भोजन के लिए अपराह्न 2.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।

अपराह्न 2.01 बजे

लोकसभा मध्याह्न भोजन के पश्चात् अपराह्न 2.01 बजे पुनः समवेत हुई।

(श्री चित्त बसु पीठासीन हुए)

मंत्रि-परिषद् में विश्वास संबंधी प्रस्ताव-जारी

सभापति महोदय : अब हम मंत्रि परिषद में विश्वास संबंधी प्रस्ताव पर चर्चा जारी करते हैं। श्री ए.आर. अन्तुले।

श्री ए.आर. अन्तुले : माननीय सभापति महोदय, मुझे विश्वास है कि आज हम यह दावा कर सकते हैं कि भारतीय लोकतंत्र परिपक्व हो गया है। किसी भी अच्छी चीज का फल मिलने में कुछ समय हमेशा लगता है। जब प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा जी ने विश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किया तो किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा कि गांव का एक ग्रामीण व्यक्ति इस राष्ट्र के उच्च कार्यकारी पद पर सुशोभित होगा।

भारतीय शासन व्यवस्था में, भारत के संदर्भ में पंथ निरपेक्षता के बिना लोकतंत्र संभव नहीं हो सकता। जब तक कि लोकतंत्र पंथ निरपेक्ष नहीं होता, तब तक वह कोई लोकतंत्र नहीं है। यदि हम हिसाब लगाये, जैसा कि भा.ज.पा. का लगाया गया है, तो यहां अल्पसंख्यकों का क्या स्थान है?

श्री राम नाईक : माननीय सभापति महोदय, मेरा प्रश्न सूचना के संबंध में है।

श्री ए.आर. अन्तुले : मैं आपकी बात नहीं मान रहा हूं।

श्री राम नाईक : महोदय, प्रधान मंत्री जी ने आश्वासन दिया है कि वे पूरी चर्चा के दौरान सभा में उपस्थित रहेंगे। लेकिन अब प्रधान मंत्री यहां नहीं हैं। जब श्री अन्तुले जैसे वरिष्ठ माननीय सदस्य बोल रहे हों तो प्रधान मंत्री जी को यहां उपस्थित रहना चाहिए।

सभापति महोदय : कुछ मंत्री यहां मौजूद हैं। श्री अन्तुले, कृपया आप अपना वक्तव्य जारी रखिए।

(व्यवधान)

श्री ए.आर. अन्तुले : मैं केवल एक बुनियादी बात कह रहा था जो कि हमारे देश का तथा अनेक देशों का बुनियादी सत्य है जिसमें हमारी तरह विभिन्न रंग संस्कृति धर्म तथा भाषा वाले लोग रहते हैं। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि स्वर्ण सिंह समिति, मुझे जिसका सदस्य सचिव नियुक्त किया गया था, के आदेश पर भारत के संविधान की प्रस्तावना में 'पंथ' निरपेक्ष' शब्द को वस्तुतः जनवरी 1977 में शामिल किया गया था जबकि प्रारम्भ में वर्ष 1976 में छोड़ दिया गया था।

महोदय, इस पक्ष के मेरे मित्रों के साथ मेरी कोई लड़ाई नहीं है क्योंकि मेरे पास इसके लिए न कोई समय था न होगा। जब श्री जसवन्त सिंह जी, जिन्हें वह अन्य लोगों से अधिक जानते हैं, और मैं भी उनका काफी सम्मान करता हूं ने कहा कि "हम भी पंथ निरपेक्ष हैं", तो वास्तव में मैंने यह महसूस किया था कि उन्हें 1977 में इसी मुद्दे को लेकर उस समय जनता पार्टी से नहीं निकाला जाना चाहिए था। उस समय भा.ज.पा. वस्तुतः जनसंघ के रूप में विद्यमान थी। जनसंघ जनता पार्टी में मिल गई और इस प्रकार वह तत्कालीन लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में कांग्रेस के विरूद्ध एक बड़ी पार्टी बन गई। यह एक अच्छी बात है। इस बारे में कुछ भी गलत नहीं है। हम सब इस तरह की बातों का स्वागत करते हैं चाहे हम दूसरे पक्ष में थे और वे जनादेश जीत गए थे। तत्कालीन जनता दल सत्ता में आ गया था। मोरारजी भाई प्रधान मंत्री थे और चरण सिंह जी गृह मंत्री तथा वित्त मंत्री थे। मुझे यह पूछते हुए दुख हो रहा है कि 'वह सरकार क्यों गिरा दी गई थी'? क्या कांग्रेस ने उसे गिराया था? नहीं। जनता पार्टी के उस समय जनसंघ कहलाने वाले एक वर्ग ने दोहरी सदस्यता के मामले को लेकर पार्टी छोड़ दी। मधु लिमयेजी ने एक लड़ाई छेड़ दी थी और मुझे याद है कि जार्ज फर्नान्डीज साहब भी उससे पीछे नहीं थे। अतः, उस समय जब सरकार में फूट पड़ गई तो वह गिर गई। क्या मैं उसी तर्क को पुनः दोहराऊं जो अपने परम मित्र श्री जसवन्त सिंह जी एवं उनके साथियों की ऐसी मंशा जिसको पूरा करने के लिए उन्होंने प्रयास एवं मेहनत की थी का खंडन करते हुए मैंने दी थी। 1989 में जो कुछ हुआ था, क्या हमें उसी को दोबारा स्मरण करना चाहिए? भा.ज.पा. यहां बैठी थी श्री वी.पी. सिंह जी वहां बैठे थे और हम विपक्ष में बैठे थे। तत्कालीन प्रधान मंत्री, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी द्वारा विश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था और मुझे याद है कि मुझे उस प्रस्ताव के विरुद्ध बोलने तथा अपने विचार व्यक्त करने के लिए कांग्रेस की ओर से खड़ा किया गया था। हमने उस प्रस्ताव का विरोध नहीं किया था।

उस समय कांग्रेस ने, उससे कहीं अधिक स्थान प्राप्त किए थे जितने भा.ज.पा. ने अब प्राप्त किए हैं। कांग्रेस पार्टी के नेता यह कह सकते थे कि हम सरकार बनायेंगे क्योंकि वे इसके हकदार थे और तत्कालीन राष्ट्रपति ने भी उनसे सरकार बनाने की पेशकश की थी, लेकिन उन्होंने साफ इन्कार कर दिया था कि हम सरकार नहीं बनायेंगे।

जनता ने हमें विपक्ष में बैठाया है तथा हमने राष्ट्रपति जी को विनम्रतापूर्वक यह कह दिया कि हम विपक्ष में ही बैठेंगे। एक महान् सांसद तथा नेता होने के नाते निश्चय ही उनको शपथ दिलाई जा सकती थी, जैसा कि भूतपूर्व प्रधान मंत्री और विपक्ष के वर्तमान नेता अटल जी ने किया था जिनकी सरकार केवल 13 दिन रही थी। यद्यपि, राजीव जी भी ऐसा कर सकते थे। अब, जनादेश क्या है? हमारे जैसी शासन व्यवस्था में **जनादेश** आपको शासन करने का आदेश देता है। अब यह कहा जाता है कि यह 'त्रिशंकु संसद' है। मुझे भय है कि मैं उनसे सहमत नहीं हूं जो यह कहते हैं कि यह 'त्रिशंकु सरकार' है। यह संसद सजीव, और क्रियाशील है, निष्क्रिय नहीं है। वास्तव में विभिन्न ताकतों के ध्रुवीकरण के बीज बोये गये हैं। सभापति महोदय, मेरे विचार में यह हमारे देश के भविष्य के लिए हमारे लोकतंत्र की भावी एकता और अखंडता के लिए तथा हमारी भावी प्रगति एवं खुशहाली तथा देश की स्वतंत्रता के लिए शुभसूचक है। यह गठबंधन सरकार है, लेकिन ऐसा नहीं है जैसा कि श्री जसवन्त सिंह जी ने अपने निराले ढंग में कहा है कि यह एक खतरनाक और परस्पर भिन्न सरकार है। ठीक है, उनके भिन्न-भिन्न घोषणा पत्र हैं, जी, हां। हमारे जैसी लोकतंत्रात्मक व्यवस्था में और हमसे भी छोटे लोकतंत्रात्मक देशों में भी अनेक दल हैं, वहां भी गठबंधन सरकारें हैं। इन गठबंधन सरकारों ने जनता के समक्ष अपने कार्यक्रम रखे हैं। मैं यह कहना चाहता हूं। 'न्यूनतम साझा कार्यक्रम' को भूल जाइए। इस देश के नागरिक के रूप में यदि हम केवल एक मुद्दे अर्थात् भारतीय लोकतंत्र के धर्मनिरपेक्ष स्तम्भ पर एक जुट हो सके तो मुझे खुशी होगी। मैं और कुछ नहीं चाहता। अन्य बातों की पेशकश करने से क्या लाभ अगर आप पंथनिरपेक्ष नहीं है? अगर आप पंथनिरपेक्ष नहीं हैं तो आप सही अर्थों में समाजवादी नहीं हो सकते हैं और कार्य नहीं कर सकते हैं और संविधान की प्रस्तावना, जिसमें राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक न्याय की बात उल्लिखित है, को लागू नहीं कर सकते हैं। पंथ निर्पेक्ष राष्ट्र में अल्पसंख्यकों की संस्थाओं की संरक्षा करनी है। अल्पसंख्यक और अल्पसंख्यकवाद की चर्चा करना सिर्फ शब्दाडम्बर है। बहुसंख्यक यह कह सकते हैं कि वे अल्पसंख्यकों को प्रसन्नतापूर्वक उनकी जायज आवश्यकता के अनुरूप दे सकते हैं। कृपया इसको अल्पसंख्यकवाद मत कहिये। इसको समान न्याय अथवा उचित कह सकते हैं। समान न्याय के अभाव में आप इस महान राष्ट्र को एकजुट रखते हुए, इस पर शासन नहीं कर सकते हैं। इसलिये, इस गठबंधन का मूल आधार धर्मनिरपेक्षता ही है। हम वर्तमान सरकार को बाहर से समर्थन दे रहे हैं अपितु, कुछ समय पश्चात् अगर हमारे नेता और कार्यकारी समिति सरकार में शामिल होने का निर्णय लेती है तो हम शामिल हो सकते हैं। इससे क्या फर्क पड़ने वाला है? संविधानिक

जरूरतों की पूर्ति हेतु जब कभी भी कोई प्रस्ताव लाया जायेगा उसको बहुमत से पारित कर दिया जायेगा। अगर कांग्रेस शामिल होने की इच्छुक होती तो भी कितने लोग शामिल हो पाते? हो सकता है पांच, सात अथवा दस शामिल हो पाये और सभी 140 तो नहीं हो सकते हैं।

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : कोई भी नहीं।

श्री ए.आर. अन्तुले : हमारे 140 सदस्य हैं। मैं श्री जसवंत सिंह द्वारा श्री पी. चिदम्बरम जी के खिलाफ उठाए गए मुद्दे पर नहीं बोल रहा हूं। वह सक्षम, सुस्पष्ट तथा वाक्पुट हैं। मैं यह कहने का साहस कर रहा हूं कि श्री चिदम्बरम जी, श्री जसवंत सिंह जी द्वारा उठाए गए प्रथम पहलु का उत्तर दे देंगे और मुझे श्री चिदम्बरम की सफाई में कुछ कहने की जरूरत नहीं है। मैं यह इसलिये कह रहा हूं क्योंकि मेरी जनादेश में अटूट आस्था है। क्या तमिलनाडु के लोगों ने उनकी करतूतों के लिए उनको सजा नहीं दी? क्या हम उनसे उनके कृत्यों के बारे में पूछ सकते हैं? उन्होंने हमारी पीठ पर छुरा मारा अथवा नहीं मारा यह हमारा अंदरूनी मामला है।...**(व्यवधान)** जब आपने 1979 में जनता पार्टी और 1990 में श्री वी.पी. सिंह सरकार से संबंध विच्छेद किया था तब हमने आपके विश्वसनीयता पर तो कोई प्रश्न नहीं उठाया था। कांच के घरों में रहने वालों को सावधान रहना चाहिये।

लोगों ने अपनी भावनाओं और मन के अनुरूप अपना मत देश की धर्मनिरपेक्ष शक्तियों के पक्ष में व्यक्त कर दिया है। यह न्यूनतम कार्यक्रम नहीं है। अगर यह एक सूत्री कार्यक्रम भी है तो भी मैं इसके बारे में प्रसन्न हूं।...**(व्यवधान)** अच्छा, हम देख लेंगे। **(व्यवधान)** हमारे देश की प्राचीन संस्कृति और परंपरा में धर्मनिरपेक्षता अंतर्निहित है।...**(व्यवधान)** ऐसा हमेशा ही रहा है और कोई भी वर्तमान राज्य व्यवस्था को धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण से पृथक नहीं कर सकता है।... **(व्यवधान)**

मैं खड़ा हुआ हूं। मेरे साथियों को उत्तर देने का अवसर मिलेगा।. ..**(व्यवधान)** अगर आपकी लोकतंत्र में आस्था है तो यह 4,000 नहीं है, इससे भी कहीं ज्यादा है। सिर्फ एक...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : कृपया लगातार टिप्पणियां मत करिये।

श्री ए.आर. अन्तुले : कृपया लगातार टिप्पणियां मत करिये क्योंकि इसका अर्थ लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था और लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर प्रश्न उठाना है। मैं इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूं। वह मेरा ध्यान भंग नहीं कर सकते हैं।...**(व्यवधान)**

मैं कहना चाहता हूं कि हर प्रकार के साम्प्रदायिक प्रचार के बावजूद में 4,007 वोट से जीता हूं।...**(व्यवधान)** हां, मैं जीता हूं। यह मेरे लिये अभिमान का विषय है।...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : कृपया इस सबका उल्लेख मत करिये।

श्री ए.आर. अन्तुले : मैं उनकी बात पर ध्यान नहीं दे रहा हूं। मेरी आवाज दबाई नहीं जानी चाहिये।

सभापति महोदय : जी हां, दबाई नहीं जा सकती है।

श्री ए.आर. अन्तुले : उनको अपनी आवाज ऊंची करने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिये। अगर वे कहते हैं कि सभी की सम्मति से सभा कार्य कर सकती है तो उनको अपनी बात मनवाने दीजिए और हमको अवसर देने दीजिये जैसा कि मेरे दोस्त श्री राम नाईक ने कहा है। हमको सरकार को अवसर देना चाहिये और उनको मनमर्जी कर लेने दो। कोई उनके ऊपर जोर-जबरदस्ती नहीं कर रहा है।

मैं लम्बा भाषण नहीं देने वाला हूं क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। माननीय प्रधान मंत्री ने ठीक ही कहा है कि सरकार ने कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लिया है। हमको आपसे कुछ नहीं सीखना है। इस संबंध में हम और आप भिन्न हैं। इसलिये, मैं कहना चाहता हूं कि जब मैं श्री एच.डी. देवेगौड़ा जी को वहां पर बैठा हुआ देखता हूं तो मैं इस पर ध्यान नहीं देता हूं कि वह किस दल से संबद्ध हैं। मुझे एक भारतीय नागरिक होने का गर्व है क्योंकि जैसा कि मैंने आरम्भ में कहा था कि यह लोकतंत्र की प्रमाणिकता ही है कि एक गांव का गरीब किसान भारत के प्रधान मंत्री पद पर आसीन है। बिना किसी उग्रभाव के और प्रतिस्पर्धा के कर्नाटक के मुख्य मंत्री को सरकार बनाने के लिये आमंत्रित किया गया। ऐसा कितनी बार हुआ है कि एक व्यक्ति, जो कि दौड़ में नहीं था, जिसके बारे में विचार भी नहीं किया गया था और स्वयं जिसने इस बारे में सोचा भी नहीं था, को सरकार बनाने के लिये आमंत्रित किया गया है? क्या इससे यह नहीं मालूम चलता है कि जनता हमसे ज्यादा परिपक्व है। भारत के लोग अधिक परिपक्व है। यहां पर बैठे हुए नेताओं से अधिक धर्मनिरपेक्ष जनता है। इस देश की जनता को हमेशा एक सूत्री कार्यक्रम प्रिय रहेगा कि सभी संस्कृतियों और धर्मों को बढ़ावा देना है और प्रत्येक धर्म को तथा उसके अनुयाइयों को उनका यथेष्ट हिस्सा और अवसर देना है। इसी को धर्मनिरपेक्षता कहते हैं। इसका अनुवाद "सर्वधर्म समभाव" होना चाहिये। परन्तु, जब हम 'सेक्यूलरिज्म' अर्थात् धर्म निरपेक्षता शब्द को संविधान की प्रस्तावना में रखते हैं तो इसका हिन्दी में अनुवाद "सर्वधर्म समभाव" दिया हुआ है अर्थात् इस देश में प्रत्येक धर्म को समान सम्मान। यह अधर्मान्धता नहीं है। हालांकि, अनुवाद से ऐसा प्रतीत नहीं होता है पर इसके अनुवाद से यह भी प्रतीत नहीं होता है कि सभी धर्मों के लिऐ समान सम्मान है :

"सर्वधर्म समभाव"।

महोदय, काफी अधिक चर्चा हो रही है...**(व्यवधान)**

अनेक माननीय सदस्य : यूरिया के बारे में।

श्री ए.आर. अन्तुले : आपको मुझे स्मरण कराने की आवश्यकता नहीं है। मुझे श्री जसवंत सिंह द्वारा उठाए गए तीनों मुद्दे

याद हैं। श्री अटल जी को अभी बोलना है। तत्पश्चात्, मैं अपने नेता से बोलने का अनुरोध करूंगा और उनके बाद माननीय प्रधान मंत्री बोलेंगे। यह सुबह ही निश्चित् हो गया था।

अतः, महोदय, अपना सहयोग देते हुए, मैं आशा करता हूं कि यह संसद इस सरकार को बिना किसी अड़चन के, बिना किसी अवरोध के पूरे पांच वर्ष तक कार्य करने देगी। मैं आशा करता हूं कि इसमें कोई मुश्किल नहीं है। मैं कांग्रेस पार्टी की ओर से यह कह सकता हूं कि हम किसी तुच्छ आधार पर सरकार को गिराने की अनुमति नहीं देंगे क्योंकि जैसा हमारे नेता ने कहा है, यह जो कार्यक्रम तैयार किया गया है, हम उसका समर्थन करते हैं। चूंकि यह कार्यक्रम हम सभी का कार्यक्रम है और मुख्य आधार धर्मनिरपेक्षता है, अतः, मुझे विश्वास है कि उन्हें और हमें कोई आशंका नहीं है आप कुछ भी कहते रहिये। आप यहां केवल पांच वर्षों तक ही नहीं रहेंगे। मुझे एक बात और कहनी है जैसाकि प्रधान मंत्री जी ने ठीक ही कहा है—आज सुबह उन्होंने दलितों, अन्य पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों तथा अल्पसंख्यकों के बारे में जो कुछ कहा मैं उसे बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहा था और मुझे उसकी खुशी और गर्व है। मैं प्रधान मंत्री महोदय को उस सच्चाई का बयान करने के साहस के लिए जिसको बयान किये जाने की आवश्यकता थी, उन्हें शुभकामनाएं और बधाई देता हूं।

इन शब्दों के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : सभापति महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। महोदय, मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि आज यह सभा विश्व के सामने यह साबित कर देगी कि यह सरकार इस देश की विधिसम्मत सरकार है जिसे 77 प्रतिशत मतदाताओं और सभा में बहुमत का समर्थन प्राप्त है। यह सरकार कोई ऐसी सरकार नहीं है जो बुलंद आवाज में अपनी तथाकथित सदस्य संख्या संबंधी झूठे अनुमान का दावा कर रही थी कि सभा में उसे बहुमत प्राप्त होगा। और महोदय, इस देश में 13 दिनों तक जो कुछ हुआ, वह सांविधानिक अपमान के सिवाय और कुछ नहीं था। मुझे इस सभा में पहले भी कुछ समय तक रहने का अवसर मिला था लेकिन मैंने पहले ऐसा कभी नहीं देखा जब इस सभा पर संसदीय लोकतंत्र के लुटेरों का दो दिन तक अधिकार रहा हो। और हमारे ऐसे प्रधान मंत्री थे, जो यहां अभी उपस्थित हैं, जो और कुछ नहीं सिर्फ झूठे दावेदार थे। उन्हें सभा में नाममात्र का बहुमत भी प्राप्त नहीं था।

महोदय, जब 27 मई को श्री वाजपेयी सभा में विश्वास मत हासिल करने के लिए आये, तब वह जानते थे कि उनका कोई बहुमत नहीं है। जब उन्होंने भाषण दिया, तब वह जानते थे कि वह बहुमत हासिल नहीं कर सकेंगे। लेकिन इन दो दिनों में हमें उपदेश और अनर्गल भाषण सुनने के लिए मजबूर किया गया और हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, इसके संबंध में सभी प्रकार के परामर्श दिये गये।

मेरे अच्छे मित्र, श्री जसवंत सिंह इस बात से परेशान हैं कि आज सभा की इस ओर चुनावोपरांत किए गए गठबंधन की सरकार है। और 16 मई से श्री जसवंत सिंह की पार्टी जो गठबंधन करना चाह रही थी, वह क्या था? यहां तक कि चुनावोपरांत आपकी समता पार्टी में भी फूट पड़ गई। आप प्रत्येक व्यक्ति के पास जाकर समर्थन देने की अपील कर रहे थे। आपने स्वयं स्वीकार किया है कि इस देश में केवल मिली जुली सरकार ही चल सकती है। आज आपका यह रोषपूर्ण रवैया चोट खाये हुए निर्दोष व्यक्ति की तरह है। संसद सदस्यों ने आपको उस स्थान को हटाकर, जिस पर आपको एक मिनट के लिए भी रहने का अधिकार नहीं था, अपने कर्तव्य का निर्वहन किया है।

महोदय, हमें राजनीतिक नैतिकता का भाषण दिया गया, शैतान के मुख से धर्मोपदेश। हमें यह उम्मीद थी कि वर्तमान विपक्ष के नेता को माननीय राष्ट्रपति जी से यह कहना चाहिये था, "आप मुझे अत्यधिक सम्मान दे रहे हैं लेकिन मुझे यह पता लगाना चाहिये कि इस सभा में मुझे बहुमत का समर्थन हासिल होने की कोई संभावना है अथवा नहीं।" इसके लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। लड्डू बांटे गये। मैं आपको 13 दिनों तक सुल्तान या सुल्तान-ए-सुल्ताना बने रहने के लिए अनमने ढंग से नहीं बल्कि हार्दिक बधाई देता हूं। आपने इस देश को धोखे में रखने के लिए संचार माध्यमों का उपयोग किया।

सभापति महोदय, मैं इसे भुला नहीं सकता और इसे सभा में दोहराने की आवश्यकता है।...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये। मैं अपने स्थान पर खड़ा हूं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री ताराचन्द साहू (दुर्ग) : ये इतने वरिष्ठ सदस्य हैं, इनको ऐसी बातें कहना शोभा नहीं देता।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सभापति महोदय : मैं अपने स्थान पर खड़ा हूं। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

श्री बनवारी लाल पुरोहित (नागपुर) : महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है।

सभापति महोदय : जब तक सभा में व्यवस्था कायम नहीं हो जाती तब तक कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं सुना जा सकता।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये, मैं अपने स्थान पर खड़ा हुआ हूं।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : पहले अपने स्थान ग्रहण कीजिये और उस के बाद ही में आपकी बात सुनूंगा।

श्री सोमनाथ चटर्जी : सभापति महोदय, हमें श्री जसवंत सिंह ने राजनैतिक नैतिकता के बारे में बताया। 27 मई को जो हुआ था, मुझे याद दिलाया गया। जब इस सभा में बहस मध्याह्न भोजन के लिए स्थगित हुई थी, तो उस अवधि को एक ऐसे अत्यंत अनैतिक निर्णय लेने के उपयोग किया गया था, जो शायद ही कोई सरकार कर सकती हो। सरकार को इस सदन में उस समय कोई बहुमत प्राप्त नहीं था। एक ऐसी सरकार जिसकी सभा के भीतर एवं बाहर कोई राजनैतिक विश्वसनीयता और प्रमाणिकता नहीं है, सभा से बाहर जाकर मंत्रिमंडल की बैठक आयोजित करती है तथा एक ऐसा अत्यंत विवादास्पद निर्णय लेती है, जिसके बारे में हमें भाषण दिये जाते हैं। इसकी क्या जरूरत थी? आसमान तो नहीं गिर जाता। सरकार को कितना जनादेश प्राप्त था? राष्ट्रपति ने उन्हें सभा के समक्ष पेश होकर उसका विश्वास प्राप्त करने के लिए ही तो कहा था।

आज मेरे परम मित्र श्री जसवंत सिंह जी की शक्ल देखने लायक है! यहां उनसे यह पूछा गया था कि एनरॉन परियोजना के विषय में इतनी जल्दबाजी करने की क्या जरूरत थी। यह आज के **इकनामिक टाईम्स** में छपा है तथा मैं उम्मीद करता हूं कि श्री जसवंत सिंह इस बात से इंकार नहीं करेंगे। उनका कहना है 'सबसे पहली बात तो यह है कि संविधान में विश्वास का मत प्राप्त करने का अनुरोध कर रही सरकार तथा विश्वास का मत प्राप्त कर चुकी सरकार में किसी प्रकार के अंतर' का उल्लेख नहीं किया गया है।

हमें सांवैधानिक विधि पर भाषण दिये जाते हैं, न कि राजनैतिक नैतिकता पर। किसी नैतिकतावादी का ऐसा व्यवहार नहीं होता...।

श्री जसवन्त सिंह : क्या संविधान में इन दोनों में किसी प्रकार के अंतर का उल्लेख किया गया है।...**(व्यवधान)**

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी : राजनैतिक नैतिकता की दृष्टि से इससे फर्क पड़ता है। जसवंत सिंह जी, क्या आप जैसे अत्यंत सम्माननीय व्यक्ति भी इस तरह की गलती करते हैं...**(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : महोदय, हमारा मानना है कि उनके वक्तव्य से हमारे श्रद्धेय प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा द्वारा पेश किये गये विश्वास के प्रस्ताव पर बहस पर असर पड़ेगा। यह बात आज उन्होंने स्वीकार की है: प्रश्न यह था, ' क्या भाजपा 6 दिसम्बर, 1992 को अयोध्या में जो घटित हुआ था, आज उसकी जिम्मेदारी लेने से इंकार करती है? और इसका उत्तर था, ' निस्संदेह, हमने इसके लिए अपनी सीधे तौर पर स्वीकार की है।' अब, यह एक ऐसी पार्टी है, जिसने इस देश में एक पंक्ति ढांचे को गिराये जाने में भूमिका अदा की थी और. ..**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री राजीव प्रताप रूडी (छपरा) : अध्यक्ष जी, कश्मीर में जो मंदिर ढाये गये उनको भी तो चर्चा में ये लोग लाएं।...**(व्यवधान)** क्या ये सवालात नहीं उठाए जाने चाहिए?...**(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : अरे बाबा, साधू लोग खड़े हो गये।

[अनुवाद]

आप ही ने इस देश की धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत की नींव को क्षति पहुंचाई है और ध्वस्त किया है और आज यहां किसी को मनाने की कोशिश के प्रयोजन से, आप प्रायश्चित करने की मुद्रा बना रहे हैं। आपका यही रवैया है...**(व्यवधान)** महोदय, मुझे उनकी लालसा का पता है। सत्ता हथियाने की उनकी यह लालसा केवल तेरह दिनों में ही समाप्त हो गई...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : नहीं, कृपया ऐसा मत कीजिए। वह आपकी बात नहीं मान रहे हैं। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : इस सभा में शिष्टाचार कायम रखने का कोई नियम है। कृपया बैठ जाइये। वह आपकी बात नहीं मान रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी : सभापति महोदय, मेरे परम मित्र श्री जसवंत सिंह ने हमें बताया था—और कई बार सभा के बाहर वे हमसे बहुत ज्यादा मतभेद रखते हैं तथा मुझे यह ज्ञात नहीं है कि जब वे सभा के अंदर होते हैं, तो उन्हें क्या हो जाता है- कि यहां हमारा कोई पक्का गठजोड़ नहीं हैं। वह इस बात से तो बहुत ज्यादा चिन्तित हैं कि यहां हमारा कोई पक्का गठजोड़ नहीं है। अतः, हमें पांच वर्ष के लिए यह अस्थाई गठजोड़ कर लेना चाहिए। कम-से-कम, मैं तो यहां उनके साथ अपनी संगति बनाये रखने को तैयार हूं। मेरे करीब से करीब आ जायेंगे। मुझे यह विदित है लेकिन वहां राजनैतिक सर्पों के साथ रहने की बजाय यहीं रहना बेहतर है। वह यह जानना चाहते हैं कि यूरिया घोटाले के बारे में हमारा क्या रूख होगा। हम यह कह चुके हैं कि यह सरकार इस संबंध में प्रभावपूर्ण ढंग से कार्रवाई करेगी तथा हमारे प्रधान मंत्री के सपाट वक्तव्य के लिए, मुझे उन्हें बधाई देनी ही चाहिए। उन्होंने कहा है कि वह वर्तमान सरकार के भविष्य को दाव पर लगा सकते हैं, लेकिन वह भ्रष्टाचार एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर समझौता नहीं करेंगे।...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय हमें बताया गया था कि भाजपा एक अत्यंत सहचारी दल है। अब, यहां क्या हो रहा है? ऐसा मैं नहीं कहता बल्कि सारा विश्व कह रहा है। मैं तो सत्तर अथवा पचहत्तर अथवा अस्सी वर्ष की आयु के वृद्ध मंत्री, श्री आत्माराम पटेल जिन्हें कि एक बैठक में पीट दिया गया था के प्रति सहानुभूति ही प्रकट कर सकता हूं इस सप्ताह **फ्रंटलाइन** में एक चित्र छपा है, जिसमें उन्हें पट्टियों में बंधा हुआ दिखाया गया है।

मुझे यह विदित नहीं है कि प्रति सहानुभूति प्रकट करने अथवा कम-से-कम उनके नंगे शरीर को ढकने के लिए उन्हें कपड़ा देने के लिए कोई नेता वहां गया है अथवा नहीं...**(व्यवधान)** अब, हमें यह बताया जाता है तथा हमें भाषण अथवा राजनैतिक धर्मोपदेश दिये जाते हैं। महोदय यदि हम कोई सरकार बनाना चाहते हैं, तो हम इस देश में गठबंधन वाली सरकार बनाये जाने को नहीं टाल सकते। क्या कल वे चुनाव कराना चाहते हैं?...**(व्यवधान)** उन्हें ऐसा कहने दीजिए। उन्हें यह कहने दीजिए कि वे इस देश की जनता पर कल एक और चुनाव थोपना चाहते हैं।...**(व्यवधान)** उनमें ऐसा कहने का राजनैतिक साहस होना चाहिए। आप केवल इस तरफ से लोगों को आमंत्रित कर रहे हैं, जैसे कि आपको ही ऐसा करने और देश पर शासन करने का अदेय अधिकार प्राप्त है, चाहे इस सभा में आपकी संख्या 10 अथवा 20 अथवा 194 ही क्यों न हो और चाहे आपको प्राप्त मतों का प्रतिशत 20 अथवा 23 ही क्यों न हो, जैसे यह कोई देवी आदेश हो। इतना ही काफी है। इसीलिए मेरा कहना है कि आपसे छुटकारा पाने का दिन 28 मई आ ही गया था तथा एक जून को जब हमारे सम्माननीय प्रधान मंत्री ने शपथ-ग्रहण की थी तथा वर्तमान सरकार सत्तारूढ़ हुई थी, उसी दिन आपसे मुक्ति पाने का यह दिन फलवान हुआ। उस दिन इससे पहले की गई एक महान गलती ठीक हुई थी।

महोदय, मैं श्री देवेगौड़ा को सत्ता का कार्यभार सम्भालने के लिए बधाई देना चाहता हूं। प्रधान मंत्री महोदय इस देश की जनता, धर्मनिरपेक्ष लोग, दलित, अल्पसंख्यक, कामगार, किसान, पिछड़े लोग एवं इस देश की आम जनता आपकी तरफ निगाह लगाये हुए हैं, आपकी तरफ आशाभरी निगाहों से देख रहे हैं।...**(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : हिन्दुओं के बारे में क्या स्थिति है?... **(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : ठीक है, हिन्दू भी, सिख भी और प्रत्येक व्यक्ति अब इस देश का प्रत्येक नागरिक इस सरकार और श्री देवेगौड़ा की ओर देख रहा है। मैं प्रधान मंत्री से अनुरोध करता हूं और महोदय मुझे विश्वास है कि वे याद रखेंगे। महोदय, प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए प्रारम्भ में उन्होंने जो कुछ कहा था, उससे भी मैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूं। उससे उनकी विनम्रता उनकी दृढ़ता और इस देश के लोगों के लिए उनकी चिन्ता का पता लगता है। मुझे विश्वास है कि अपने महान प्रयास में, आने वाले पांच वर्षों में उन्हें इस सदन के सभी प्रबुद्ध वर्गों का समर्थन मिलेगा। महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से अनुरोध करता हूं कि वह सदा यह याद रखें कि उनका कर्तव्य न केवल एक गरीब समर्थक मानवीय पारदर्शन और प्रगतिशील प्रशासन प्रदान करने का है बल्कि एक प्रगतिशील और आर्थिक रूप से सुदृढ़ भारत का निर्माण करने का भी है। उनका बहुत बड़ा और अपरिहार्य कर्तव्य है, इस देश की राजनैतिक व्यवस्था से साम्प्रदायिकता और कट्टरपंथता के नासूर समाप्त करना। आज, हम सबको जो धर्मनिरपेक्षता में विश्वास करते हैं, सबसे बुरी प्रकार की कट्टरवादिता और साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ने का संकल्प करना चाहिए। यह कि हम तब तक आराम से नहीं बैठेंगे जब तक कि राजनैतिक व्यवस्था के फांसीवाद पूर्णतया समाप्त नहीं हो जाता। महोदय, देश की एकता और अखण्डता और सर्वाधिक महत्वपूर्ण देश की जनता को उन लोगों पर नहीं छोड़ा जा सकता जिनका एकमात्र उद्देश्य देश की एकता को विभाजित करना प्रतीत होता है और जिनका एकमात्र लक्ष्य धर्म के आधार पर देश और देश की जनता को विभाजित करना है। हम बजरंग दल और विश्व हिन्दु परिषद अथवा आर.एस.एस. के साथ इक्कीसवीं सदी में जाने की आशा नहीं कर सकते। वे इस देश को नेतृत्व प्रदान नहीं कर सकते। महोदय, इस देश में एक प्रबुद्ध, जनवादी, मानववादी सरकार का स्थान रूढ़िवाद नहीं ले सकता। मुझे इस बात से बहुत प्रसन्नता है कि एक अल्पमत की चाल सफल नहीं हुई है। भाजपा और टूटी हुई समता पार्टी इस सदन में यहां तक कि न्यूनतम समर्थन आधार भी प्राप्त नहीं कर सकी। मुझे प्रसन्नता है कि इस देश में धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील ताकतें संयुक्त मोर्चे की सरकार बनाने के लिए एक जुट हुई हैं।

अब यही इस देश के लाखों लोगों की आशादीप है। संयुक्त मोर्चे ने एक न्यूनतम सांझा कार्यक्रम बनाया है। श्री जसवंत सिंह यह पूछ रहे थे, कि क्या यह एक सांझा न्यूनतम कार्यक्रम होगा अथवा न्यूनतम सांझा कार्यक्रम होगा।

एक माननीय सदस्य : अथवा सांझा न्यूनतम अन्तर्विरोध?

श्री सोमनाथ चटर्जी : अथवा यहां तक कि 'अन्तर्विरोध' भी यदि इसमें आप संतुष्ट होते हैं तो। उस कार्यक्रम के आधार पर, इस देश को आगे ले जाया जायेगा। हम सब उस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए एकजुट हैं। इस कार्यक्रम को इस सदन के सबसे बड़े भाग तथा देश के सर्वाधिक लोगों का समर्थन प्राप्त है। आप जितना प्रयास करें, आप सफल नहीं होंगे। आप हमेशा लोगों को बेवकूफ नहीं बना सकते।

महोदय, मेरे विचार से यही उचित समय है कि धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील ताकतों को एक जुट हो जाना चाहिए; ऐसी ही समय देश विकास कर सकता है; हम आर्थिक रूप से विकास कर सकते हैं और सामाजिक न्याय प्रदान कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति अथवा विकास इस मुख्यधारा से बाहर रहना चाहता है अथवा इस महान प्रयास से बाहर रहना चाहता है तो वे अपनी कीमत पर ऐसा कर सकते हैं। इस

देश के गरीब लोगों, पिछड़े लोगों, कामगारों, बेरोजगार युवकों और दलितों ने काफी लम्बे समय तक इंतजार किया है, वे और अधिक इंतजार नहीं करेंगे।

प्रधान मंत्री महोदय, इसीलिए मैं आपसे यह अनुरोध करता हूं कि आप यह देखें कि उनके हितों की रक्षा की जाये और उनकी समस्याओं का समाधान किया जाए...**(व्यवधान)** हमारी सर्वाधिक वरीयता उन लोगों की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान करना होगा जिनसे आप सब अवगत है...**(व्यवधान)** इस सरकार की मुख्य उद्देश्य **मंदिर** बनाना अथवा **मस्जिद** गिराना अथवा भाजपा की किस्म के हिन्दुत्व का प्रचार नहीं हो सकता...**(व्यवधान)** आज, मैं एक तरह से प्रसन्न हूं; श्रीमती सुषमा स्वराज जी, ने कम से कम एक अच्छा कार्य किया है— लोग आपके कार्य-निष्पादन को देख रहे हैं और लोग इस देश को आगे ले जाने के आपके संकल्प को देख रहे हैं। आज हम एकजुट हैं, धर्मनिरपेक्ष ताकतें एकजुट हैं, प्रगतिशील ताकतें एक जुट हैं; गरीबों के पक्षधर एकजुट हैं। जो कामगारों किसानों, आज आदमियों तथा इस देश में अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, वे इस देश में एक नई आर्थिक व्यवस्था और एक नई सामाजिक व्यवस्था लाने के लिए एकजुट हैं।

प्रधान मंत्री महोदय, हम आपको पूरा समर्थन देते हैं और हमारी शुभकामनाएं आपके साथ है। मैं आपको यह आश्वासन देता हूं कि जब तक यह सरकार हमारे साझा कार्यक्रम में अन्तर्विष्ट जनादेश को क्रियान्वित करती रहेगी, तब तक आपको न केवल हमारा समर्थन मिलेगा बल्कि आपको देश का भी समर्थन मिलता रहेगा। सभापति महोदय, श्री जसवंत सिंह...**(व्यवधान)** हां, क्योंकि आज वे बहुत अनजसवंत जसवंत सिंह थे। श्री जसवंत सिंह को यह आशा थी कि श्री चिदम्बरम को श्री मुरासोली मारन के विरूद्ध करके, वे अपने उद्देश्य को सफल हो जायेंगे। लेकिन मैंने भोजनावकाश के दौरान यह पाया कि वे एक दूसरे के निकट आ गये हैं, एक दूसरे से गले मिल रहे हैं आपके प्रयास असफल रहे हैं, जैसे कि देश को विभाजित करने के आपके प्रयास असफल रहे हैं, जैसे कि अपने आपके सत्ता प्राप्त करने के प्रयास असफल रहे हैं, लोगों ने आपको सत्ता में नहीं आने दिया। आपका भविष्य अंधकार में हैं। कृपया इसे महसूस कीजिए।

महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री से देश का नेतृत्व करने का अनुरोध करता हूं।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव (मधेपुरा) : सभापति जी, मैं इस विश्वास के मत के हक में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

श्री दाऊ दयाल जोशी (कोटा) : मंत्री नही बने तब भी?

श्री शरद यादव : हां। आप तो सरकार गंवा चुके तब बोल रहे हैं। हम तो मंत्री नहीं बनाए गए, उसके बाद बाले रहे हैं।

सभापति जी, आज जो विश्वास का मत है, मैं नही समझता कि सरकार ने इन 12 दिनों में कोई ऐसे काम किये है कि जिनको विस्तार से बताने का मुझे मौका मिलेगा। विरोधी दल के माननीय नेता पहले सदन में प्रधान मंत्री थे। उन्होंने जो विश्वास का मत रखा था, उस समय से बहस जारी है और उस बहस को एक अंजाम तक ले जाना चाहिए।

मैं शुरू में ही निवेदन करना चाहता हूं कि आज जिस तरह के अंतर्विरोधों को माननीय जसवन्त सिंह जी ने चित्रित किया है, उसके पहले अटल जी ने बहुत खूबसूरत तरीके से उनको रखा था। लेकिन एक बात स्मरण रखनी चाहिए कि 1989 में जो सरकार बनी थी, वह राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार थी। वाम मोर्चा का समर्थन उसको हासिल था। भारतीय जनता पार्टी का भी समर्थन हमको हासिल था।

एक माननीय सदस्य : तब पार्टी सांप्रदायिक थोड़ी थी।

श्री शरद यादव : मैं उस पर आ रहा हूं। सांप्रदायिकता पर भी मैं जरूर बात करूंगा लेकिन आप और हम सच्चाई के साथ विचार करे, ऐसी बात कहूंगा।

भारतीय जनता पार्टी का समर्थन भी हमको हासिल था। उसके पहले 1977 में आज की भारतीय जनता पार्टी और हम सब लोग जनता पार्टी में थे, एक पार्टी बनायी थी। यानी इस राष्ट्रीय मोर्चा और वाम मोर्चा में तेलुगूदेशम पार्टी थी, डीएमके थी, असम गण परिषद् थी, जनता दल था। अटल जी ने कहा था कि

'कहीं की ईट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा।'

ये कुनबा जब आपने कहा तब नहीं जुड़ा था। आज से छः वर्ष पहले 1989 में जुड़ा था। 1977 में भी जुड़ा था। यह कहे कि यह देश ही भानुमती का कुनबा है तो गलत नहीं होगा। हमारे यहां कहावत है कि – 'जस राजा तस प्रजा।' यानी जैसा राजा होगा, वैसी ही प्रजा होगी। हिन्दुस्तान में जब से लोकशाही आई है, उसके लिए महात्मा जी ने कहा है कि आने वाला लोकत्रंत और लोकशाही का रूप पहले जस राजा तस प्रजा था, अब इस देश में आजादी के बाद जस प्रजा तस राजा, तस पार्टी, तस सरकार होगा। आज राष्ट्रीय मोर्चा का नाम संयुक्त मोर्चा हो गया है। अन्तर इतना पड़ा है कि भाजपा के साथी उस समय हमारे साथ थे जिनकी संख्या करीब 80 थी और कांग्रेस पार्टी हमें समर्थन दे रही है। मैं भारतीय जनता पार्टी के मित्रों से पुछना चाहता हूं कि ये समीकरण बदले क्यों? यह जो 50 वर्ष की संस्कृति थी, तमदन था, ये बदल क्यों गए? कांग्रेस और नांन कांग्रेस जब चला। आज यह रूप यह रंग इस तरह बदला क्यों है। यह बदलना था।

अपराह्न 2.55 बजे

(श्रीमती गीता मुखर्जी पीठासीन हुई)

सभापति महोदया, हिंदुस्तान में लोकशाही के चलते आजादी की लड़ाई के दौर में भी हिंदु लड़ाई चली हुई थी, जिसे अभी मेरे माननीय

साथी श्री अन्तुले जी सांप्रदायिकता बोल रहे थे। वह गहराई की नहीं सतह की बात कह रहे थे। सांप्रदायिकता की लड़ाई हिन्दू और मुसलमान की नहीं, हजारों वर्ष से इस मुल्क में लड़ाई हिन्दू बनाम हिन्दू है। हिंदू बनाम हिंदू जब मैं कहता हूं तो एक तरफ हिंदुस्तान में पिछले तीन हजार वर्ष से उदार हिंदूवाद और कट्टर हिंदूवाद में संघर्ष जारी है। इस बार यह संघर्ष आजादी के बाद 50 वर्ष में पहली बार उदार हिंदूवादियों में कट्टर हिंदूवादियों के रूप में और शक्ल में आज आमने-सामने खड़ा है। इस लड़ाई की बारीकी में अटल जी चले गये हैं, मैं उनके भाषण को पूरा का पूरा बाकी सूना या नहीं सूना, उनको जरूर सुनाना है। क्योंकि अपना देश गजब है, अद्‌भूत है और इस अद्‌भूत है और इस अद्‌भूत देश में अटल जी भी अद्‌भूत आदमी हैं। अटल जी जब बात करते हैं तो हिंदुस्तान की धरती की जो मिट्टी है, उसमें हम सब लोग जीते हैं, तो इधर भी उधर भी ये भी होना चाहिए लेकिन हमारे चेहरे नहीं पता चलते, हमारी शक्ल ही नहीं पता चलती, असली क्या है। तो ये जो आज दूसरे आमने-सामने खड़े हैं, ये क्यों हुआ। हकीकत में इसके होने के पीछे 90 के इतिहास को हमें याद करना पड़ेगा। हिंदुस्तान.में हिंदू और हिंदू के बीच का जो उदारपंथ और कट्टरपंथ, मैं भाजपा के सभी मित्रों से कहना चाहता हूं हिंदुस्तान में जब उदारबाद पैदा हुआ है, जाति का बंधन और कट्टरवाद खत्म हुआ है, कमजोर हुआ है तो हिंदुस्तान मजबूत हुआ है। उपनिषदकाल में जाति व्यवस्था ढीली हुई है तो उसी समय जोरों से लेकर नौ का आविष्कार हुआ है। आर्यभट्ट उसी वक्त और काल के हैं। ये जो संगीत है, जिसके सात स्वर हैं।

डा. मुरली मनोहर जोशी : अध्यक्ष महोदया, यह कहते हैं कि आर्यभट्ट उपनिषदकाल में हुए है। जबकि आर्यभट्ट तो पांचवी शताब्दी के हैं। उपनिषदकाल बहुत पहले का है। कृपया करके इस बार में इतिहास के तथ्यों के बारे में मुझे बता दें।

श्री शरद यादव : मैं आपसे विनती करना चाहता है कि आपके काल खंड की सब जानकारियां हम अपने इतिहास के बारे में जाति व्यवस्था के बारे में भी मैं आपसे सवाल करूंगा।

डा. मुरली मनोहर जोशी : आपके जो तथ्य है, आप आर्यभट्ट के काल को, जो विज्ञान सम्मत है, इतिहास सम्मत है, पांचवी शताब्दी का है, उसमें आप कोई घपला न करे, बाकी प्रश्न होते रहेंगे। ...**(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, मेरा निवेदन यह है कि जोशी जी के ख्याल के लिए मैं इतना कहता हूं कि जब हिंदुस्तान में जो भारतीय समाज, बहुसंख्यक समाज है, हिंदु समाज उस समाज में जब उदारपंथ पैदा हुआ है, तब गुप्तकाल पैदा हुआ है, तब मौर्यकाल पैदा हुआ है। जब हिंदु समाज समरस होता है, उदार होता है। एक बार छत्रपति शिवाजी के जमाने में उदार हुआ था तो महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर के स्वर बजे थे।

अपराह्न 3.00 बजे

लेकिन उसी समय यह भी तय हो गया ...**(व्यवधान)**

श्री प्रमोद महाजन : सभापति जी, भारतीय इतिहास और संस्कृति के बारे में ये चाहे कुछ भी बोले लेकिन 16वीं शताब्दी के शिवाजी महाराज और सातवीं शताब्दी के संत ज्ञानेश्वर में सैकड़ो साल का अंतर है। सैकड़ो सालों का यहां जो प्रवास चल रहा है, अगर उसे आप कुछ कम करें तो वह ज्यादा ठीक होगा ...**(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : हो सकता है कि मेरी गणना में कुछ गलती हो, आप उसे ठीक कर दीजिये ...**(व्यवधान)**

श्री प्रमोद महाजन : आपकी गणना में 900 साल का फर्क है, ज्यादा नहीं।

श्री शरद यादव : मैंने 300 वर्ष पहले कहा है।

डा. मुरली मनोहर जोशी : आर्यभट्ट और उपनिषद के काल में हजारों साल का अंतर है। ऐसा लगता है कि आपका काल बोध कुछ विकृत हो गया है। कृपया अपने काल बोध की विकृति को ठीक करें और भारत के इतिहास काल बोध को विकृत मत कीजिए ...**(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : मैं जो बात कह रहा हूं, उसे सुनिये।

श्री प्रमोद महाजन : काल के आधार पर आप देश को गुमराह करते रहेंगे तो उससे कुछ नहीं मिलेगा।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : माननीय जोशीजी, आप कृपया इस विषय पर बाद में बातचीत कर लोजिएगा आज चर्चा होने दीजिए?

डा. मुरली मनोहर जोशी : मैं इसके लिए तैयार हूं महोदया लेकिन कृपया उन्हें इस देश की तारीखों और इतिहास को तोड़-मरोड़ कर बताने से रोकिए। किसी को भी तारीख बदलने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। वह ज्ञानेश्वर को शिवाजी से और आर्यभट्ट को उपनिषद् से जोड़ रहे हैं और यह उल्टा है। लोग हसेंगे कि इस सम्माननीय सभा में इस तरह की बाते कही जाती हैं।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : मेरी विनती पर लगता है कि आप ध्यान नहीं देना चाहते है और मुझे उससे हटाना चाहते हैं ... **(व्यवधान)** यदि इतिहास के काल में कोई गलती है तो उसे सुधार लीजिये क्योंकि मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूं। यदि उसमें कहीं सुधार की जरूरत हो तो आप कर लीजिये, मुझे कोई एतराज नहीं है। मैं सिर्फ आपसे विनती कर रहा हूं ...**(व्यवधान)**

प्रो. रासा सिंह रावत : आप जो चाहें कहें, लेकिन तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर न कहें ...**(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में जब उदारपंथ देखने को मिला, यानी जाति-व्यवस्था में कट्टरपंथ की मृत्यु हुई है, तब हिन्दुस्तान का विकास हुआ है, हिन्दुस्तान इतिहास की मजबूत चीज बना है।

आपकी और हमारी संगत का जहां तक सवाल है, आपके और हमारे बीच के फासले में, उदारपंथ और कट्टरपंथ के बीच 5 हजार साल, 3 हजार साल या 2 हजार साल का अंतर क्यों न हो ...**(व्यवधान)**

सभापति जी, इनकी पाड़ा में समझ सकता हूं, क्योंकि मैंने इनकी दुखती रग पर हाथ रख दिया है। आप मुझे सुनिये। मैंने आपके हर आदमी को सुना है। मैं आपसे विनती कर रहा हूं कि आपका और हमारा फासला कैसे बढ़ा है। आपने कहा कि हम लोग क्यों इकट्ठे हुए हैं मोटी सी बात है कि जो उदार हिन्दूवाद या उदारपंथ है, उस उदारपंथ का ही यह जमावड़ा है ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सभापति महोदय : माननीय सदस्यों, कृपया ऐसा मत कीजिए। वह दबाव में नहीं आए हैं

(व्यवधान)

[अनुवाद]

सभापति महोदय : आपका बार-बार खड़े होना कार्यवाही में विघ्न उत्पन्न करेगा।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : सभापति जी, मैं इस कट्टरपंथ के चेहरे को यदि शब्दों में व्यक्त करूं तो मेरे मित्रों को बुरा नहीं लगना चाहिए। ...**(व्यवधान)** यदि आपको बुरा लगेगा तो मैं अपनी बात को दुरूस्त कर लूंगा। इस कट्टरपंथ का इस लोक सभा में प्रधान मंत्री जो जब यहां आए थे तो उन्होंने बहुत बढ़िया जिक्र किया। वे जवाहर लाल जी का जिक्र कर पाए थे। यह देश उदारवादी महात्मा गांधी के आंदोलन व उदारवाद से आजाद हुआ। उनके उदारवादी दृष्टिकोण से हिन्दुस्तान को आजादी हासिल हुई और उसके बाद ऐसे-ऐसे शानदार लोग इस सदन में रहे। सरदार वल्लभ भाई पटेल इस सदन के गृह मंत्री थे, आचार्य कृपलानी, डा. राम मनोहर लोहिया जैसे लोग इस सदन में रहे। लेकिन आज सदन में ऐसी हालत है। ... **(व्यवधान)** ये मेरा सारा समय ऐसे ही पूरा कर रहे हैं, सात घण्टे बर्बाद कर रहे हैं तो मुझे और समय मिलना चाहिए। मैं आपकी छेड़खानी से परेशान नहीं हूं। ... **(व्यवधान)**

सभापति जी, इस कट्टरपंथ की शक्ल इस तरह बन गई कि यहां पर बड़े लोग थे। मैंने कभी नहीं कहा कि हम उनकी बराबरी के हैं। हम तो छोटे आदमी हैं, गरीब के घर में पैदा हुए हैं। लेकिन एक बात मैं कहना चाहता हूं कि जिस सदन में ऐसे बड़े-बड़े लोग थे, जो सदन हिन्दुस्तान की गरीबी, भूख, बेकारी, लाचारी, बेबसी, अन्तर्विरोध, बीमारियों की बहस की जगह थी, लेकिन सदन में "तंबू में बंबू" गड़ गया, "तंबू में बंबू" लगा दिया अपने ने। इस सदन में "हाथी मेरा साथी" आ गया। ... **(व्यवधान)** इस सदन में कट्टरपंथ और उदारपंथ की लड़ाई की शक्ल को यदि ठीक से पहचानना है तो साधुओं और संतो का जितना बड़ा जमावड़ा पिछले छः वर्षों में तैयार हुआ है - चिमटा बाबा, घंटा बाबा, बाल्टी बाबा, यानी यह सदन "कीर्तन सदन" हो गया है। ... **(व्यवधान)** संविधान में हिन्दुस्तान में लोकहित के बारे में इस सदन को बनाया था। बेकारी, भूख, लाचारी, बेबसी पर बहस के लिए यह सदन बनाया गया था। ... **(व्यवधान)**

श्री विनय कटियार (फैजाबाद) : जब तीन लाख लोग कश्मीर से निकाले जाने लगे तभी जाकर चिमटा बाबा, शंख बाबा, गदहा बाबा ये आ गए। और इसलिए आ गए ताकि देश की सीमाएं मजबूत रहें और हमारे देश के अंदर सबका सम्मान हो। आप तो कम से कम विचार करें, आप उस हिसाब से बोलें। ... **(व्यवधान)**

श्री गिरधारी लाल भार्गव : आप सब बाबाओं के नाम बोल गए, लेकिन आप "मौनी बाबा" का जिक्र भी तो करो।

प्रो. रासासिंह रावत : आप संतों के बारे में अपमानजनक टिप्पणियां कर रहे हैं, यह अच्छी बात नहीं है। ... **(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, अब ये जय बजरंग बली खड़े हो गए। ये बजरंग दल के अध्यक्ष हैं। ... **(व्यवधान)**

श्री विनय कटियार : मैंने तो केवल आपको याद कराया है। ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सभापति महोदय : माननीय सदस्यगण कृपया उन्हें परेशान नहीं करिए। श्री अटल बिहारी वाजपेयी को बोलना है और यदि आवश्यकता हुई तो वे इन प्रश्नों का उत्तर देंगे।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया ऐसा नहीं करिए।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : नहीं, कृपया बैठ जाइए। शरद जी कृपया अपना वक्तव्य जारी रखिए और दबाव में मत आइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि हालत यह हो गई है कि पहले भी इस सदन में एक बार विश्वास का मत आया था। उसी तरह से आज भी विश्वास का

मत बहस के लिए यहां प्रस्तुत किया गया है। बहस वही है। बहस का अहम मुद्दा है, जो हमारी विविधता है, हमारे देश में कई भाषाएं हैं, कई धर्म हैं, कई मजहब हैं, कई तरह की वेषभूषाएं है, कई पंथ है। हिन्दू धर्म अकेला ऐसा धर्म नहीं है, बल्कि हर धर्म और हर मजहब में अन्तर्विरोध है। यह अन्तर्विरोध है संगति का। लोकशाही ने, लोकतंत्र ने एक ऐसा बड़ा मौका दिया है, जिसके कारण एकता में अनेकता है और अनेकता में एकता है। यह जो तंत्र है, यह टूटा कब से। यानी भारतीय जनता पार्टी को, 50 वर्ष से तो हम देख रहे हैं, जब से हमने होश संभाला है, तब से युद्ध करते रहे थे कांग्रेस के खिलाफ, लेकिन महोदया, यह सवाल तब खड़ा हुआ, जब 1990 में अदालत का आदेश था कि अयोध्या में बाबरी मस्जिद, राम चबूतरा,.. ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये, मैं आपको अनुमति नहीं दे रही हूं।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये। कुछ भी कार्यवाही वृत्तांत में शामिल नहीं किया जायेगा।

(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, 1990 में जब वी.पी. सिंह प्रधान मंत्री थे, मुलायम सिंह जी, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री थे, तब दिनांक 7 अगस्त, 1990 को सामाजिक परिवर्तन का कार्यक्रम शुरू हुआ जो संविधान सम्मत था और उसके बाद हिन्दुस्तान में यह परिवर्तन होता, हलचल होती, लेकिन उस हलचल की प्रक्रिया का लाभ लेने के लिए आदलत का जो आदेश था, अयोध्या में बाबरी मस्जिद, राम चबूतरा, ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सभापति महोदय : यह सब क्या है? आप हर समय उछल-कूद क्यों करते रहते हैं? मैं आपको अनुमति नहीं दे रही हूं।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : जो कुछ भी कहना है, वह आपके वक्ता कहेंगे, लेकिन कृपया ऐसा मत कीजिये।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : उन्होंने कुछ भी असंसदीय नहीं कहा।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : आपके प्रवक्ता वहां मौजूद हैं, वे बोलेंगे। आप ऐसा नहीं कर सकते।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अपनी इच्छा से किसी के भी भाषण में व्यवधान नहीं डाल सकते।

(व्यवधान)*

सभापति महोदय : जी नहीं, इसे कार्यवाही-वृत्तांत में शामिल नहीं किया जायेगा।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, अदालत का आदेश था, संविधान सम्मत आदेश था। बाबरी मस्जिद, राम चबूतरा, संकट मोचन का मंदिर, सीता रसोई व काब्रिस्तान, यह काम्प्लैक्स था। इसकी एक भी ईंट न बढ़नी चाहिए न घटनी चाहिए। सवाल मंदिर मस्जिद का नहीं था। न यह मंदिर के लिए निकले थे, न यह मस्जिद तोड़ने गये थे। ये हिन्दुस्तान के कट्टर हिन्दूवाद को जागृत करने गये थे। हजारों वर्ष की बीमारी हिन्दुस्तान के कट्टर हिन्दूवाद को जागृत करने गये थे। हजारों वर्ष की बीमारी संग्राम लड़कर, जो लोगों ने दिया था, उस आजादी की शक्ल को यदि ठोस शक्ल में देखने हैं तो हमारा संविधान है। अकेले बाबरी मस्जिद और काब्रिस्तान नहीं टूटा। उस काम्प्लैक्स में हिन्दू का ठौर-ठिकाना टूटा। वह चुपचाप टूटा और इन्होंने साफ-साफ कहा कि कानून के लिहाज से इसका कोई इलाज नहीं हो सकता। ये ईश्वर की अराधना की बात है। यह विश्वास का मत ले रहे थे। हम सब लोग इसलिए इकट्ठे हुए हैं कि ये संविधान को भी मानने को तैयार नहीं हैं। इन्होंने ऐसा सवाल छोड़ा है। ... **(व्यवधान)** इन्होंने इसी सदन में नहीं कई बार कहा कि ईश्वर की भावना, राम जो है, वह भावना का सवाल है और भावना के सवाल को संविधान से हल नहीं किया जा सकता। इसलिए ये चुनाव में इस सवाल को लेकर गये। इससे इनका कहीं भी मत नहीं बढ़ा। ... **(व्यवधान)** इनका नम्बर ज्यादा है। ... **(व्यवधान)**

श्री विनय कटियार : आप 60 से 45 हो गये हैं। आप लोग घटे हैं या बढ़े हैं?

[अनुवाद]

सभापति महोदय : माननीय सदस्य, अगर आप इसी प्रकार का व्यवहार करते रहेंगे, तो मुझे आपका नाम बुलाना पड़ेगा कृपया ऐसा मत कीजिए।

श्री शरद जी, आपका समय पूरा हो गया है। कृपया अपना भाषण समाप्त कीजिये।

* कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

* कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, आप मेरी बात सुनिये। ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आप ऐसा मत कीजिये

(व्यवधान)

[अनुवाद]

मैं बोल रही हूं। कृपया बैठ जाइये। आप ऐसा नहीं कर सकते।

श्री शरद यादवजी, कृपया हस्तक्षेप करने वालों की बात मत सुनिए। आप अपना भाषण जारी रखिए और उसे पूरा कीजिये।

[हिन्दी]

श्री विनय कटियार : सभापति महोदया, यहां पर लगातार चर्चा हो रही है। राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद, ये बहुत विवादस्पद प्रश्न है। पिछले पांच साल से लगातार इसी सदन में यह चर्चा चलती रही है। ... **(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, यह तो आपकी जिम्मेदारी को वजह से सुन सके नहीं तो यह तो सुनने ही नहीं दे रहे! मेरी विनती है कि ... **(व्यवधान)**

श्री विनय कटियार : यहां हर बार यह विषय आता है। हमें भी कभी मौका दीजिये। ... **(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : हिन्दुस्तान में जो विश्वास है। ... **(व्यवधान)**

श्री विनय कटियार : सभापति महोदया, इस इशु पर कभी हम लोगों को बोलने का मौका नहीं दिया गया। आप हम लोगों को भी कुछ कहने का मौका दीजिये।... **(व्यवधान)** यह सदन है। ...**(व्यवधान)** यहां पर इसपर सकरात्मक चर्चा हो रही है। ... **(व्यवधान)**

सभापति महोदय : ये क्या है? क्या आप सदन का कानून जानते हैं?

(व्यवधान)

[अनुवाद]

सभापति महोदय : सचेतक, द्वारा नाम दिए गए हैं और पीठासीन अध्यक्ष कोई भी हो, उसे उनके अनुसार चलना है।

शरद जी, आपका समय पूरा हो गया है। कृपया अपना भाषण जल्दी समाप्त लीजिए।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : सभापति महोदया, मैं तो बोल ही नहीं सका। सारा समय तो इन्होंने ले लिया। इंट्रप्शन में इतना समय चला गया है। मैं आपसे इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो लड़ाई है, वह कट्टर हिन्दू पंथ और उदार हिन्दू पंथ की है। आज हम जो इस तरह से इकट्ठे हुए हैं, उसके पीछे हम सभी उदार वादी हिन्दू एक तरफ हुए हैं। यें उदारवादी हिन्दुओं की परम्परायें भी हजारों वर्ष पुरानी हैं। ये लड़ाई का फैसला नहीं हुआ है। विश्वास का तो आज पूरी तरह से मुकम्मल समर्थन हो जायेगा लेकिन यह जंग जारी रहेगी। अटल जी ने ठीक कहा था यह जंग अविश्वास और विश्वास की नहीं बल्कि हजारों वर्ष से चली है और यह जंग आगे भी चलेगी। हिन्दुस्तान में इसका एक बार फैसला होना है।

हिन्दुस्तान में कट्टर हिन्दूवाद का सिलसिला चलेगा क्योंकि कल भी इस देश में फैसले की शक्ल में लड़ाई नहीं हुई। शक्ल में फैसला होना चाहिए। मैं भारतीय जनता पार्टी के मित्रों से कहना चाहता हूं, इन्होंने भी सब पार्टियों को जोड़कर संख्या बढ़ाई थी। समता पार्टी, अकाली दल, इन सबका समर्थन लेकर कहा था कि हमने अपने बहुत से प्रोग्राम पीछे किए। हमने भी मिनिमम प्रोग्राम बनाया। लेकिन ये एक चेहरा नहीं रखते। ये जब यहां बोलते हैं तो इनका उदारपंथ का चेहरा है। जब मद्रास में बोलते हैं तो कुछ और चेहरा होता है। ...**(व्यवधान)**

प्रो. रासा सिंह रावत : बिहार में जातिवाद किया। ...**(व्यवधान)**

श्री शरद यादव : यह जो उदारपंथ और कट्टरपंथ की लड़ाई है, इस लड़ाई के चलते इसे साम्प्रदायिक किया गया है, हिन्दू-मुसलमान बनाया गया है। हम उदारवादी हिन्दुओं की तरफ से कहना चाहते हैं कि यह लड़ाई, जो संख्या और बहुमत की है, हिन्दू बनाम हिन्दू की, उदारपंथ और कट्टरपंथ की लड़ाई फैसले की शक्ल में पहुंचनी चाहिए।...**(व्यवधान)** मैं भारतीय जनता पार्टी के मित्रों से इतना ही कहना चाहता हूं कि सच्चाई के चेहरे में सामने आकर संग्राम करे, लुक-छिपकर संग्राम करने से फायदा नहीं है।

जार्ज फर्नान्डीज लिखकर बता रहे थे कि हमने इसके बारे में क्या कहा, उसके बारे में क्या कहा। यह हकीकत की बात है कि यदि जनता पार्टी के बारे में इनका बयान उठाया जाए तो जरूर यह पता चल जाएगा कि इन्होंने उनके बारे में क्या कहा। कट्टरपंथ हिन्दू और उदारपंथ की लड़ाई, जो हिन्दुस्तान की अकलियत के सिर पर डाल दी गई है, इस लड़ाई को यहां लड़कर किया जाए।

आपको राष्ट्रपति जी के यहां बुलाया गया था। आप यहां आए, बहुमत के लिए बहस चली। आप अच्छी तरह से जानते थे कि आपको बहुमत हासिल नहीं है। हिन्दुस्तान के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ। परम्परा यह थी की राष्ट्रपति बड़ी पार्टी को बुलाते थे। परम्परा यह भी थी, चाहे यशवन्त राव चव्हाण हो, चाहे स्वर्गीय राजीव गांधी हों, चाहे शरद पवार हों...**(व्यवधान)** मैं निवेदन करना चाहता हूं कि पार्टियों ने मना करने का काम किया।

अपराह्न 3.23 बजे

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

अटल जी बहुत पुराने व्यक्ति हैं। आज वक्त नहीं है लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि ये एक चेहरा बनाकर चलें। कई चेहरों से मुल्क की जंग कभी भी फैसले की शक्ल में नहीं पहुंचती। इसलिए फैसले की शक्ल में पहुंचना है।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यादव जी कृपया अपना भाषण समाप्त कीजिए। अन्यथा आपके दल के लिए समय नहीं बचेगा।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव : हमने जो सरकार बनाई है, एक किसान के बेटे को यहां बिठाया है, मिनिमम प्रोग्राम बनाया है। चाहे जो हो, लड़ाईयों की हम लड़ते रहे हैं।...**(व्यवधान)** आप लड़ने दें तब न। आप तो हिन्दुस्तान में कट्टरपंथ और संविधान को भी नकारने पर खड़े हो गए हैं, उसको कुचलना चाहते हैं। हर तरह का काम करने के बाद हालत और सूरत यह है कि गरीबी और भूख की लड़ाई पिछड़ी है, हम उस बेकारी और बेरोजगारी की लड़ाई को आगे लाना चाहते हैं। प्रधान मंत्री ने कहा, मैं भी एक जिम्मेदार सदस्य के चलते कहता हूं कि भ्रष्टाचार किसी का हो, हमारा हो या इनका हो, हम कोई भी भ्रष्टाचार छिपने नहीं देंगे, उसे चीरकर, उभारकर लाने का काम करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ इस सरकार का, इस प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूं, जिससे हिन्दुस्तान का उदारपन्थ जीते, हिन्दुस्तान की गरीबी और भूख की लड़ाई बढ़ने का काम हो और आपका कई तरह का चेहरा बेनकाब हो। यही इस विश्वास प्रस्ताव से हम यहां खम्भा ठोककर जाना चाहते हैं।

श्री मधुकर सर्पोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : माननीय अध्यक्ष महोदय, 28 मई के बाद आज दोबारा यह मौका हमको यहां पर मिला है और हम जो बात करने के लिए यहां पर मौजूद हैं, वह भी विश्वास प्रस्ताव के बारे में है।

यह हमारे मुल्क की सबसे बड़ी देन है कि जब चुनाव आते हैं तो सब लोग किसी के खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए जाते हैं। अब जो प्रस्ताव यहां पर आया है, यह मिली-जुली सरकार के समर्थन के बारे में आया है। सबसे बड़े ताज्जुब की बात यही है कि जिन सब लोगों ने जिनके खिलाफ में, वे भ्रष्टाचार के खिलाफ में लड़ने वाले हैं, उनके ऊपर जो अन्याय हो रहा है, उसके खिलाफ में लड़ने वाले हैं, गरीबों के लिए लड़ने वाले हैं, गरीब का जीवन-मान ऊंचा करने के लिए हमारी लड़ाई है, यह बस बोलने के बावजूद जनता के सामने गये और कांग्रेस के खिलाफ में चुनाव लड़ा, बहुत अच्छी बात थी, कोई गलत बात नहीं थी।

अगर एक पक्ष इस देश में सालों से काम कर रहा है, सत्ता उनके हाथ में है, तो यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि उनके हाथ से अन्याय हो सकता है। भ्रष्टाचार के खिलाफ आप सब खड़े हो गये, हम लोग भी भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़े।

इस देश की सुरक्षा के बारे में जब मामला उठता है तो उसके बारे में हम लोग आवाज उठाते हैं।

[अनुवाद]

इस देश में सर्वोपरि क्या है? देश सर्वोपरि है अथवा सत्ता?

[हिन्दी]

हम लोग कभी यह बात करने के लिए यहां नहीं आये हैं कि देश की अभी की हालत क्या है। इस हालत के अन्दर कितने इन्सान रोज इस देश में मारे जाते हैं, गोली से मौत के घाट उतारे जाते हैं, लेकिन किसी को उसकी कुछ चिन्ता नहीं पड़ी। हमारे पास पावर कैसे आयेगी, यह बात है और यह पावर हासिल करने के लिए कोई भी नकाब चढ़ाकर आप जनता के सामने चले गये। अब यह नकाब उतारकर आप सब लोग बोलते हैं कि हम सब एक हो हैं, सैकुलरवादी है तो जब चुनाव लड़े, तो आप सैकुलरवादी नहीं थे? ...**(व्यवधान)**

मैं आपके हर सवाल का जवाब देने के लिए तैयार हूं, खड़े होकर देखें, मैं जवाब दूंगा। मैं आपसे पूछता हूं आपके भाषण के बीच में मैंने आवाज नहीं उठाई, मैं शान्ति से हर बात सुन रहा था। मेरा आपसे भी अनुरोध है, आप भी शान्ति से सुनिये। ...**(व्यवधान)** और बोल रहे हैं हमें जनादेश मिला है तो कौन सा जनादेश है। आप जनता के समाने जब चले गये, तो सभी का प्रोग्राम एक जैसा लेकर गये थे, आप जनादेश की बात करते हैं। जब आपका प्रोग्राम लेकर गये तो किसी के 10 चुने गए, किसी के 15, किसी के 20, किसी के 25। हमारे 15 आ गये, मैं यह बोलना चाहता हूं कि सत्ता के परिवर्तन के लिए जनादेश हमें मिल गया। क्योंकि पहले से भाजपा के साथ हम लोगों ने समझौता किया था। इसलिए हम लोग यह कहते हैं, अगर भाजपा के 160 आये हैं, तो हमारे 15 भी उनके साथ हैं। चुनाव के पहले हम लोगों ने प्रोग्राम दिया, चुनाव के बाद नहीं, सत्ता हासिल करने के लिए नहीं। आप लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह सत्ता हासिल करने के लिए कर रहे हैं। जिस भ्रष्टाचार के खिलाफ आपने आवाज उठाई, कहां गया वह भ्रष्टचार? क्या वह सब ठंडा हो गया? जिन्होंने भ्रष्टचार किया, उनका साथ लेकर आप देश में शासन चलाना चाहते हो। आपके पीछे भ्रष्टाचार की ताकत है और कौन-सी है, वह बताइए? इन लोगों ने क्या-क्या स्कैम नहीं किये। इनके साथ बोफोर्स का स्कैम है, टेलीफोन का स्कैम है, आज मैंने पढ़ा यूरिया का भी स्कैम है, कौन-सा स्कैम नहीं है। आप लोगों ने हर जगह पर आवाज उठाई कि हम भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ेंगे और कांग्रेस को सत्ता से नीचे उतारेंगे, ऐसी मांग आपने जनता के सामने की थी। यह आपका वादा था।

जहां-जहां आप लोग गये, वहां कांग्रेस के भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई की...**(व्यवधान)** ठाकरेजी का नाम नहीं लेना। आपको नाम लेना है तो खड़े होकर लीजिए मैं जवाब दूंगा। वे इस सदन के सदस्य नहीं है, अगर होते तो दूसरी बात थी। यहां मैं आपसे बात कर रहा हूं। ठाकरेजी ने इस देश को सम्मान दिलाया है, इस देश को स्वाभिमान दिलाया है। मैं यहां पर अंतुलेजी से पूछना चाहता हूं, शरदजी से पूछना चाहता हूं, आप सेक्युलर हैं, पर क्या कभी कश्मीर गये हैं? आज तीन लाख कश्मीरी पंडित जम्मू में हैं, क्या आपने उनसे पूछा कि वे किस हालत में हैं? उनके ही देश में वे शरणार्थी हैं। उनके प्रति कोई मानवीयता नहीं है, कोई सेक्युलरिज्म नहीं है। यह हालत किस ने की, यह हालत करने वाले कौन हैं, यह हालत करने वाले पाकिस्तानी हैं, आई.एस.आई. वाले हैं। हमारे देश के अंदर बंगलादेशी और पाकिस्तानी घुसते हैं, यहां दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता और अन्य जगहों पर बम विस्फोट करते हैं। अगर आप उनको पहचान कर सकें तभी अच्छे ढंग से राज कर पाओगे।

मुझे अच्छा लगा जब आपने माननीय देवेगौड़ाजी को नेता चुना। वे एक अच्छे आदमी हैं। कोई भी अच्छा व्यक्ति अगर पंच-प्रधान बनता है तो हम उसका स्वागत करेंगे। क्योंकि आज जरूरत है देश को सम्भालने वाला एक अच्छा आदमी, काम करने वाला आदमी। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि यह धर्मनिरपेक्षता क्या है? आप संविधान की बात करते हो, मैं आपको बतलाना चाहता हूं कि हमारे देश के अंदर मुसलमान हो, हिन्दू हो या ईसाई किसी भी मजहब का हो—

[अनुवाद]

उनके साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये। उसमें भेद क्योंकर किया जाना चाहिए? किसी को अल्पसंख्यक क्योंकर माना जाना चाहिये? सम्पूर्ण सभा से यही मेरा प्रश्न है। इस देश के सभी नागरिक समान हैं। सभी कानून सभी लोगों पर समान रूप से लागू किये जाने चाहिये और उसमें कोई भेदभाव नहीं होना चाहिये। ... **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया अध्यक्षपीठ को संबोधित कीजिये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री मधुकर सर्पोतदार : वे लोग बीच में रूकावट नहीं डालेंगे तो मैं जवाब नहीं दूंगा, अगर वे रूकावट डालेंगे तो मैं जवाब दूंगा।

[अनुवाद]

श्री कुमारूल इस्लाम (गुलबर्ग) : महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। उन्होंने अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न के बारे में क्यों बात की? यहां अल्पसंख्यक सांविधानिक अधिकार और न्याय प्राप्त करने आये हैं। हम किसी की दया के मोहताज नहीं हैं। इस सब का क्या मतलब है? इसका क्या तात्पर्य है?

अध्यक्ष महोदय : यह कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है। कृपया नियम 376 दुबारा पढ़िए।

श्री मधुकर सर्पोतदार : संविधान के अनुसार जिसको जो राइट मिला है, वह मिलना चाहिए।

[हिन्दी]

अगर वे हमारे देश के नागरिक हैं, तो उनको वह राइट मिलना चाहिए, उनके साथ हम लोग भी उनके अधिकार के लिए लड़ने को तैयार हैं। लेकिन यहां पर अल्पसंख्यक का नाम लेकर, जैसे हम कोई अलग हैं, जाति-जाति के बीच, दुश्मनी की बात कही जाती है। यहां बेदर्दी बढ़ गई, बीमारी बढ़ गई, लेकिन इसकी वजह क्या है, वजह एक ही है पावर चाहे किसी भी हालत में हो। आप लोग यह सब पावर के लिए कर रहे हैं।

यहां पर दो पार्टीज है एक सी.पी.आई. और दूसरी सी.पी.आई. (एम), इन दोनों का तत्वज्ञान अलग है।

मैं भी एक जमाने में इस पार्टी में काम करता था। इस लिए मुझे मालूम है...**(व्यवधान)** यह कम्युनिज्म क्या है...**(व्यवधान)** मैं ने बहुत उनके साथ काम किया है। जब चीन ने हमारे ऊपर हमला कर दिया, तो यह पार्टी हम को छोड़नी पड़ी। मैं इन से पूछना चाहता हूं, आप इतनी बड़ी बातें कहते हैं और यहां पर बोलते हैं कि हम लोग कम्युनल हैं तथा यहां पर चक्कर चलाते हैं कि इनकी लड़ाई गरीबों के खिलाफ हैं, तो मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि भाई साहब रशिया में क्या हो गया। आज रशिया में क्या चल रहा है और चीन के अंदर क्या चल रहा है? आप उनके तत्वज्ञान की बड़ी बातें कहते हैं और उसको हमारे देश के अंदर ला कर हमें सिखाते हैं। हमारे देश में उस तत्वज्ञान के सिखाने की कोशिश करते हैं, तो उसको कोई जरूरत नहीं है। हमारे देश का जो कल्चर है, वह बहुत रिच-कल्चर है ...**(व्यवधान)** हमारे देश की पूरी विचारधारा अलग है। इसी विचारधारा को ले कर अगर हम लोग ठीक ढंग से काम करेंगे तो मुझे पूर विश्वास है कि दुनिया के अंदर हमारे देश का पहला स्थान होगा। लेकिन घूसखोरी नहीं चलेगी और यह भ्रष्टाचार नहीं चलेगा। करप्शन के पीछे खड़े होने वाले लोग, करप्शन के खिलाफ लड़ने वाले लोग ...**(व्यवधान)** आप ऐसे ही कर रहे हैं और पावर लेने के लिए सपार्ट कर रहे हैं। पावर लेना कोई ग़लत नहीं है। अगर चुनाव वापस आते हैं, तो कोई हर्जा नहीं है, क्योंकि जनता स्थिति को देख रही है। इस चर्चा का हमारे देश के अंदर लाइव-टैलिकास्ट हो रहा है। पूरे देश के अंदर ही नहीं बल्कि दुनिया में यह देखा जा रहा है कि यहां कौन सी विचारधारा कौन से ढंग से बात कर रही है।

हमारे देश के अंदर सभी जगह गरीबी हैं। गरीब और गरीब हो गया और जो पहले से अमीर था, वह और अमीर हो गया। कोई अमीर

आदमी अमीर भाई...**(व्यवधान)** अमीर भाई, कहां से अमीर भाई? कहीं हांगकांग में पकड़ा गया...**(व्यवधान)** ये ब्राउन-शुगर हमारे देश के अंदर कौन लाए हैं? यह जहर लाने का काम किसने किया? क्या आपने इसकी तलाश की? जिनको पकड़ा, उनका क्या किया? सुबह माननीय सदस्य, जगमोहन जी, ने पूछा, जिन जगहों पर हादसा हुआ, क्या ये लोग पकड़े गए? आतंकवादी को आपने सजा दी? सच्चाई यही है, कि आप सजा नहीं दे पाते हैं...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

आप पूरे राष्ट्र को नियंत्रित कैसे करेंगे? आपका प्रशासन कहां हैं...**(व्यवधान)** आप उनका समर्थन कर रहे हैं। आपको ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।

[हिन्दी]

हमारे देश के अंदर खतरा पैदा करने वाले लोग हैं। दाऊद आपका आदमी है...**(व्यवधान)** दाऊद के आदमी बाहर नहीं है। दाउद को सपोर्ट करने वाले इसी हाउस के अंदर हैं, आपको बाहर ढूंढने जाने की कोई जरूरत नहीं हैं। उसको ढूंढने की जरूरत नहीं है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि बाहर के लोगों के लिए नहीं सोचना चाहिए। हमारे देश के लोगों के लिए सोचना चाहिए। देश का ख्याल करिए। गरीबों का ख्याल करिए। जहां पर सिक्योरिटी नहीं है, वहां की सिक्योरिटी का ख्याल करिए। इस स्थिति को ठीक करना

[अनुवाद]

हम अपने देश को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सुरक्षा सेवाओं पर करोड़ो रूपए खर्च कर रहे हैं।

[हिन्दी]

यहां जो नई सरकार आई है, मैं उनसे अनुरोध करना चाहता हूं कि अगर आप चाहते हैं...**(व्यवधान)** मेरा जो मत है, मेरा जो विचार है, वह उसके खिलाफ है। ऐसी मिली-जुली सरकार चलने वाली नहीं है।...**(व्यवधान)** चलेगी भी तो कोई बात नहीं है। मुझे एक बात मालूम है...**(व्यवधान)** हमारे सामने बैठे हैं, जिन पर भरोसा है ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री ए. सम्पत (चिरायिंकिल) : अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : कौन सी नियम संख्या के अंतर्गत आप इसे उठाना चाहते हैं?

श्री ए. सम्पत : महोदय, माननीय सदस्य ने बताया है... **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : इसकी अनुमति नहीं है।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सर्पोतदार : महोदय, यहां पर बोला गया, हिन्दू उदारवाद है, हिन्दू में कट्टरवाद है। आप कम से कम इतना तो जरूर मानते हो कि आप हिन्दू हैं। यह अलग बात है, उदारवाद हो या कट्टरवाद हो...**(व्यवधान)** लेकिन मैंने ऐसा कभी नहीं कहा हिन्दूवाद इस देश में नहीं है। इस हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की संस्कृति है और अगर हिन्दुस्तान में उदारवाद नहीं होता, तो शायद मुसलमान भी और अन्य लोग भी हमारे देश के अन्दर नहीं होते। पहले हिन्दूवाद है। वे लोग हमारे सामने आए, मुसीबतें खड़ी हो गई। यहां पर जो कुछ बहस कर रहे हैं, जो मुसीबतें बोल रहे हैं, इसकी एक ही बजह है और वह यह है कि हम लोग ज्यादा उदारवादी हैं। जो लोग यहां पर आते हैं, उनको हम लोग मेहमान करके रखते हैं। जिनको मेहमान करके रखते हैं, वे हमारी रोटी लेते हैं, कपड़ा लेते हैं और चोरी करते हैं तथा आर्म्स विस्फोट करते हैं। हमारे लोगों को खाने के लिए अनाज नहीं है, रहने के लिए मकान नहीं है और पहनने के लिए कपड़ा नहीं हैं वहां से लाखों लोग आते हैं तो यहां कोई और कहते हैं कि वे हमारे लोग हैं। मुझे ताज्जुब हुआ, जब यहां पर सार्वभौम सभागृह में ऐसी बात कही जाती है।

ऐसा कहना हमारे संविधान के खिलाफ है कि हजारों की तादाद में बाहर से लोगों को आने दो - हम उनका देश में स्वागत करेंगे। हमारे देश में जो लोग भूखे हैं उनको पहले खाना खिलाओ, फिर बाहर वालों को बुलाओ।...**(व्यवधान)** हमारे लोग झोंपड़ियों में रहते हैं उनके लिए मकान नहीं हैं, स्कूल नहीं हैं, उनको हम पढ़ा नहीं सकते हैं और बाहर से लाखों की तादाद में लोगों को बुलाकर देश को गरीब करने का जो प्लान इन्होंने सोचा हुआ है वह बहुत गलत बात है। हमारा देश यह बात कभी बर्दाश्त नहीं करेगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपको बोलने के लिए 11 मिनट का समय दिया गया था। मैं आपको पहले ही 15 मिनट का समय दे चुका हूं। आप चार मिनट तक और बोल सकते हैं और एक और मामला उठा सकते हैं।

श्री बी.के. गढ़वी (बनासकांठा) : मेरा औचित्य संबंधी प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : औचित्य संबंधी प्रश्न उठाने को कोई नियम नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हमें समय व्यर्थ नहीं करना चाहिये।

श्री बी.के. गढ़वी : कृपया मेरी बात सुनिए। कोई भी भाषण, जो संविधान का उल्लंघन करता हो, उस पर औचित्य संबंधी व्यवस्था

का प्रश्न उठाया जा सकता है। इस सभा में जो कुछ ऐसा बोला जाये जो संविधान के सिद्धान्तों के बिल्कुल विरूद्ध हो, उस संबंध औचित्य संबंधी व्यवस्था का प्रश्न उठाया जा सकता है और आपको मेरी बात सुननी पड़ेगी। यह माननीय सदस्य दो समुदायों के बीच घृणा फैलाने का प्रयास कर रहे हैं और इसीलिए यह संविधान का उल्लंघन है। इसीलिए यह औचित्य का प्रश्न है आपको इस पर रोक लगानी होगी।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सर्पोतदार : अध्यक्ष महोदय, एक-दो प्वाइंट और हैं।...**(व्यवधान)** यह जो विश्वास मत का प्रस्ताव रखा गया है। ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

तो फिर हम सांप्रदायिक बन जाते हैं। जब इस देश में अनेक हिन्दू मारे गये थे तो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) सहित किसी भी पार्टी के एक भी सदस्य आगे जाकर यह नहीं कहा कि इतने हिन्दू मारे गए हैं। अध्यक्ष महोदय ...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

जहां तक प्रोपराइटी का सवाल है तो जिन्होंने जिंदगी भर प्रोपर्टी के लिए सोचा है वह आज प्रोपराइटी की यहां पर बात कर रहे हैं। मुझे बहुत ताज्जुब हो रहा है। अध्यक्ष जी, हम सब इस देश की संतान हैं। अगर हमें इस देश में ही आवाज उठाने नहीं दी जाएगी,... **(व्यवधान)** अगर हमारे देश में पाकिस्तान वाले या कश्मीरी उग्रवादी यहां आकर बम विस्फोट करते हैं तो क्या उनके बारे में अगर हम बोलते हैं तो यह देश के खिलाफ बात है? इसका क्या यह मतलब है कि हम सेक्यूलर नहीं हैं। सेक्यूलर कौन है? सर्वधर्म सम्भाव की बात जैसे अभी हमारे भाई ने कही, हम भी इसे मानते हैं। हम भाईचारा भी मानते हैं। लेकिन भाईचारा ऐसा होना चाहिए कि अगर किसी हिंदू पर अन्याय होगा तो उसको भी अन्याय कहेंगे, मुसलमान पर अन्याय होगा तो उसको भी अन्याय कहेंगे। लेकिन असलियत में क्या हो रहा है? मुसलमान पर अन्याय हो गया तो भाईचारा चला गया। ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

चाहे कोई भी सरकार शासन करे, हमें व्यापक दृष्टिकोण, खुली सोच अपनानी चाहिये। साथ ही हमें यह भी देखना चाहिये कि देश का शासन अच्छे ढंग से चले। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

वित्त मंत्री (श्री पी. चिदम्बरम) : उनका कहना है कि लोग केवल कुछेक लोगों के मारे जाने की आलोचना करते हैं और अन्य लोगों की नहीं। यह उचित नहीं है। मैं नहीं समझता कि श्री वाजपेयी अथवा कोई अन्य नेता इस प्रकार के वक्तव्य का समर्थन करेगा।

अध्यक्ष महोदय : मैं कार्यवाही-वृत्तांत देखूंगा।

श्री मधुकर सर्पोतदार : मैं यह कभी नहीं समझ पाया कि उन्होंने क्या कहा है तथा उनका क्या उद्देश्य था...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : आपको उसका जवाब नहीं देना है। कृपया अपनी बात पूरी कीजिए।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सर्पोतदार : जो विश्वास मत का प्रस्ताव आया है। तेरह पार्टियों ने मिलकर, जमा होकर सरकार बना ली है। लेकिन उसमें मुख्य हिस्सा कांग्रेस वालों का है। अब उनके 140 सदस्य हैं, पहले 136 थे लेकिन चलों मैं 145 मानता हूं। सवाल यह है कि जितनी उनकी ताकत बढ़ेगी...**(व्यवधान)** उतना आपका धोका बढ़ेगा मैं कहना चाहता हूं कि इनसे बचकर रहो, बेशक राज करो।

[अनुवाद]

श्री ई. अहमद : अध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटी सी बात कहना चाहता हूं। हमने कई तरह की सांप्रदायिकता देखी है। परंतु हमने इस तरह की सांप्रदायिकता नहीं देखी। उनके भाषण में सांप्रदायिकता का प्रवाह था। ऐसा नहीं होना चाहिए। यह ठीक नहीं है।

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र (मधुबनी) : अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने जो विश्वास का प्रस्ताव पेश किया है, मैं उसके पक्ष में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। प्रधान मंत्री के प्रस्ताव का मैं इसलिये समर्थन करता हूं कि मेरे लिहाज से हमारा देश एक खतरनाक स्थिति में पहुंच गया है और वह मसला है कि हमारे देश में सैकुलर रहेगा या नहीं रहेगा? हमने भाजपा के मित्रों और दूसरे मित्रों की बातों को बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना। वे इस बात पर क्यों नहीं विचार कर रहे हैं कि वे इतनी बड़ी जीत करके आये हैं तो इस देश की छोटी से छोटी पार्टी का भी उनका समर्थन प्राप्त क्यों नहीं है। यह एक गम्भीर बात है। आप इस कथन के खिलाफ खड़े होकर शाउट कीजिये हमें प्रसन्नता होगी और हम आपको इसके लिये नहीं रोकेंगे। कुछ लोग यह कहते हैं कि चुनाव के पहले आपने यह समझौता क्यों नहीं कर लिया, मैं आपको बता देना चाहता हूं कि चुनाव के बाद भी समझौता होता है। अगर देश पर खतरा पहुंचेगा, विदेशी आक्रमण होगा तो हम आपके साथ हाथ मिलायेंगे या नहीं? दोनों मिल कर देश की रक्षा करेंगे या नहीं? इसलिये यह तर्क कोई तर्क नहीं है। तर्क यह हुआ कि भाजपा के जीतने के बाद यह संविधान सैकुलर नहीं रह सकेगा, यह देश टूट जायेगा। यहां भी थियोक्रेटिक स्टेट, मजहबी राज कायम होगा, जैसा कि हमारे पड़ोसी देशों में हुआ, बंगला देश और पाकिस्तान में हुआ। एक खतरा उपस्थित हो गया। इसलिये छोटी जितनी पार्टियां थी, सब एक हो गई। मैं मानता हूं कि हम लोगों में बहुत मतभेद हैं, लेकिन हम देश के हित के लिये एक हो गये। यही सबसे बड़ी बात है। आप

इस बात को नहीं समझ सकते। भाजपा के मित्रों ने विश्वसनीयता समाप्त कर दी है।

विरोधी दल के नेता वाजपेयी जी यहां बैठे हुए है, उन्होंने नैशनल इंटिग्रेशन कॉसिल में कहा था और आश्वासन दिया था कि बाबरी मस्जिद नहीं तोड़ेंगे। तत्कालीन मुख्य मंत्री ने भी ऐसा ही आश्वासन दिया था लेकिन आपने बाबरी मस्जिद तोड़ दी। आज सारा देश आपके ऊपर विश्वास नहीं करता है। वह आपके ऊपर विश्वास नहीं करेगा, मैं यही कहने के लिये खड़ा हुआ हूं...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, मैं वाजपेयी जी को बहुत कद्र करता हूं। मुझे इनके साथ रहने का भी मौका मिला है। यह लोग इस बात की चर्चा करना चाहते हैं कि सैकुलरिज्म पर इस देश में फिर से बहस हो। उसके लिये इस सभा में जितनी बहस करनी हो कीजिये लेकिन यह बात तय है कि मंदिर-मस्जिद जो तोड़ेगा, यह सैकुलरिज्म नहीं है। कम से कम इतना मन से निकालिये और कहिये कि मस्जिद मंदिर तोड़ना सैकुलरिज्म नहीं है। यही सवाल सिर से उठ गया है। यह माइनॉरिटी का सवाल नहीं है, मुसलमानों का सवाल नहीं है, सारे मुल्क के लोगों का सवाल है, राष्ट्रीयता का सवाल है, देश की एकता का सवाल है, अखंडता का सवाल है। इसीलिये तमाम लोग और हम लोग आपके खिलाफ हो गये। और कोई बात नहीं है। अगर आप समझते हैं कि कुछ लोग यहां मंत्री बनने के लिये आये हैं...**(व्यवधान)** ठीक है, अगर आपके यहां भी जाते तो मंत्री ही बनते, संतरी नहीं बनते। आपने कहा कि हम सूटकेस लेकर नहीं घूम रहे थे लेकिन डाली लेकर तो घूम रहे थे...**(व्यवधान)** नहीं तो आप पहले ही बहुमत कायम कर लेते और तब राष्ट्रपति के यहां जाते। आपने प्रधान मंत्री पद का इस्तेमाल करना चाहा और पद लोलुपता से माननीय सदस्यों को ललचाना चाहा लेकिन माननीय सदस्यों ने बहुत ईमानदारी के साथ आपको ठुकरा दिया।

मैं चाहता था कि आपकी पार्टी के जो महान लोग हैं, वे गंभीरता से इस पर विचार करें कि क्यों देश के लोगों में से एक भी आपको छूने के लिये तैयार नहीं है?

प्रो. रासा सिंह रावत : आपके लोग कितने हैं? आप आपने गिरेबान में मुंह डालकर देखें।

श्री चतुरानन मिश्र : अध्यक्ष महोदय, दुनिया के कई देशों में ऐसा हुआ है कि धार्मिक उन्माद पैदा करके सैक्युलरिज्म समाप्त कर दिया गया। अल्जीरिया और तुर्की का उदाहरण हमारे सामने है। यह संख्या की बात नहीं है। आप थोड़े बहुत हिन्दुओं को उभाड़ सकते हैं, आप उन्हें छल सकते हैं लेकिन हम आपसे कह देना चाहते हैं कि इससे देश नहीं चलेगा। यह पहला बिन्दु था जिसके लिये हम सभी एक हुये हैं। इसलिये आप जो यह कहते हैं कि नकारात्मक रूप से एक हुये हैं, तो यह बात नहीं हैं। हम सकारात्मक रूप से एक हुये हैं और देश की अखंडता और इस देश के सैक्युलरिज्म की रक्षा के लिये हम एक हुये हैं। यही हम आपसे कहना चाहते हैं।

दूसरी बात यह है कि हमारे देश में बहुत बड़ा सामाजिक और ततजन्य राजनीतिक परिवर्तन हो रहा है। जब श्री वाजपेयी जी प्रधान मंत्री पद से भाषण कर रहे थे तब उन्होंने एक बात की चर्चा की थी कि नेहरू जी ने एक दीक्षान्त समारोह में भाषण करते हुये कहा था कि हमारे देश की यह सभ्यता बहुत पुरानी है। यह बिल्कुल सही है। लेकिन इन हजारों वर्षों में कुछ अच्छी तो कुछ बुरी बातें भी हुई हैं। अगर यहां पर राम और सीता हुये हैं तो रावण भी हुये हैं। अब से आपसे रावण पक्ष की बात कहना चाहता हूं। हिन्दू धर्म ने एक बहुत बड़ा पाप किया है और वह यह कि इसने शूद्रों पर बहुत अमानुषिक अत्याचार किये हैं और ये हजारों वर्षों से हुये हैं जिससे हिन्दूवाद टूटने लगा था। आप धन्यवाद दीजिये राष्ट्रीय आन्दोलन को जिसने इनको एकजुट किया। धन्यवाद दीजिये उन साधू-संतों को जिन्होंने इस देश को एक किया...**(व्यवधान)** आप हमें पूरा करने दीजिये। हमारी पार्टी के लिये वक्त थोड़ा है। यदि और मिल जाये तो मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूं...**(व्यवधान)** ये लोग शूद्र कहे जाते थे। दुनिया में क्या ऐसा कोई धर्म है जहां पर अपने लोगों को नीच, अछूत कहकर साथ नहीं बैठने दिया, मंदिर में नहीं जाने दिया। भक्तिकाल में हमारे साधू-संतों ने उसके खिलाफ आवाज उठायी, यह मंडल आंदोलन से बहुत पहले से है। नये नये लोग नहीं हैं। उनकी नहीं चलो। इसलिये नहीं चली क्योंकि उस वक्त राजा लोग थ। और अब संसद है, सर्वोच्च न्यायालय है और सरकार भी उनके पक्ष में है। ये पहली बार स्वयं उठ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं गांधी जी के अछूतोद्धार आंदोलन को देखा था। मैं बचपन से ही स्वतंत्रता संग्राम में था। उस वक्त हम लोग हरिजनों को ऊपर उठाने के लिये जाते थे। डा. अम्बेडकर हरिजनों को ऊपर उठाने के लिये जाते थे और अब हरिजन खुद ऊपर उठ रहे हैं। क्या परिवर्तन नहीं हो रहा है, क्या आप लोग यह नहीं देख रहे हैं? अब वे सत्ता में आना चाहते हैं, केयर ऑफ में नहीं आना चाहते हैं। केयर ऑफ तो जगजीवन बाबू थे। दूसरे लोग भी आये। अब वे सत्ता में हिस्सा लेना चाहते हैं। अब वे समाज में समानता का स्थान प्राप्त करना चाहते हैं। क्या इसे आप लोग समझ नहीं रहे हैं? आप लोग नशे में हैं। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि मंडल आंदोलन के रूप में इस देश में एक परिवर्तन हो रहा है...**(व्यवधान)** चलो मैं आपकी बात मान लेता हूं और हरिजनों को दलित कहे देता हूं। मैं आपसे बता देना चाहता हूं कि ये दलित लोग स्वयं उठ रहे हैं। दुनिया में बड़ा परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन में अपना साथ दीजिये। आप चाहते हैं कि हिन्दूत्व का नारा देकर इनसे टकराये और इनको तहस नहस कर दें। आप सोचें कि इनको खरीद लें या बिक्री कर दें, यह इनके साथ चलने वाला नहीं है और न ही इससे देश टूटेगा।

इसीलिए हम आपका समर्थन नहीं करते।

श्री विनय कटियार : आपको पार्टी से कितने दलित लोग जीतकर आए हैं?...**(व्यवधान)** हमारी पार्टी में आपसे ज्यादा दलित लोग जीतकर आए हैं। आप बोल क्या रहे हैं?...**(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र : कांग्रेस के दलित लोग पिछली बार आपसे भी ज्यादा थे।...**(व्यवधान)** आप इस नयी बात को नहीं समझ रहे हैं। यह टकराव हो रहा है। इस टकराव में इस देश के लोग जीतेंगे। इनकी आबादी ज्यादा है और जिनकी आबादी ज्यादा है उसी का राज इस देश म चलेगा। क्या वजह है कि भाजपा के इतने बड़े-बड़े नेता लोग बोलते हैं? एक आदमी ने भी नहीं कहा कि मनुस्मृति का यह श्लोक गलत है। क्यों नहीं बोलते हैं? मैंने सिर्फ एक आदमी कांशीराम जी को पाया जिन्होंने कहा था कि इस देश में जातिवाद जब तक नष्ट नहीं होगा तब तक दलितों का उत्थान नहीं हो सकता है। एक ही आदमी भाषण करने वाला है। आपके मुंह से क्यों नहीं निकलता है? हमारे शास्त्रों के अंदर कुछ बुरी बातें हैं जिनको हटाना पड़ेगा। अगर देश को एक रखना है, एकजुट करना है तो नयी शक्ति को उठाना पड़ेगा, तभी देश मजबूत होगा। इसीलिए हम आपका साथ नहीं देते हैं और इसीलिए हम प्रधान मंत्री देवेगौड़ा का साथ देते हैं।

एक तीसरा मुद्दा है जिसको आपको समझने की जरूरत है। वह भी आप नहीं समझ रहे हैं। इस देश में बहुत दिन तक हम लोगों ने राज चलाया है। हमारी संघीय पद्धति है लेकिन हो यह रहा था कि पावर का सेन्ट्रलाइजेशन हो रहा था। संविधान में तो था अब सभी पार्टियां राज चला रही हैं। राज्य सरकार में आप भी हैं और ये भी हैं ओर हमारे लोग भी हैं। हम सीधे तो नहीं हैं लेकिन सोमनाथ बाबू राज चला रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप भी तो हैं उसमें।

श्री चतुरानन मिश्र : हम तो छोटा सा पार्ट हैं। चला तो ये ही रहे हैं। असली गाड़ी इन्हीं की चल रही है। इसमें जनता के हित का जितना सवाल था, शिक्षा हो, अस्पताल हो, सिंचाई हो, सड़क हो, जितनी चीजें है वह राज्य सरकार को करनी हैं लेकिन पैसा केन्द्र सरकार रखेगी। यह टकराव पैदा हुआ। आप इसको क्यों नहीं समझ रहे हैं? इस टकराव में लोगों ने आपकी बात को नहीं माना क्योंकि आपने कश्मीर के बारे में आर्टिकल 370 का विरोध किया जिसमें लोगों को थोड़ा सा अधिकार था।...**(व्यवधान)**

श्री कड़िया मुण्डा (खूंटी) : आपने कितने अस्पताल बनाए, कितनी सड़कें बनाई? आपके यहां घोटाले हुए। यूरिया घोटाला, पशुपालन घोटाला हुआ।...**(व्यवधान)**

श्री विनय कटियार : ये हमें शिक्षा देने का काम कर रहे हैं? ...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए। आपको जवाब देने का मौका आएगा।

श्री चतुरानन मिश्र : इस दरिद्रता पर हमें दया आती है कि सदन में चर्चा चल रही है देवेगौड़ा जी पर और ये कहते हैं कि लालू प्रसाद पर बोलिये। इस दरिद्रता के लिए हम क्या कह सकते हैं? हम कहते हैं कि हिन्दूत्व का मतलब है अगर तुम गधे को घोड़ा कहो तो क्या हम तुमसे झगड़ा करेंगे? जो शब्द प्रचलित है उसको रखो।... **(व्यवधान)** मैं आपसे चर्चा करूंगा कि कैसे हम आपको सांप्रदायिकता का प्रतीक समझते हैं? एक छोटा सा सवाल लीजिए। आपन चर्चा की थी विदेशी नागरिकों की। विदेशी हिन्दू भी आते हैं और मुसलमान भी आते हैं। आप चलिये हमारे साथ त्रिपुरा में। हम लाखों हिन्दू दिखा देंगे कि बाहर से आते हैं। ये जब बोलते हैं तो मुसलमानों पर बोलते हैं। हम आपको सांप्रदायिक नहीं कहें तो क्या कहें? आप घनघोर सांप्रदायिकतावादी हैं।...**(व्यवधान)**

कुमारी उमा भारती (खजुराहो) : चकमा लोगों को आपने भगाया।...**(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र : अध्यक्ष महोदय, एक बात मैं कहूं। ...**(व्यवधान)**

श्री विनय कटियार : आप हाउस को मिसलीड कर रहे हैं। चकमा लोगों को भगाने का काम आपने किया है।...**(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र : आप इंस्पेक्टर नहीं है। इसके लिए अध्यक्ष जी बैठे हैं।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप हर समय इस तरह खड़े नहीं हो सकते। कृपया बैठ जाइए। आप किसी सदस्य के भाषण में इस तरह बाधा नहीं डाल सकते।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कुछ भी रिकार्ड नहीं किया जाएगा।

(व्यवधान)*

अपराह्न 4.00 बजे

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र : माननीय सभापति महोदय, मैं एक बात कहता हूं। आज भाजपा ने हिंदू संस्कृति को एक नई चीज दी है जिसका मैं जिक्र करना चाहता हूं। पुराने जमाने में यह होता था कि राजा-महाराजा से लेकर गृहस्थ आश्रम में जिनको वैराग्य उत्पन्न होता था वे साधु-संत हो जाते थे। भारतीय जनता पार्टी ने यह किया कि साधु-संतों को वैराग्य उत्पन्न करके संसद में ले आये।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : क्या आप बैठने की कृपा करेंगे? यह उचित नहीं है। आप एक अत्यधिक जिम्मेदार सदस्य हैं। आप हर बार व्यवधान नहीं डाल सकते। श्री चतुरानन मिश्र, आप अब अपनी बात समाप्त करें। आपकी पार्टी के पास आठ मिनट है। आप 15 मिनट ले चुके हैं।

---

* कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र : महोदय, कामन सिविल कोड की बात थी।. ..**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया मेरी बात सुनें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप नहीं चाहते कि मैं उत्तर दूं। मैं आपको जवाब नहीं दूंगा। आप इसी तरह रहिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री चतुरानन मिश्र, कृपया अपनी बात समाप्त कीजिए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप इस तरह का बर्ताव नहीं कर सकते। कृपया बैठ जाइए। इधर देखिए, मैं रिकार्ड का अध्ययन करूंगा। यदि उसमें कोई आपत्तिजनक बात होगी तो उसे कार्यवाही रिकार्ड में शामिल नहीं किया जाएगा। श्री चतुरानन मिश्र जी, अब आप अपना भाषण समाप्त करें।

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र : बोलने नहीं देते हैं। मेरी आपसे रिक्वेस्ट है।...**(व्यवधान)** अब बोलने नहीं देंगे...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : समय बर्बाद न करें।

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र : मैं यही कहना चाहता हूं कि ऐसी पार्टी के ये लोग हैं...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मिश्र जी, कृपया विषय पर आइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : यह क्या हो रहा है।

(व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र : जब गुजरात में इनकी पार्टी के कुछ लोग खिलाफ हो गये तो उनको भगाकर इन्हें खजुराहो जाना पड़ा तो क्या हम लोग पाकिस्तान जायेंगे। आप हमें बोलने क्यों नहीं देते।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि ये लोग कुर्सी को कैसे इस्तेमाल करना चाहते हैं और गुजरात में यही हुआ। यहां कुर्सी को आप फिट कर दीजिए ताकि मिसाइल हिट न कर सके।

दूसरी चीज यह चाहते हैं कि एक बैल्ट भी दे दीजिए ताकि बुढ़ापे में कपड़े आदि छोड़कर...**(व्यवधान)** उसके लिए इन्हें सरकार की तरफ से बैल्ट मिलनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : मिश्रा जी, आप कन्क्लूड कीजिए।

श्री चतुरानन मिश्र : अब मैं आपसे सिविल कोड के बारे कुछ निवेदन करना चाहता हूं...**(व्यवधान)**

कुमारी उमा भारती : अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य लगातार प्रोवोकेटिव टिप्पणियां करते जा रहे हैं। आप इन्हें कहिए... **(व्यवधान)** ये अपनी बातें कहें।

श्री चतुरानन मिश्र : कौमन सिविल कोड के बारे में हमारे ऋषियों मुनियों ने क्या कहा है...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

मैं आपको नागरिक संहिता से संबंधित कतिपय उद्धरण दूंगा।

अब मैं **राधा कृष्ण रीडर**, पृष्ठ 182 से उद्धृत करता हूं :

> "वैदिक काल में आर्य हिन्दुओं का आह्वान किया गया कि वे गैर आर्य भारतीयों, द्रविड़ों, आंध्राइयों, पुलिंडों को सामाजिक मान्यता दें"

पुनः मैं याज्ञवल्क के पृष्ठ 176 से उद्धृत करता हूं जो इस प्रकार है :

> "जो भी रीति रिवाज, कानून तथा रूढ़िया हों, उन्हें राजा द्वारा लागू किया जाना चाहिए तथा उनका अनुसरण किया जाना चाहिए।"

[हिन्दी]

इसमें कहा गया है कि कौमन सिविल कोड में, राजाओं और सरकार को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए—यह याज्ञवल्क का कहना है अब मैं बृहस्पति को कोट करना चाहता हूं —

[अनुवाद]

बृहस्पति ने घोषणा की कि :

> "प्रत्येक देश की ख्याति प्राप्त प्राचीन संस्थाओं, जाति और परिवार को अक्षुण्ण रखा जाना चाहिए।"

डा. मुरली मनोहर जोशी : क्या आप याज्ञवाल्क और बृहस्पति को इस सदन में लाना चाहेंगे?

श्री चतुरानन मिश्र : जरूर। हम लाना चाहेंगे लेकिन आपका डंडा लेकर नहीं, डंडे को छोड़कर। हम तो ला ही रहे हैं। उनको भी संसद में आने का अधिकार है...**(व्यवधान)**

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : उसी तरह साधु सन्तों को भी संसद में आने का अधिकार है।

श्री चतुरानन मिश्र : इनको तो है ही।...**(व्यवधान)**

एक सवाल यहां पर आया कि भ्रष्टाचार के मामले में ये लोग हिफाजत नहीं कर सकते। हमारे प्रधान मंत्री जी ने स्पष्ट ढंग से कह दिया है कि हम भ्रष्टाचार के मामले में कोई समझौता नहीं करेंगे। जितना इनके मैनीफैस्टों में था, उतना इन्होंने राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में कहा। चाहे लोकपाल बिल का मामला हो, वह हमारे कौमन प्रोग्राम में है, इलैक्टोरल रिफौर्म्स का सवाल हो, वह भी हमारे कौमन प्रोग्राम में है और इससे आगे भी बहुत कुछ है। मंत्रियों की डिस्क्रीशनरी पावर छीन लेने की चर्चा यहां की गई। इन लोगों ने कहा कि हम ज्यादा दिन तक नहीं रह सकते, हम कोई ज्योतिषी नहीं हैं कि भविष्यवाणी कर सकें फिर भी आपकी तेरहवीं हुई, हमारा चालीसवां हो जाएगा...**(व्यवधान)** लेकिन जब तक अन्तुले और नरसिंह राव जी फातिहा पढ़ने के लिये तैयार नहीं है, उस वक्त तक हम 5 साल पूरे कर लेंगे, इसीलिये हम इनके साथ हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपने अपनी बात कह दी है। अब कृपया समाप्त करें।

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र : आखिर में एक बात और कहकर समाप्त करता हूं...**(व्यवधान)** आप हमें टाइम नहीं देते हैं, यदि देते तो और अच्छा होता...**(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : क्या आपने ...**(व्यवधान)*** को धोती नहीं भिजवाई थी...**(व्यवधान)**

श्री चतुरानन मिश्र : ...**(व्यवधान)*** न तो आपके पेट में अनशन कर दिया है...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया किसी सदस्य का नाम न लें। आप किसी ऐसे व्यक्ति का नाम नहीं ले सकते जो यहां नहीं हैं यह नियमानुकूल नहीं है।

* कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र : चूंकि हमारे नये कामरेड चिदम्बरम साहब नये फाईनेंस मिनिस्टर हुए हैं...**(व्यवधान)** चलिए, आप खुश हो गये ...**(व्यवधान)** कामरेड के माने क्या है?

मैं कहना चाहता हूं कि जो वर्ल्डवाइड रिफौर्म्स हो रहा है, ग्लोबलाईजेशन की बात हो रही है, मेरे पास यह अमेरिकन न्यूज बीक पेपर है।

यह "अमरीकन एक्सप्रेस" है, मैं इसमें से उद्धरण देता हूं ताकि हमारे मंत्री जी आगे इसका ख्याल रखें। वह ऐसा तरीका है जिसकी वजह से गरीबी ज्यादा बढ़ी है।

[अनुवाद]

"घातक पूंजीवाद के खिलाफ जन आंदोलन अब संयुक्त राज्य अमेरिका तक ही सीमित नहीं

विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका का ही मुश्किल से अकेला स्थान है जहां "घातक पूंजीपतियों का बोलबाला है तथा श्रमिक वर्ग काम की सुरक्षा के प्रति चिंतित हैं। न ही वह एकमात्र ऐसा देश है जहां प्रशासन विरोधी जन आंदोलन शुरू हुआ हो। यहां तक कि जर्मनी और जापान दोनों देशों प्रबंध व श्रमिकों के बीच सहकारी संबंधों के लिए प्रसिद्ध हैं, में भी 'हमारे बनाम उनके' की तर्ज पर बेरोजगारी और निगमित जिम्मेदारी के संबंध में लिखित प्रावधान होने लगे हैं।" पूरे विश्व का यही अनुभव है।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

[हिन्दी]

श्री चतुरानन मिश्र : आखिरी प्वाइंट ...

अध्यक्ष महोदय : आखिरी प्वाइंट के बाद क्या लास्ट होता है?

श्री चतुरानन मिश्र : मैं मिडटर्म अप्रेजल से पढ़ रहा हूं, जिसको पिछली सरकार ने प्रकाशित नहीं किया।

[अनुवाद]

> "तथापि निर्धनता अनुमान संबंधी विशेषज्ञ ग्रुप ने कार्य प्रणाली में पुनरीक्षण करने का सुझाव दिया है तथा इस पुनरीक्षित कार्यप्रणाली के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि कुल जनसंख्या का 39.3 प्रतिशत अर्थात् 31. 3 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे है।" यह नतीजा है।

[हिन्दी]

इसलिए हमारी सरकार गरीबों और गरीबी रेखा से नीचे आने वाले लोगों को ऊपर लाने में ध्यान दें और वैसा ही बजट बनायें।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब, श्री राजेश पायलट।

[हिन्दी]

श्री राजेश पायलट (दौसा) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव के समर्थन में खड़ा हुआ हूं और यह बात सही है, जैसा सभी साथियों ने कहा, हमारी पार्टी, कांग्रेस पार्टी...**(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष महोदय, यह क्या सिक्वेंस है?

[अनुवाद]

श्री प्रमोद महाजन : महोदय, यह क्रम क्या है?

अध्यक्ष महोदय : मैं पूरी तरह विभिन्न दलों की सदस्य संख्या के अनुसार चल रहा हूं।

श्री राम नाईक : महोदय, भाजपा से सिर्फ एक वक्ता बोला है।

श्री प्रमोद महाजन : जब भाजपा का एक ही वक्ता बोला है, तो कांग्रेस के वक्ता का नम्बर कैसे आ सकता है? दूसरा दौर हमसे शुरू होना चाहिए...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मैं शिव सेना सदस्यों से बोलने के लिए कह रहा हूं।

(व्यवधान)

श्री प्रमोद महाजन : नहीं महोदय, आपने इस सदस्य को बोलने की अनुमति दी है। आपको हमारी पार्टी के समय में कटौती नहीं करनी चाहिए। उनका दूसरा दौर हमारे बाद आता है।

अध्यक्ष महोदय : इसके बाद मैं निश्चय ही आपको अवसर दूंगा।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : कांग्रेस के दूसरे स्पीकर के बाद हमारा नाम है।

[अनुवाद]

श्री राजेश पायलट : महोदय, यदि भाजपा बोलने के लिए इतनी उत्सुक है तो मैं बाद में भी बोल सकता हूं।

श्री प्रमोद महाजन : आपके बोलने पर मैं व्यक्तिगत तौर पर आपत्ति नहीं कर रहा हूं। कोई न कोई नियम तो होना चाहिए।

श्री राजेश पायलट : महोदय, क्या मैं बोलूं?

अध्यक्ष महोदय : हां, बोलिए।

[हिन्दी]

श्री राजेश पायलट : अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं और सुबह से हमारे साथी अपने-अपने विचार रख रहे हैं और सभी ने कहा है कि इस सदन में अबकी बार जनता ने किसी एक पार्टी को ऐसा आदेश नहीं दिया कि वह सरकार बना सके। यह हमारी बात नहीं है। सारे देश में आप किसी गांव में जाइये, शहर में जाइये, वे इस बात को खुलकर कहते हैं। लेकिन हमारे बी.जे.पी. के भाई यह कहें कि कांग्रेस 142 सीट लेकर बिल्कुल पीछे रह गई हैं और ये 160 सीट लेकर सरकार बनाने के लिए आए हैं वह भी कायदे की बात नहीं है। इन्हें महसूस होना चाहिए कि सीट तो आपकी 142 ही थी, 18 सीट तो हमारे प्रैस वाले भाइयों ने बना दी कि बी.जे.पी. आ रही है, बी.जे.पी. आ रही है। इसलिए ऐसे हालात कांग्रेस को भी 28 प्रतिशत वोट मिले हैं, शायद इतने वोट आपको नहीं मिले हैं। अगर आज वोटों के हिसाब से जायें, सीटों के हिसाब से जायें तो जवाब नहीं है लेकिन आपने सदन के सामने आपने कुछ और ही रखा है।

दूसरा सवाल उठा कि हमने इनका क्यों साथ दिया? अटल जी जब प्रस्ताव मूव कर रहे थे तो बोले, खुलकर बोले, लेकिन मजबूरी के साथ बोले। जब प्रस्ताव पर जवाब दिया तो दिल से बोले और खुलकर बोले। उस वक्त कोई मजबूरी नहीं थी। इन्होंने कहा, जो दिल की बात है वह मैं कहकर जाऊंगा और हम बड़े ध्यान से सुनते रहे। आज सारे देश में यह सवाल उठा है कि कांग्रेस ने इधर क्यों नहीं साथ दिया? एक सवाल यहां उठा है। जब कांग्रेस पार्टी चुनाव के बाद मिली तो सबसे पहले हमारे सामने एक सवाल उठा और आज मैं बहुत तहेदिल से, बहुत साफ मन से, कोई पोलिटिकल भाषा में नहीं बोल रहा हूं, हम नहीं चाहते कि बी.जे.पी. इस देश में अछूत बने। यह प्रजातंत्र है। आप 160 सदस्य जीतकर आए हैं वे वोटों से जीतकर आए हैं।

हम इस बात की कद्र करते हैं, लेकिन जैसा भाई मिश्र जी ने अपनी भाषण में कहा, ऐसे हालात क्यें पैदा हुए?

कुमारी उमा भारती : स्पीकर की तरफ देखकर बोलिए।

श्री राजेश पायलट : कभी-कभी आपकी तरफ देखने का दिल करता है।

अध्यक्ष महोदय, सचाई यह है कि हमारे साथियों को यह अवश्य सोचना चाहिए कि ऐसे हालात कैसे पैदा हुए। यह सचाई है कि आज हमारे साथी जो सरकार में बैठे हुए हैं, उनके साथ हमारा विरोध रहा है। आज प्रधान मंत्री जी देवेगौड़ा बने हैं, इनकी पार्टी के साथ कर्नाटक में हमारा विरोध रहा है। लालू प्रसाद यादव जी के साथ हमारी पार्टी बिहार में विरोध में लड़ी थी। सी.पी.एम. के खिलाफ हमारी पार्टी प. बंगाल में चुनाव लड़ती रही है। इसका कारण यह है कि आज हमारे देश की एकता और अखंडता खतरे में पड़ गई है। देश की एकता पर एक प्रश्न चिन्ह लग गया है कि यह देश एक रह पाएगा या नहीं? मैं अपने भाइयों से पूछना चाहता हूं कि हमारा देश किधर जा रहा है। आज दुख की बात है कि हमारा देश जहां जाना चाहिए वहां नहीं जा रहा है बल्कि उल्टी दिशा में जा रहा है।

डा. अम्बेडकर ने, सबसे पहले जब संविधान बनाया था, तो उसके प्रीएम्बल में लिखा था कि यह देश सावरेन, सोश्यलिस्ट, सेकुलर, डेमोक्रेटिक और रिपब्लिक होगा।...**(व्यवधान)**

श्री प्रमोद महाजन : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य की जानकारी के लिए बता देना चाहता हूं कि यह अम्बेडकर जी ने नहीं लिखा है। उनको बीच में मत लाइए।...**(व्यवधान)**

श्री भगवान शंकर रावत (आगरा) **:** अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य सदन को मिस-लीड कर रहे हैं। अभी जो इन्होंने कहा, वह संविधान में बाबा साहब अम्बेडकर ने नहीं लिखा है।...**(व्यवधान)**

श्री राजेश पायलट : अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाह रहा हूं कि जिस देश को दुनिया में सैकुलर देश के नाम से जाना जाता है, वही देश आज अपनी पार्लियामेंट में सैकुलरिज्म को डिसकस कर रहा है। यह दुनिया में और इस देश के लिए बड़े शर्म की बात है। भारत देश, जो सैकुरिज्म की भाषा बोलता है, वह देश आज अपनी संसद में इस सैकुलरिज्म को डिसकस कर रहा है।

अध्यक्ष महोदय, मुझे पं. नेहरू की एक स्पीच आज भी याद है। किसी मुस्लिम कंट्री में वे गए थे। उनसे वहां के राष्ट्रपति ने पूछा कि पंडित जी, क्या आपको कोई ऐसा वाकया याद है जिसमें आपके देश में मुसलमानों पर अभी हाल में कोई ज्यादती हुई हो। पं. जवाहर लाल नेहरू जी का उत्तर था कि राष्ट्रपति जी, जितने मुसलमान आपके पूरे देश में रहते हैं, उतने तो हमारे देश के एक प्रान्त में रहते हैं। इसलिए आपसे ज्यादा मुसलमानों के हितों के रक्षक हम हैं। यह उत्तर था हमारे प्रधान मंत्री का। यह इज्जत थी हमारे प्रधान मंत्री की और हमारे देश की दुनिया में, लेकिन आज हमारा देश किधर जा रहा है? पं. नेहरू को लोग हाथ लगाकर छुआ करते थे कि यह एक ऐसे देश का प्रधान मंत्री है जहां तरह-तरह के लोग रहते हैं, अलग-अलग धर्म और अलग-अलग भाषाओं के लोग रहते हैं। हमारे देश की दुनिया में बहुत इज्जत है, लेकिन आज हमारा देश किधर जा रहा है, इसको देखने की आवश्यकता है।

भाई अटल बिहारी वाजपेयी जी से, वे मेरे बड़े भाई हैं, इस नाते मैं पूछना चाहता हूं कि आज देश किधर जा रहा है। मैं उनको गुरू जी इसलिए नहीं कहता, क्योंकि लोग गुरू जी भी उनको कहते हैं और फिर साथ भी नहीं देते। इसलिए रिश्ते साफ रखने चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, मैं भाई अटल बिहारी जी से कहना चाहता हूं कि जो आपका विश्वास का प्रस्ताव था और जो आपका भाषण था, उस पर हमने बहुत गहराई से विचार किया, बहुत सोचा और हमने खुद भी अपने मन में यही कहा कि यह गलती हमसे क्यों हो रही है। हमें पता है जो उस पार्टी में आज लोग चले गए हैं, वे पहले हमारी ही पार्टी में थे। बनवारी लाल पुरोहित जी, हमारी पार्टी में दस वर्ष तक रहे फिर वे वहां चले गए, हमने देखा कि वहां जाते ही हमारे लोग भी कम्युनलिज्म के फोरम की तरह क्यों बात करने लगते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं किसी की तरफ इंगित नहीं कर रहा हूं, लेकिन मैं इस सदन में बताना चाहता हूं कि आप लोग दो मिनट अपने दिल पर हाथ रख कर सोचिए कि आप लोग इस लोक सभा में दो चुनकर आए थे जब हम बहुमत में थे। 1989 में आपने एक नयी कहानी शुरू की और एक रथ-यात्रा चलाई। इसका इतना प्रचार किया कि आपकी संख्या 86 पर पहुंच गई।...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, सवाल 1989-90 का नहीं है। मैंने शुरू में कहा था कि हमारे में एक फर्क है। हमारी नीति में कोई गलती हो सकती है लेकिन हमारी नीयत गलत नहीं है। हमारी नीयत सही है। इनकी न तो नीयत सही है और न ही नीति सही है। भाई अटल जी मुझे साफ करेंगे जब तक नियत साफ नहीं हुआ करती, नीति जितनी मर्जी अच्छी हो, गाड़ी नहीं चला करती। नीति जितनी मर्जी गलत हो और नीयत साफ हो तो गाड़ी चल जाया करती है। आप अपनी नीयत को साफ कर लें तो देश में एकदम फैसला हो जायेगा। मैं घोटाले पर भी आ रहा हूं। उसका भी जवाब दूंगा। उसके बाद जब झांसी सीट पर आपको सब्र नहीं आया तो आपको शौक लग गया कि शायद सीटें बढ़ सकती है। आपने नई कहानी चलाई। अयोध्या का मसला लिया, काशी का लिया, मथुरा का लिया और उसके बाद आप 119 में पहुंच गये। आपने सोचा कि इस बढ़िया कोई मसला नहीं है। कोई डेवलपमेंट की बात नहीं है। भाई चन्द्र शेखर जी ने एक दिन हाउस में बैठकर ठीक ही कहा कि पिछले तीन साल से इस पार्लियामेंट के जो इशु हैं, उन पर कोई डिसकस नहीं कर रहे हैं। आज दूसरी बातें, मंदिर, मस्जिद और सैक्युरलरिज्म और पार्लियामेंट का सारा वक्त निकाल रहे हैं। यह सही भावना से चन्द्रशेखर जी ने कहा था कि हम कुछ भी डिसकस नहीं कर पाये, डेवलपमेंट की कोई बात नहीं कर पाये।

अटल जी आप लखनऊ से चुनकर आये हैं आप के शहर में करीब 29 प्रतिशत लोग कच्चे मकानों में रहते हैं। मेरे क्षेत्र में तो इससे भी ज्यादा रहते हैं। आज गरीबी की रेखा को देखें तो 39-40 प्रतिशत लोग आज भी गरीबी की रेखा से नीचे हैं। लेकिन इन्होंने इस बात की परवाह नहीं की। इन्हें शोक चढ़ आया और शौक क्या चढ़ा। इन्होंने सोचा कि एक ऐसा नारा है जो इन्हें 260 पर ले जायेगा और इन्होंने सोचा कि अब थोड़ा सा बदलाव लाओ। बी.जे.पी. ने अटल बिहारी वाजपेयी का नाम प्रधान मंत्री जी के लिए एनांउस कर दिया। प्रजातंत्र में ऐसी बहुत कम पार्टीज होती हैं, जो अपना प्रधान मंत्री पहले एनांउस कर देती है। लेकिन इसके पीछे एक चाल थी। चेहरा अटल बिहारी वाजपेयी का और एजेंडा श्री एल.के. आडवाणी जी का। इसलिए आपको घाटा हुआ है। भाई अटल जी का चेहरा चलता रहा और एजेंडा आडवाणी जी का चलता रहा। लोग समझ गये। अटल जी मुझे माफ करेंगे। जिस दिन प्रधान मंत्री के लिए मनोनीत करने की बात चली तो सबसे पहले आपने फिरोजाबाद में भाषण दिया गलत हो तो बता दें। अगर मैंने गलत पढ़ा हो। अटल जी ने अपना पहला भाषण वहां पर दिया कि मैं प्रधान मंत्री बना तो मंदिर का काम जल्दी शुरू

करूंगा। फिरोजाबाद यू.पी. का एक शहर है। वहां पर उन्होंने एक बयान दिया कि 370 में आप वही बात लेते रहे जो पिछले 10 सालों से ले रहे हैं। यूनीफार्म सिविल कोर्ट में बात करते रहे लेकिन जिस दिन प्रधान मंत्री पद से आप बोलें तो क्या बोलें? मंदिर की कोई जल्दी नहीं है। 370 सैकेंडरी इशु है, उसकी कोई जल्दी नहीं हैं। 370 को भी बाद में देखेंगे। आप जब कश्मीर गये तो आपकी पार्टी की एक ही लाइन रही। 370 की भाषा से इतना नुकसान कश्मीर में हुआ। आज मेरे बहुत से भाई कश्मीर का जिक्र कर रहे थे। मैं बीच में उठकर कहना चाह रहा था कि चाहे कश्मीर का हिन्दू हो, मुसलमान हो, सरकार ने पूरी कोशिश की कि उनकी पूरी हिफाजत की जाये। उनकी पूरी मदद की जाये। परम्पराओं पर माइग्रांट कैम्पस पर जाकर उनकी मदद करते रहे। आप बुरा मत मानिये।...**(व्यवधान)**

श्री दाऊ दयाल जोशी : क्या आपकी सरकार में से एक भी प्रधान मंत्री कश्मीर गया है?

श्री राजेश पायलट : अध्यक्ष महोदय, मैं जिक्र नहीं करना चाहूंगा। अटल बिहारी वाजपेयी जी यहां बैठे हैं। आडवाणी जी यहां नहीं हैं। जैसे आप श्रीनगर गये थे, ऐसा कोई आज तक नहीं गया। मैं होम मिनिस्ट्री में था। हम झण्डा फहरायेंगे...**(व्यवधान)** मुरली मनोहर जोशी जी बैठे हुए हैं। मैं गलती पर था।

डा. मुरली मनोहर जोशी : आपकी तमाम कोशिशों के बावजूद में वहां पहुंच गया।

श्री राजेश पायलट : जब जाने का बात हुई।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : पायलट जी, अपना भाषण समाप्त कीजिए।

श्री राजेश पायलट : महोदय, मैं केवल पांच मिनट और बोलूंगा ...**(व्यवधान)** मैं समय सीमा के भीतर बोल रहा हूं। महोदय रजिस्टर में मेरी पार्टी को समय दिया गया है। यह मेरी पार्टी का समय है।

अध्यक्ष महोदय : मुझे लिस्ट के सभी सदस्यों को बोलने का समय देना है। आपको मात्र पन्द्रह मिनट मिले थे।

[हिन्दी]

श्री राजेश पायलट : श्री मुरली मनोहर जोशी जैसे जम्मू पहुंचे और जिस तरह का झण्डा फहराया गया तो भाई जोशी जी उसे देखकर आप भी हैरान हुए होंगे। झण्डा फहराने से हिन्दुस्तान मजबूत नहीं होगा। आपने बंगलौर में भी यही बात कही थी। कर्नाटक में भाई देवेगौड़ा जी मुझे माफ करेंगे। ईदगाह में हम तिरंगा फहरायेंगे। ईदगाह में तिरंगा फहराने से हिन्दुस्तान मजबूत नहीं होगा। हिन्दुस्तान का तिरंगा झण्डा हमारी सरहदों पर फैल रहा है जहां हमारे जवान भाई अपनी जिंदगी को कुर्बान करके देश की रक्षा कर रहे हैं। वहां हिन्दुस्तान के झण्डे की जरूरत है। ईदगाह में झण्डा फहराने की जरूरत नहीं है। ...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, मिश्रा जी ने खुलकर बात कही, मैं मिश्रा जी की बात को रिपीट नहीं करना चाहता लेकिन सच्चाई यह है कि जिन लफ्जों में इस देश के साथ धोखा किया गया, जिस देश को इन लफ्जों ने मजबूत किया था, हमारे चीफ मिनिस्टर ने कहा था—

[अनुवाद]

अन्तिम समाधान होने तक उत्तर प्रदेश सरकार स्वयं राम-जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद की सुरक्षा के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार रहेगी। भूमि अधिग्रहण के मामले में भी न्यायालय के आदेशानुसार प्रक्रिया को पूरी तरह से लागू किया जायेगा।

[हिन्दी]

यही नहीं सुप्रीम कोर्ट में भी कहा, एन.आई.सी. में भी कहा और 4 दिसम्बर को जब मैं बोल रहा था, यहां आडवाणी जी और भाई अटल जी बैठे थे। मैं लखनऊ से आया था और रिक्शे में नारे सुनकर आया था—एक धक्का और दो, मस्जिद को तोड़ दो। मैं कम्युनिकेशन मिनिस्टर था, वहां से बोल रहा था। शिवराज पाटिल जी स्पीकर थे, उन्होंने कहा, मंत्री होकर बोलने का हक नहीं है। मैंने कहा कि मुझे अपने दिल की बात कहने दें, मैं घबराया हुआ हूं। मैंने दोनों भाइयों से प्रार्थना की थी कि क्या आज सदन को आप बता सकते हैं कि ऐसा नहीं होने देंगे? लेकिन दोनों में से एक भी नहीं उठा था, दोनों बैठे रहे थे क्योंकि नीयत सही नहीं थी। मैं आज भाइयों से प्रार्थना करने आया हूं कि यदि नीयत सही होती तो आज यह देश इस रास्ते पर नहीं जाता, आज यह देश गीरबी को डिस्कस करता। लेकिन नहीं हो पाया। भाई अटल जी, मैं आपसे प्रार्थना करना चाहता हूं।...**(व्यवधान)** अटल जी, आप बुजुर्ग हैं, आज हम सब यह महसूस करते हैं कि अगर आप थोड़े से कदम उठाएं तो इन भारतीय जनता पार्टी के भाइयों को भी उस रास्ते पर ले जा सकते हैं। मैं समझता हूं अटल जी का मन कहीं और है, मजबूरियां कहीं और हैं। मेरी भी थोड़ी बहुत बातचीत होती रहती है। मन में इनके कुछ है लेकिन सपोर्ट नहीं है। मुझे पूरी उम्मीद है भाई जसवंत सिंह और भाई अटल जी मिलकर मनोहर जोशी जी, आडवाणी जी को ब्रेकफास्ट में बुलाकर थोड़ा मन बदलें। देश के लिए यह जरूरी है, देश के लिए सैकुलरिज्म को लाना जरूरी है। ऐसा सैकुलरिज्म जो देश को पसन्द हो, ऐसा सैकुलरिज्म जो हमको पसन्द हो या भारतीय जनता पार्टी को पसन्द हो।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना भाषण समाप्त करिये।

[हिन्दी]

श्री सत्यपाल जैन (चंडीगढ़) : इन्होंने जो आडवाणी जी के खिलाफ कहा है, आडवाणी जी यहां मौजूद नहीं है। यह ठीक नहीं है। ...**(व्यवधान)**

कुमारी उमा भारती : ये लगातार कई बार आडवाणी जी का नाम ले रहे हैं।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कोई जरूरत नहीं अब आपको अपना भाषण समाप्त करना होगा।

[हिन्दी]

श्री राजेश पायलट : अध्यक्ष महोदय, मेरे पास दो प्वाइंटस हैं। ...**(व्यवधान)** मैं आपसे एक प्रार्थना करने आया हूं कि नीति और नीयत में फर्क मत करो।...**(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, ऐसे पर्सनल ऐलीगेशन लगेंगे तो फिर सबका नम्बर आएगा। इन्हें कहिए कि इसे विदड्रा करें। ...**(व्यवधान)**

श्री गुमान मल लोढा (पाली) **:** सुप्रीम कोर्ट ने जनाजा निकाला जब आपकी नीति थी या नीयत थी?...**(व्यवधान)**

श्री राजेश पायलट : मैं यह तो नहीं कह रहा कि हमारी सारी नीतियां सही है।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया उन्हें अपनी बात समाप्त करने दो।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया उन्हें अपनी बात समाप्त करने दो, मैं इस बात को देखूंगा।

[हिन्दी]

श्री राजेश पायलट : मेरे साथी यह कह रहे थे कि तुम्हारी सरकार क्या कर रही थी।...**(व्यवधान)** हमारी सरकार थी तभी तो यहां बैठे हैं नहीं तो वहां बैठे होते।...**(व्यवधान)** मैं बी.जे.पी. के बारे में नहीं बोलूंगा।...**(व्यवधान)** मुझे अपने माननीय प्रधान मंत्री जी से दो बातें करनी है।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य को अपनी बात समाप्त करने दो।

[हिन्दी]

श्री राजेश पायलट : प्रधान मंत्री जी यह महसूस करते हैं कि किन हालात में हम सब एक हुए।...**(व्यवधान)** मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा...**(व्यवधान)** अब तो आपकी बात बोल रहा हूं। जसवंत सिंह जी ने सुबह न्यूक्लियर टीटी की बात कही थी, यह बात सही है कि जिस तरह से सुपर पावर्स हमारे देश पर या हमारी डिस-आर्मामेंट की जो आस्था है, भाई गुजराल जी भी यहां बैठे हैं, इनकी बात बहुत सही है, उसमें मैं प्रार्थना करूंगा कि सारी पार्लियामेंट की तरफ से यह मैसेज जाय कि इस देश की नीति यही रहेगी। हम डिस-आर्मामेंट में यकीन करते हैं और उसका बराबर हम प्रयत्न करते रहेंगे। उस सुझाव का भी मैं स्वागत करता हूं और मैं भी अपनी तरफ से कहता हूं कि हमें यह करना चाहिए। अब तो ठीक है?

मुझे प्रधान मंत्री जी से दो बातें करनी है। एक बात तो प्रधान मंत्री जी, राज्यों के पुनर्गठन की बात बहुत दिनों से चल रही है। दस साल सरकार में रहने के बाद हमने महसूस किया कि इसपर बहुत गहराई से सोचना चाहिए। झारखण्ड की दिक्कत थी, बोड़ोलैंड की दिक्कत थी, बड़ी मेहनत करके हम लोग उनको दूर कर पाये। इसी तरह उत्तराखण्ड की बात की थी तो आप कोई ऐसी स्कीम बनाइये, जो भी बात आप कर सकें ओर जहां राज्यों के पुनर्गठन को बात चले।

तीसरे जो आपका जोइण्ट प्रोग्राम है...**(व्यवधान)** विदर्भ की बात भी है, उत्तराखण्ड की भी है, बोड़ोलैंड की भी है, लेकिन दूसरी बात, मैं जो प्रार्थना आपसे करने वाला हूं, वह यह है कि जब आप पार्लियामेंट में मैम्बर थे, तो किसानों के बारे में आपका भाषण हुआ था। मैं आपसे इतनी ही प्रार्थना करूंगा कि उस भाषण की बातों को आप पूरी तरह लागू कर दो, हमें आपसे कुछ और नहीं मांगना। उस दिन आप पीछे खड़े होकर बोल रहे थे, लोग तो कम ध्यान दे रहे थे, लेकिन मैं ध्यान दे रहा था, मैंने आपका पूरा भाषण सुना था। आपने करीब 40-45 मिनंट उस सबजैक्ट पर आप बोले थे। क्योंकि जब तक ग्रामीण क्षेत्र इस देश में नहीं उठाऐंगे, मैंने आपका जाइण्ट प्रोग्राम भी पढ़ा है, उसमें उसकी कुछ झलक है, ग्रामीण विकास की झलक है, लेकिन उसमें थोड़ी सी किसानों को भी जो कृषि को उद्योगों का दर्जा देने, किसानों के जो मसले हैं, किसानों की जो डवलपमेंट की बात है, उसमें वह झलक खुलकर नहीं है और जिसकी हम लोग पार्टी की तरफ से भी आपसे प्रार्थना करेंगे और सदन की तरफ से भी आपसे प्रार्थना करेंगे।

आखिरी बात यूरिया की कर रहा हूं। मैं कोंग्रेस की तरफ से आपसे प्रार्थना करूंगा कि हमारी कांग्रेस की सरकार पांच साल रही है, हम पांच साल सत्ता में रहे, मैं खुले शब्दों में प्रार्थना करके जा रहा हूं। नरसिंह राव जी के नेतृत्व में पांच साल हमारी कांग्रेस की सरकार रही है, मेरी आपसे खुलकर प्रार्थना है, इसे आप बुरे लफ्जों में मत लेना, हमारी खुलकर आपसे बात कहने की है, जहां कहीं हमारी सरकार की गलती लगे, हम पार्लियामेंट को जवाब देने के लिए तैयार हैं। यूरिया की बात चली है, आपने कहा कि जो भी स्कैडल में होगा, उसको सजा दी जायेगी, लेकिन एनरॉन की बात का भी जिक्र हुआ है। जब मैं अनवायरर्नमेंट मिनिस्टर था, एनरॉन की फाइल क्लियरेंस के लिए मेरे पास आई थी, मैंने खुद उसमें लिखा कि जब तक नई सरकार नहीं बन जाय, हम एनवायरर्नमेंट मिनिस्टर होने के नाते इस प्रोजैक्ट को क्लियर नहीं करेंगे। लेकिन छह दिन में एनवायर्रनमेंट क्लियरेंस भी

हुआ। इस पर भी जरा व्हाइट पेपर पर जवाब होना चाहिए कि एनरॉन के मामले में जो भी सजावार हो, उसे सजा मिलेगी। नरसिंह राव जी आज हाउस में नहीं हैं, लेकिन उनकी हमेशा एक नीति रही है, कोई कितना ही बड़ा हो, कितने ही बड़े पद पर हों, वह कानून से ऊपर नहीं है। उन्होंने सरकार में हमेशा कहा है। उसी बात को लेकर हम चलते हैं कि जो भी दोषी हो, उसको सजा दी जाय।

यह पूरा हाउस आपके साथ है, करप्शन से लड़ाई में हममें कोई फर्क नहीं है, जैसे सैकुलरिज्म के लिए हम आपके साथ हैं, करप्शन से लड़ाई में भी हम आपके साथ हैं, उसमें हमारा भेदभाव नहीं है।

इन्हीं लफ्जों से साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और देवेगौड़ा जी को शुभकामनाएं देता हूं कि आप सफल हों, भगवान आपको हिम्मत दे, ताकत दे ताकि इस मिशन को आप पूरा कर सकें।

श्रीमती सुषमा स्वराज (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष जी, विश्वास मत पर जो चर्चा आज प्रधान मंत्री जी के बहुत संक्षिप्त भाषण से शुरू हुई, वह मेरे वरिष्ठ साथी आदरणीय जसवंत सिंह जी के धारदार तर्कों से आगे बढ़ती हुई, विभिन्न आयामों को छूती हुई मुझ तक पहुंची है। मैं विश्वास मत का विरोध करने के लिए खड़ी हुई हूं।

हर वक्ता ने चर्चा की शुरूआत जनादेश को व्याख्या करते हुए की। दो परस्पर विरोधी व्याख्याएं जनादेश की इस सदन में रखी गई है।

सत्ता पक्ष का कहना है कि यह जनादेश गठबंधन की सरकार के लिए था, कोलीशन के लिए था। मेरी ओर से प्रश्न पूछा गया है कि क्या यह जनादेश कांग्रेस के साथ कोलीशन के लिए था, यह प्रश्न अभी तक अनुत्तरित है? मैं उम्मीद करूंगी कि कल प्रधान मंत्री जवाब देते हुए अपनी बात इससे शुरू करें कि क्या यह जनादेश कांग्रेस के साथ कोलीशन के लिए था।

अध्यक्ष जी, जनादेश की जो व्याख्या चाहें आप स्वीकार करें, लेकिन एक दृश्य जो सदन में उपस्थित हो रहा है उसका अनदेखा आप नहीं कर सकते। आज से पहले इस सदन में एक दल की सरकार होती थी और बिखरा हुआ विपक्ष होता था, लेकिन आज बिखरी हुई सरकार है और एकजुट विपक्ष है। क्या यह दृश्य अपने आप में जनादेश की अवहेलना की खुली कहानी नहीं कह रहा है। लेकिन अध्यक्ष जी, इतिहास में यह पहली बार नहीं हुआ जबकि राज्य का सही अधिकारी अपने राज्याधिकार से वंचित कर दिया गया हो। त्रेता में यही घटना राम के साथ बीती थी। राजतिलक करते-करते वनवास दे दिया गया। द्वापर में यही घटना धर्मराज युधिष्ठिर के साथ घटी थी। जब धूर्त शकुनी की दुष्ट चालों ने राज्य के अधिकारी को राज्य से बाहर कर दिया था। यदि एक मंथरा और शकुनी राम और युधिष्ठिर जैसे महापुरूषों को सत्ता से बाहर कर सकते हैं तो हमारे खिलाफ तो कितने ही शकुनी और मंथराये हैं, हम राज्य में कैसे बने रह सकते थे। ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अपने भाषण को इतना रोचक न बनाइये

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : राम राज्य और सुराज की शायद नियति ही यही है कि वह एक बड़े झटके के बाद मिलता है। इसीलिए मैं पूरे विश्वास से कहना चाहती हूं कि जिस दिन 28 तारीख दोपहर को मेरे आदरणीय नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने इस सदन से प्रधान मंत्री के पद से अपने त्याग-पत्र की घोषणा की थी, हिन्दुस्तान में उस दिन राम राज्य की भूमिका तैयार हो गई थी। हिन्दुस्तान में उस दिन स्वराज की नींव पड़ गई थी।

अध्यक्ष जी, दूरदर्शन के सामने जीवंत प्रसारण देखने वाला हिन्दुस्तान का वह मतदाता उनके त्याग पत्र की घोषणा के साथ कराह उठा था, यह अन्याय हुआ है-यह अन्याय हुआ है। लेकिन अन्यायी कभी यह स्वीकार नहीं करता कि वह अन्याय कर रहा है। अन्याय तो अपने स्वार्थ को सिद्धांत का बाना पहनाकर इस तरह प्रस्तुत करता है जैसे सबसे बड़ा न्याय कर रहा हो और यही इस सदन में घटा है।

अपराह्न 4.39 बजे

[श्री नीतीश कुमार-पीठासीन हुए]

धर्मनिरपेक्षता का बाना पहनकर हम पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाकर ये तमाम लोग एक साथ हो गये, एकजुट हो गये। मेरे नेता ने उस दिन कहा था कि धर्मनिरपेक्षता बनाम साम्प्रदायिकता पर राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए। हम चाहते हैं कि इस देश के संविधान निर्माताओं ने धर्मनिरपेक्षता की क्या कल्पना की थी और इस देश के शासकों ने उसे किस स्वरूप में ढाल दिया, उस पर राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए।

हम साम्प्रदायिक हैं-हां, हम साम्प्रदायिक हैं क्योंकि हम बन्दे-मातरम-गाने की वकालत करते हैं; हम साम्प्रदायिक हैं, क्योंकि हम राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान के लिए लड़ते हैं; हां, हम साम्प्रदायिक हैं, क्योंकि हम धारा 370 को समाप्त करने की मांग करते हैं। हम साम्प्रदायिक हैं, क्योंकि हम हिन्दुस्तान में गौवंश के संवर्द्धन ...**(व्यवधान)** वकालत करते हैं। सभापति जी, हां, हम साम्प्रदायिक हैं, क्योंकि हम समान नागरिक संहिता की बात करते हैं; हम साम्प्रदायिक हैं, क्योंकि हम कश्मीरी शरणर्थियों के दर्द की ...**(व्यवधान)** सभापति जी, ये सैक्युलर हैं, ये धर्म-निरपेक्ष हैं। ये दिल्ली की सड़को पर तीन हजार सिक्खों का कत्लेआम करने वाले ...**(व्यवधान)** सभापति जी, आप तो साक्षी हैं...**(व्यवधान)**

श्रीमती भगवती देवी (गया) : क्या मैं हिन्दू नहीं हूं, मुझ को मंदिर जाने से रोका गया...**(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं जानकारी के लिए बता दूं, भारतीय जनता पार्टी ने तो राम-मंदिर का शिलान्यास एक हरिजन महिला से करवाया था...**(व्यवधान)** मैं कह रही थी, ये सैक्युलर हैं कांग्रेसजन। दिल्ली की सड़कों पर तीन हजार सिक्खों का कत्लेआम करने वाले कांग्रेसजन सैक्युलर हैं। सभापति महोदय, आप तो बिहार के साक्षी हैं। मुस्लिम और यादव का जोड़ बैठाकर...**(व्यवधान)** जनता दल वाले सैक्युलर हैं। अपने वोट को संतुष्ट करने के लिए ... **(व्यवधान)** मैं बैठ जाती हूं, आप इन्हें बोलने दीजिए। ... **(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आप बोलिए।

(व्यवधान)

श्री चन्द्र शेखर : सभापति महोदय, मैं नहीं जानता कि सदन के कितने अध्यक्ष काम कर रहे हैं। मैं केवल आपसे यह निवेदन कर रहा था कि कोई सदस्य अगर बोल रहा हो, तो दूसरे सदस्य को कम से कम हमारे जैसे लोगों को अनुमति देनी चाहिए कि उनकी बात हम सुन सकें। मैं नहीं जानता किस रोष में ये लोग बोल रहे हैं। बहुत रोष वालों को मैंने देखा है ... **(व्यवधान)** मैं तो, सभापति जी, यह कह रहा हूं, सुषमा जी बोल रही हैं, तो उनकी बात को सुनना चाहिए और जिनको उत्तर देना हो, उनको उत्तर देना चाहिए। मैं यह निवेदन कर रहा था कि यह श्री राम वाली जगह नहीं है, यह सदन है। इसकी महत्ता को आप को समझ लेना चाहिए। ... **(व्यवधान)**

सभापति महोदय : श्रीमति सुषमा जी बोल रहीं हैं, वही रिकार्ड पर जाएगा और दूसरी बात रिकार्ड पर नहीं जाएगी। जो बगैर इजाजत के बोल रहे हैं, वह दर्ज नहीं किया जाएगा।

श्रीमती सुषमा स्वराज : बहुत-बहुत धन्यवाद। अगर आपकी यह बुद्धिमत्ता की बात सारे सदन को समझ आ जाए, तो मैं संतोष से अपनी बात कह सकूं।

मैं कह रही थी ... **(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आपकी बारी आएगी, तो बोलिएगा। ऐसे नहीं चलेगा।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : आपकी बारी आने वाली है, इनके बाद बोलिएगा। बैठिए, सदन का समय बरबाद मत करिए। अनको अपनी बात कहने का अधिकार है।

(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, अगर मेरे सदन के किसी भी सदस्य को हरिजन शब्द पर आपत्ति है ...

सभापति महोदय : अच्छी बात है। हरिजन शब्द का प्रयोग करने पर आपत्ति है। ठीक है, हरिजन शब्द की जगह दलित लिख लीजिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : अगर मेरे सदन के किसी भी माननीय सदस्य को एक शब्द पर आपत्ति है तो मुझे इस शब्द को बदलने में कोई आपत्ति नहीं है। कार्यवाही रिकार्ड करने वाले हरिजन की जगह कृपया दलित लिख लें। ... **(व्यवधान)**

सभापति महोदय : कृपया करके आप लोग हाउस कंडक्ट मत कीजिए। आप इनकी बात सुनिये।

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए निर्दोष राम-भक्तों को गोलियों से भूनने वाले सपा वाले सेक्यूलर हैं? चकमा शर्णार्थियों को भगाने वाले और घुसपैठियों को बसाने वालों की वकालत करने वाले ये वामपंथी सेक्यूलर हैं? सच्चाई तो यह है कि हम अपने हिंदू होने पर शर्म महसूस नहीं करते हैं इसीलिए हम कम्युनल हैं, इसलिए हम साम्प्रदायिक हैं। जब तक इस देश में आप हिंदू होने पर शर्मिंदगी महसूस नहीं करते तब तक इन तथाकथित बुद्धिजीवियों से सेक्युलर होने का सर्टिफिकेट आपको नहीं मिल सकता। ...**(व्यवधान)** सभापति जी, सेक्युलरिज्म की हमारी परिभाषा यही है कि एक मुसलमान अच्छा मुसलमान हो, एक हिंदू अच्छा हिंदू हो, एक सिख अच्छा सिख हो, एक ईसाई इच्छा ईसाई हो और सब अपने-अपने पंथों का अनुसरण करते हुए एक-दूसरे के धर्मो का आदर करे। यह हमारी परिभाषा है। ... **(व्यवधान)** इनका सेक्युलरिज्म हिंदुओं को गाली देने से शुरू होता है। अगर आप इनकी गालियों में शिरकत नहीं करते तो आप सेक्यूलर हो ही नहीं सकते। ... **(व्यवधान)** मैं यह कहना चाहती हूं कि हमें सेक्यूलरिज्म का यह परिभाषा मान्य नहीं है। सभापति जी, पहले तो हिंदुत्व पर भी प्रश्न चिन्ह लगाया जाता था, हिंदुत्व के मायने पूछे जाते थे। सभापति जी, पिछले विश्वास मत पर चर्चा सुनते-सुनते मेरी आंखे डबडबा आई थीं जब इस सदन में भरतीयता शब्द पर भी प्रश्नचिह्न लगा। ...**(व्यवधान)** आज से पहले तो कहते थे कि इंडियन नेशनेलिटीज की बात कर सकते हो, लेकिन इसी सदन में चर्चा के दौरान प्रश्न चिन्ह लगा। मैं तो बहुत कद्र करती हूं मुरासोली मारन जी की। उन्होंने कहा "हम अलग हैं और आप अलग" आप कौन सी संस्कृति की बात कर रहे हैं? भारत, भारतीय, भारतीयता क्या होती है? मुझे लगा था कि शायद इनमें से कोई बोलेगा। एक उम्मीद चन्द्र शेखर जी से जरूर थी। पता नहीं कौरवों की सभा के बीच भीष्मपितामह को तरह आप भी मौन साधे रहे। ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सभापति महोदय : नहीं वे चुप होने वाली नहीं हैं, बार-बार आप उठ जाते हैं तथा बोलना शुरू कर देते हैं यह क्या है? अपनी सीट पर बैठिये।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, मैं अपने मित्र मुरासोली मारन जी से बहुत अदब से यह कहना चाहूंगी कि भारतीयता के मायने कहीं पुछने की जरूरत नहीं है। भारतीयता का अर्थ यही है कि भांगड़ा से भरत-नाट्यम तक सारे नृत्य भारतवर्ष के ही नृत्य हैं। भारतीयता

के मायने यही है कि जम्मू के राजमा-चावल और पंजाब की मक्की की रोटी से लेकर दक्षिण के इडली-डोसा तक सारे आहार भारतवर्ष के आहार हैं। भारतीयता का यही अर्थ है कि अमरनाथ से लेकर रामेश्वरम् तक सारे तीर्थ भारतवर्ष के तीर्थ हैं। आप पूछते हैं कि एक संस्कृति के क्या मायने हैं?

[अनुवाद]

उद्योग मंत्री (श्री मुरासोली मारन) : आलू और टमाटर भारतीय नहीं है उनकी उत्पत्ति अमेरिका में हुई है। आपकी उत्पत्ति अमेरिका से हुई है।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : संस्कृति के मायने यही है कि शिव का भक्त अमरनाथ का जल लेकर रामेश्वरम के पैर पकड़ता है। यह एक संस्कृति के कारण हुआ है। पश्चिमी बंगाल के जन्मे एन.सी. चटर्जी अपने बेटे का नाम सोमनाथ रखते हैं। यही एक संस्कृति है ...**(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : अब की बार हमें चुना।

श्रीमती सुषमा स्वराज : यही एक संस्कृति है। मुझे संस्कृति का उदाहरण कहीं शब्द कोश में देखने की जरूरत नहीं है। यह सदन में परिलक्षित होती है। सवाल यह है कि यह किसी साम्प्रदायिकता के नाम पर इकट्ठे नहीं हुए है। यह भी ओढ़ा हुआ बाना है। यह अपने गुनाहों के कारण इकट्ठे हुए हैं। एक दूसरे को बक्श देने की सौदेबाजी के कारण। यह अपने अपराधों के बेपर्दा होने के भय से इकट्ठे हुए हैं। यह साम्प्रदायिकता के नाम पर हुई साझेदारी नहीं है। यह चारा कांड और हवाला कांड की साझेदारी है। तु मुझे माफ कर, मैं तुझे माफ करता हूं ... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : मेरा व्यवस्था का एक प्रश्न है। **(व्यवधान)** मुझे विश्वास नहीं है ... **(व्यवधान)**

सभापति महोदय : सोमनाथ जी व्यवस्था का प्रश्न उठा रहे हैं। कृपया उनकी बात सुनें।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मेरी हिन्दी पर अच्छी पकड़ नहीं है। मैं हिन्दी समझ नहीं सकता हूं। इसके लिए मुझे खेद है। मैं नहीं जानता कि "सौदाबाजी" किसके लिए कहा गया है? इसका क्या मतलब है? **(व्यवधान)** कृपया हमें बताइये कि "सौदाबाजी" किसके लिए कहा गया है। **(व्यवधान)** "सौदाबाजी" में कौन लोग संलिप्त हैं?

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : समझने वाले समझ गये, जो न समझे, वह अनाड़ी है। मैंने चारा कांड और हवाला कांड कहा था ...**(व्यवधान)**

सोमनाथ जी, जब मैंने संकेत में कह दिया कि चारा कांड और हवाला कांड की साझेदारी है तो आपको उठना नहीं चाहिये था, इशारा समझना चाहिये था कि मैं किसी की साझेदारी का जिक्र कर रही हूं। मुझे यकीन नहीं हुआ जब देखा कि कॉमन मीनिमम प्रोग्राम में एक शब्द भी करप्शन के पैंडिंग केसिज के बारे में नहीं कहा गया। यह ऐसे ही हो गया। मुझे संदेह हो गया। आखिर चार लोग बैठे। सारी चीजों पर चर्चा हुई लेकिन पूरे प्रोग्राम में बोफोर्स गायब है, सैंट किट्स गायब है, जे.एम.एम. गायब हैं, शुगर स्कैंडल गायब हैं, पी.एस.यू. डिसइनवैस्टमैंट स्कैम गायब है। जिस-जिस का ढिंढ़ोरा पीट कर चुनाव में गये थे, नरसिंह राव ऐपिटोम आफ करप्शन की चार्ज शीट निकाल कर चुनाव में गये थे, आज उसके ऊपर एक शब्द भी नहीं है। यूरिया स्कैम पर प्रधान मंत्री कहते हैं

[अनुवाद]

कानून अपना काम करेगा।

[हिन्दी]

कोई बचेगा नहीं। केवल मुक्के मार कर कह देने से यह नहीं होगा। आचरण क्या बोलता है, यह देखने वाली बात है। आज के युरिया स्कैम में अफसर पकड़े गये लेकिन दोनों के रिश्तेदार अभी नहीं पकड़े गये। पांच दिन का समय दिया गया। आखिर क्यों? इसलिये कहती हूं कि यह साझेदारी साम्प्रदायिकता के नाम पर नहीं हुई है। यह साझेदारी एक दूसरे को माफ करने के सिद्धांत के नाम पर हुई है।

राम विलास पासवान जी कहते हैं कि यह सरकार चलेगी। आज यहां कहा जाता है कि यह सरकार चलेगी नहीं दौड़ेगी। वह 5 साल तक रहेगी ... **(व्यवधान)** मेरे नेता ने तो नहीं कहा। पहला बयान बीजू पटनयाक जी का आया।

[अनुवाद]

बीजू पटनायक जी ने कहा था कि यह सरकार नहीं चलेगी।

[हिन्दी]

वह किस घटक के हैं? भाजपा के नहीं है। आचार्य जी का बयान आया।

[अनुवाद]

बसुदेव आचार्य जी ने कहा कि यह सरकार छः माह भी नहीं चलेगी।

[हिन्दी]

वह किस सरकार के हैं? वह भाजपा के नहीं हैं। नरसिंह राव जी के हवाले से खबर छपी ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आपने आचार्य जी का नाम लिया है। वह खड़े हैं।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : महोदय उन्होंने मेरा नाम लिया है कि मैंने यह कहा है कि यह सरकार छह महीने से अधिक नहीं चलेगी। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ऐसा बयान मुझसे जोड़ा गया है क्योंकि मैं न तो किसी रिपोर्टर से मिला और न ही मैंने कोई बयान दिया। मैंने 5 जून को इस खबर का खंडन कर दिया था। इसलिए उन्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए कि मैंने कोई ऐसा बयान दिया है।

सभापति महोदय : आपने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। अब कृपया आप बैठ जाइये।

(व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : वह मेरा नाम कैसे ले सकतीं है जबकि मैंने इस बात का खंडन कर दिया है?

सभापति महोदय : ठीक है, आपकी बात दुरस्त है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : अगर ये डिनाई करते हैं तो ठीक है तो मुझे करेक्ट करने की जरूरत नहीं है क्योंकि जब पहला स्टेटमेंट आया तो उसका जिक्र मैंने किया और जब डिनाई किया तो उसका जिक्र इन्होंने कर दिया। दोनों चीजें रिकार्ड पर आ जायेंगे। श्री नरसिंह राव के हवाले से कहा गया कि चुनाव के लिये साठ महीने से एक साल के बीच में तैयार रहना चाहिये। यह बयान बीजेपी के तरफ से नहीं गया है। अन्तर्विरोधों के साथ जो सरकार चल रहीं है, क्या साझा श्री एन.डी. तिवारी और मुलायम सिंह यादव के बीच है, मैं यह पूछना चाहती हूं, क्या बीजू पटनायक और जे.बी. पटनायक के बीच में साझा है? चारे और खाद के अलावा क्या साझा है राम लखन सिंह यादव और लालू यादव के बीच में? ममता बनर्जी और सोमनाथ बनर्जी में क्या सांझा है, मैं यह भी पूछना चाहती हूं। उत्तराखंड की महिलाओं के सम्मान का सौदा करके एन.डी. तिवारी क्यों मुलायम सिंह यादव के बगल में बैठे हुये हैं? तमिलनाडु के हितों को अनदेखा करके करूणानिधि ने श्री देवेगौड़ा को नेता क्यों स्वीकार किया? अपने घावों की पीड़ा को भूलकर ममता जी श्री सोमनाथ जी के साथ मतदान कैसे कर रही है?

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता) : सभापति जी, मुझे जब मुझे बोलना होगा, टाईम मिलेगा तो जरूर बोलूंगी...

सभापति महोदय : ठीक है, ममता जी, आपकों एडवांस में बोलने के लिये नोटिस देने की जरूरत नहीं है। आप इनको पहले बोल लेने दीजिये। आपका नाम आपकी पार्टी की तरफ़ से आयेगा तो बोल लीजियेगा।

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, मैं ये नाम इसलिये ले रही हूं कि मैं बता देना चाहती हूं कि वह दृश्य जस का तस मुझे आज भी याद है और वह मेरी आंखों में बसा हुआ है। मैं राज्य सभा की दर्शक दीर्घा से इस सदन में नरसिंह राव सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का मतदान देख रही थी कि उसी समय ममता जी को व्हील चेयर पर लाया गया। वह उस समय चोटो के कारण बुखार से कांप रही थी। बगल में बैठी हुई दो महिला सांसदों ने इनको लाल कम्बल ओढ़ा रखा था। मैं वहां बैठी हुई कम्युनिस्टों की हिंसक प्रवृत्ति को कोस रही थी। मुझे मालूम है कि ममता जी के स्वर बहुत मुखर होते हैं लेकिन हम उनके विरोध के अधिकार को मान्यता देते हैं और उनके विरोध के अधिकार को स्वीकृति देते हैं और हम उनकी आवाज को कैद करने के लिय उन पर हमला नहीं करते हैं। इसलिये मैं ममता जी से पुछना चाहती हूं कि क्या इस सदन में सीपीएम के साथ बैठकार मतदान करेंगी और पश्चिमी बंगाल में विरोध की राजनीति करेंगी? यह कैसी सांझ है, यह कैसा गठबंधन है? अन्तर्विरोधों से भरा हुआ ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : सुषमा जी, आप कितना समय लेंगी?

श्रीमती सुषमा स्वराज : अभी तो हमारी पार्टी का बहुत समय है और अभी अटल जी के लिए बहुत समय छोड़ूंगी। हां, जो पीज का समय गया है, वह काट दीजिये क्योंकि मुझे काफी समय के लिये मौन खड़ा रहना पड़ता है। जहां तक अंतर्विरोधों का ताल्लुक है, केवल इस तरह की शख्सियतों का ही नहीं, बल्कि इनके कार्यक्रमों में भी अन्तर्विरोध है उनका तो कहना ही क्या है?

सभापति महोदय : आप अपनी पार्टी की समय सीमा के अंदर ही समाप्त करें।

श्रीमती सुषमा स्वराज : हर पार्टी के सदस्य ने अपने समय से दुगना समय लिया है। मेरी पार्टी का काफी समय बकाया है। क्यों ये लोग उतावले हो रहे हैं? कोई बात गलत नहीं कह रही हूं, कोई बात तथ्यों से परे नहीं कह रही हूं। सभापति महोदय, मैं जिक्र कर रही थी केवल इनके व्यक्तियों में ही नहीं, इनके कार्यक्रमों में भी अन्तर्विरोध झलकता है, वह तो माशा अल्लाह है। जब इनका मिनिमम कामन प्रोग्राम आया तो उसे मैंने आदि से अंत तक पढ़ा।

अपराह्न 5.00 बजे

एक बार मुझे लगा कि कुछ गलत पढ़ा गया, यह हो नहीं सकता। मैंने उसको दोबारा पढ़ा और पढ़ने के तुरन्त बाद मेरे मुंह से निकला वाह! भारत के कम्युनिस्ट साथियों, लेनिन से येल्तसिन तक का सफर एक ही सप्ताह में पूरा कर लिया?

श्री सोमनाथ चटर्जी : इतना सोचते हो तो अपने लिये सोचिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, कोआलिशन के कंस्ट्रेण्ट्स मैं समझ सकती हूं। कंस्ट्रेण्ट्स होते हैं, मजबूरियां होती है। हुछ चीजों को बरकरार रखना पड़ता है और कुछ चीजों में साझेदारी रखनी पड़ती है। मगर कोई शीर्षासन करके कलाबाजी खा जाएगा इसकी उम्मीद नहीं थी। सभापति जी, इसमें लिखा है कि इंश्योरेश सेक्टर का निजीकरण कर दिया जाएगा और फौरेन कंपनियों के लिए खोल दिया जाएगा। हमें हैरानी हुई क्योंकि एक साल पहले की बात मुझे जस की तस याद थी। कहां गए चतुरानन मिश्र?

एक माननीय सदस्य : बैठे हैं।

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, मैं आपके माध्यम से बताना चाहती हूं कि मैं राज्य सभा में याचिका की अध्यक्षा थी। हमारी समिति के सामने एक याचिका प्रस्तुत की गई जिसमें यह लिखा गया था भारतीय जीवन बीमा निगम और सामान्य बीमा निगम इन्श्योरेन्स सेक्टर का जो प्राइवेटाइज करने की एक सिफारिश मल्होत्रा कमेटी की तरफ से आई है, वह लागू न की जाए। यह थी वह पैटीशन और एक एमपी को पेटीशन काउंटरसाइन करनी पड़ती है। यह संयोग की बात है कि चतुरानन मिश्र राज्य सभा से मेरे साथ लोक सभा में आए हैं, दो तीन दिन बाद शायद कैबिनेट के मंत्री भी बनने वाले हैं। मैं आपको चौका दूं यह बात कहकर कि वह पेटीशन किसी और ने नहीं बल्कि चतुरानन मिश्र ने काउंटरसाइन की थी। मुझे कहा गया था कि अगर ये रिपोर्ट इंप्लीमेंट कर दी गई तो ये पेटीशन इनफ्रक्चुअस हो जाएगी इसलिए कम से कम इंटरिम डायरेक्शन सरकार को दी जाए कि यह रिपोर्ट इंप्लीमेंट नहीं हो। याचिका समिति की अध्यक्षा के नाते मैंने सरकार को डायरेक्शन दी थी कि जब तक इस कमेटी की रिपोर्ट न आ जाए तब तक मल्होत्रा कमेटी की सिफारिशें लागू ने की जाएं और हम जल्दी इस कमेटी की रिपोर्ट देंगे। याचिका समिति ने इस याचिका पर रिपोर्ट देने के लिए सारी पोलिटिकल पार्टीज के लोगों को बुलायां। सारे राजनीतिक दल के प्रतिनिधि आए थे।

[अनुवाद]

श्री ई. अहमद : सभापति महोदय, मेरा व्यवस्था का एक प्रश्न है **(व्यवधान)**।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं सदन में पेश की गई रिपोर्ट से बोल रही हूं।

[अनुवाद]

श्री ई. अहमद : यह उचित नहीं वह उस कमेटी की सभापति थीं। **(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं याचिका समिति के 102 वें प्रतिवेदन का उल्लेख कर रही हूं।...**(व्यवधान)**

श्री ई. अहमद : महोदय, माननीय सदस्या उस प्रतिवेदन का उल्लेख नहीं कर रही हैं। माननीय सदस्या इस बात का उल्लेख कर रही हैं कि क्या किसी माननीय सदस्य ने उस याचिका पर हस्ताक्षर किये थे। मेरे अनुसार यह उचित नहीं है**(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह प्रतिवेदन में है ...**(व्यवधान)**

श्री ई. अहमद : आप उस प्रतिवेदन का उल्लेख अवश्य कर सकती हैं किन्तु आप यह नहीं बता सकती हैं कि क्या किसी सदस्य ने उस पर हस्ताक्षर किये थे या नहीं ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आपके व्यवस्था के प्रश्न में कोई मुद्दा नहीं है। कृपया बैठ जाईए।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैंने यह कहा है कि डिफरेण्ट पोलिटिकल पार्टिज को बुलाया गया था। इस प्रतिवेदन में लिखा है—

[अनुवाद]

"समिति ने इस मुद्दे पर विभिन्न राजनैतिक दलों के विचार सुने।"**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : वे उनकी पार्टी को दिये गये समय सीमा के अन्तर्गत ही बोल रही हैं।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : एक भी चीज गलत नहीं बोल रही हूं।

सभापति महोदय : उनकी पार्टी का बहुत ज्यादा समय बचा हुआ है।

[अनुवाद]

श्री सुरेश कलमाडी : महोदय, उनके व्यवस्था के प्रश्न पर आपका विनिर्णय क्या है?

सभापति महोदय : कलमाडी जी, मैंने इस व्यवस्था के प्रश्न को अस्वीकार कर दिया है कृपया बैठ जाइए।

श्री ई. अहमद : वह उस समिति के एक सदस्य के व्यवहार के बारे में बोल रही हैं।...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, मैं एक-एक शब्द रिपोर्ट में से पढ़ रही हूं मैंने यह कहा कि कमेटी ने डिफरेण्ट पोलिटिकल पार्टीज को बुलाया था। यह रिपोर्ट में लिखा है—

[अनुवाद]

"समिति ने इस मुद्दे पर भी विभिन्न राजनैतिक दलों के विचार सुने।"

[हिन्दी]

आगे जिसने जो कहा है वह रिपोर्ट में से पढ़ रही हूं। 102वीं रिपोर्ट जो सदन के पटल पर मैं रख चुकी हूं, जो पब्लिक डाक्यूमेण्ट है, जिसे हिन्दुस्तान का कोई नागरिक पढ़ सकता है, आप भी पढ़ सकते हैं, उसमें से रेफर कर रही हूं। मैंने सब पोजिटेल पार्टीज को बुलाया था। अध्यक्ष जी, इस समिति के सामने...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : ये ठीक बात है। कमेटी की मीटिंग में क्या चर्चा हुई उसको कोई नहीं बोल सकता है। लेकिन जो रिपोर्ट सदन में ले लिया गया है, उसको रेफर कर सकते हैं, उसको क्वोट कर सकते हैं। यह सिम्पल बात है। आप सब पुराने सदस्य हैं और अनावश्यक समय बरबाद कर रहे हैं। अगर रिपोर्ट सदन में ले की जा चुकी है और उसको रेफर कर रहे हैं तो मैं उनको कैसे रोक सकता हूं।

[अनुवाद]

एक माननीय सदस्य : (व्यवधान) वे राज्य सभा के एक प्रतिवेदन का उल्लेख करती हैं। वह तो उससे भी आगे जा रही हैं। **(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : एक-एक शब्द मैं नहीं पढ़ रहीं हूं इस कमेटी के सामने कांग्रेस के प्रतिनिधि आये, हमारी भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि आये, सी.पी.आई., सी.पी.आई.एम. के प्रतिनिधि आये, जनता दल के प्रतिनिधि आये, स.पा. के प्रतिनिधि आये और चंद्र शेखर जी का जो जनता दल था इनके प्रतिनिधि आये।

सभापति महोदय : मैंने तो पहले ही निर्देश दे दिया है। आप मेरी बात सुन भी तो नहीं रहे हैं

(व्यवधान)

श्री राम नाईक : मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है कि आपने दो दफा रूलिंग दी है कि आपने उनके बारे में जो निर्णय देना है, वह दिया है। उसके होते हुए बार-बार व्यवधान डाल रहे हैं। ऐसे व्यवधान लाना क्या ठीक है।

सभापति महोदय : अब आप व्यवधान मत डालिए, बैठ जाइये। वे तो व्यवधान ला ही रहे हैं उनको तो ओवररूल कर दिया है। अब आगे बढ़िये।

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, मैंने बताया कि ये सब प्रतिनिधि आये। इन्होंने अपने-अपने व्यू प्वाइंट रखे। केवल कांग्रेस के श्री रामचंद्र जिचकर ने यह कहा कि यह निजीकरण के लिए खोल देना चाहिए और बाकी तमाम पार्टियों ने इसका विरोध किया। अब मैं आपके सामने पढ़ना चाहती हूं

[अनुवाद]

"सी.पी.आई. (एम) के प्रतिनिधि श्रीमती सरोज चौधरी आपकी पार्टी के सोमनाथ जी—और सी.पी.आई. के प्रतिनिधि श्री वाई.डी. शर्मा ने एक संयुक्त साक्ष्य में समिति के समक्ष बताया था कि बीमा बाजार कहीं और विकसित देशों में मंहगा है। वहां से आने वाली कम्पनियां एक बार वहां जम जाती है तो उनको वहां बड़ा भारी फायदा होगा और विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाएं इस समय यहां उपलब्ध हैं वे उपेक्षित हो जायेंगी।"

उनका तर्क यह था कि निजी कम्पनियां शुरू में अत्यधिक लाभप्रद योजनाएं शुरू होगी और स्वयं उनके स्थापित हो जाने के बाद वे उद्योग पर एकाधिकार जमा सकेंगी। उन्हें आशंका थी कि इससे अस्वास्थ्य प्रतियोगिता बढ़ेगी चूंकि वर्तमान कम्पनियां उन बहुराष्ट्रीय बड़ी कम्पनियों की प्रतियोगिता में रखी नहीं रह सकेगी। उन्होंने कहा कि यहां बीमा क्षेत्र का निजीकरण नहीं किया जाना चाहिए।"

[हिन्दी]

ये उनका बिल्कुल कांक्रीट करके हमने इसमें किया। ऐसी पी. आई. और सी.पी.आई.एम. से या/मुलायम सिंह जी की पार्टी से रघु ठाकुर आये।

[अनुवाद]

"समाजवादी पार्टी के श्री रघु यादव का यह विचार था कि आई. सी. जैसे मुनाफा कमाने वाले संगठन का निजीकरण नहीं किया जाना चाहिए। सेवा क्षेत्र में अकेला मुनाफा ही आदर्श नहीं होना चाहिये बहुत बार सेवा क्षेत्रों में संगठनों ने नुकसान उठाया है लेकिन ऐसे समय में हल यह था कि ऐसे नुकसान के कारण का पता लगाया जाये तथा इसमें संशोधन किया जाये और इसका निजीकरण न किया जाये।"

सभापति जी, प्रीमियर घटक इस यूनाइटेड फ्रंड का जनता दल है, जिनकी सरकार है।...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

सभापति जी, प्रीमयर घटक इस यूनाइटेड फ्रंट का जनता दल है, जिनकी सरकार है। ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आप कुछ कहना चाहते हैं। आप मिनिस्टर है। अगर कोई ऑब्जेक्शनेबल बात है तो बताइये। अगेन्स्ट द रूल है तो बताइये। वह एक ऐसा डाकूमेंट रेफर कर रही है जो हाउस में ले किया जा चुका है। इसमें क्या है, प्रोसीडिंग्ज उसी को उन्होंने बताया उस प्रतिवेदन को कोट कर रही हैं। मैं क्या कर सकता हूं। ये तो आजाद हैं, ये कोट कर सकती हैं। आप कोई रूल बतायें, जिससे वह कोट नहीं कर सकें। मैं उनको रोक दूंगा। आप कोई कानून बतायें।

श्रीमती सुषमा स्वराज : महोदय, मैं चाहूंगी प्रधान मंत्री ध्यान दें। मैं आपके दल की बात कर रही हूं।

[अनुवाद]

माननीय प्रधान मंत्री जी, मैं कृपया आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूं। अब मैं जनता दल प्रतिनिधि को उद्धृत कर रही हूं।

[हिन्दी]

सभापति महोदय : सुषमा जी एक मिनट।

श्री बी.के. गडवी : आप 354 पढ़िये। काउंसिल की बात यहां नहीं हो सकती है।

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह काउंसिल की बात क्या यह पिटीशन कमेटी की रिपोर्ट है।

श्री बी.के. गडवी : काउंसिल का मतलब यह राज्य सभा की प्रासीडिंग्ज के बारे में बात कर रही हैं। प्रीवियस परमीशन नहीं लिया हुआ है।

सभापति महोदय : ये कहां रेलेवेट है, यह रिपोर्ट है।

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति महोदय, अब मैं इस यूनाइटेड फ्रंट की प्रीमियर घटक जनता दल के रिप्रेजेंटेटिव की बात पढ़ रही हूं जिनकी सरकार है, जिनके प्रधान मंत्री हैं।

[अनुवाद]

और समिति के समक्ष श्री मधु दंडवते जैसे व्यक्ति उपस्थित हुए, उनका साक्ष्य इस प्रकार है :—

> "जनता दल का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री मधु दंडवते ने कहा कि दुनिया भर में महसूस किया गया कि जिन क्षेत्रों में सामाजिक दायित्व निभाने होते हैं उनके निजीकरण से इस उद्देश्य को प्राप्त नहीं किया गया। जब हम सरकारी क्षेत्र के बारे में सोचते हैं तो सामाजिक दायित्व पूर्ण करने की आवश्यकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है तथा एक ऐसा क्षेत्र बीमा क्षेत्र है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया जिस क्षेत्र के सामाजिक दायित्व हों और जिसके विकास पर ध्यान देना पड़ता हो उसे सरकारी क्षेत्र में ही रखा जाना चाहिए। जी.आई.सी. एक ऐसा ही क्षेत्र ही और उसके निजीकरण के किसी भी प्रयास की देश के सभी लोग विरोध करेंगे।"

[हिन्दी]

मैं यहां प्रधान मंत्री जी, सोमनाथ जी और चतुरानन मिश्र को सुनाकर अपनी बात दोबारा कहना चाहूंगी ...**(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपकी पार्टी की पॉलिसी क्या है?

श्रीमती सुषमा स्वराज : हमारी पार्टी की पॉलिसी है कि भारतीयों के लिये खोल दो और फौरनर्स के लिये मत खोला लेकिन आपकी पॉलिसी क्या है?

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपको इस बारे में खुश होना चाहिए। आप चिंता क्यों करती हैं?

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : अपने सत्ता की अंधी दौड़ में किस तरह की कलाबाजी खाई ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपको इस कार्यक्रम से खुश होना चाहिए।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं इस वाक्य को फिर से दोहराना चाहती हूं, फिर से कहना चाहती हूं :

[अनुवाद]

उन्होंने यह भी कहा,—

> "जी आई सी एक ऐसा क्षेत्र है और इसके नीजिकरण के किसी भी प्रयास का जनता का हर वर्ग विरोध करेगा।"

[हिन्दी]

मैं इस वाक्य को केवल इसलिये पढ़कर बता रही हूं कि सत्ता की दौड़ में मदहोश होकर आदमी कितनी उलटबाजी दिखा सकता है। पचास साल तक जिन नीतियों को लेकर आपने राजनीति की, आज राजनीति को पूरी तरह से, एब्सोल्यूटली आप छोड़ देंगे, वह भी सिर्फ इसलिये कि सत्ता लोलुपता की दौड़ में या एन्टी बी.जे.पी. स्टांस के अंदर आपको कांग्रेस के साथ बैठना है, आपको जनता दल के साथ बैठना है ...**(व्यवधान)**

इसलिये मैं आपसे कह रही हूं कि सदन में आप इसे छोड़ सकते हैं लेकिन जब बाहर अपने अपने क्षेत्रों में जायेंगे तो आपके कार्यकर्त्ता इसे नहीं छोड़ने देंगे और यह अंतर्विरोध आपकी सरकार को गिराने का कारण बनेगा।

राम विलास जी और शरद यादव जी अभी कह रहे थे कि यह सरकार तो चलेगी क्योंकि नरसिंह राव जी ने आज कह दिया है लेकिन नरसिंह राव जी तो मौन साधे बैठे हैं, वही भूमिका निभा रहे हैं लेकिन शरद पवार जी, शरद पवार जी की नहीं **(व्यवधान)**...* की भूमिका निभा रहे हैं।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : इसे कार्यवाही वृत्तान्त में शामिल नहीं किया जायेगा।

---

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : इसमें मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा है।

[अनुवाद]

श्री चन्द्र शेखर : इसमें आपत्तिजनक क्या है?

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह ठीक है। मान्यवर चन्द्र शेखर जी, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : अब आप कन्क्लूड कीजिये।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : वह एक्सपंज हो चुका है, आप बैठिए। एक्सपंज किया जा चुका है।

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं समाप्त कर रही हूं और अपने भाई शरद यादव से कहना चाहती हूं कि यह प्रयोग नया नहीं है बल्कि यह प्रयोग आपके गुरू राज नारायण जी पहले कर चुके हैं जब 20 दिन के अंदर कांग्रेस ने समर्थन वापस ले लिया था। हमारे आदरणीय नेता चन्द्र शेखर जी यहां बैठे हैं, चार महीने से उनसे समर्थन वापस ले लिया था फिर आप किस आधार पर विश्वास कर रहे हैं, आपके विश्वास का आधार तो होना चाहिये। क्या आपने इतिहास से कुछ नहीं सीखा ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : देश को वाद-विवाद के स्तर के बारे में जानना चाहिए।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं कांग्रेस की बात क्या करूं, मैं भाई शरद यादव से पूछना चाहती हूं कि समाजवादी इतिहास भी तो है।

अभी शरद यादव जी डा. लोहिया की बात कर रहे थे लेकिन समाजवादियों के पास डा. लोहिया की दो रैडीमेड उक्तियां सरकार बनाने और सरकार गिराने के लिये हर समय मौजूद है। डा. लोहिया ने कहा था कांग्रेस को हराने के लिय शैतान से भी हाथ मिलाना चाहिये। दूसरी बात उन्होंने कही थी कि सुधरो या टूटो। लेकिन आप तो कांग्रेस की जगह भाजपा को फ्रेम में रखकर शैतान से हाथ मिलाने की वकालत कर रहे हैं।

मगर थोड़े ही दिन की बात है, जब होगा "सुधरो या टूटो"। हो भी क्यों न शरद यादव, सही बात है, 65 लाख वाले मंत्रिमण्डल में और 3 लाख वाले बण्डल में। तो क्यों नहीं बोलेंगे? निश्चित तौर पर चंद दिनों की बात है जब यह होगा, "सुधरो या टूटो"। इसलिए मैं एक बात कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगी कि ये जो कह रहे हैं कि सरकार पांच साल चलेगी, पांच साल चलेगी —

[अनुवाद]

गीत शुरू होने से पहले ही सिराया निखर जायेगा' ने अपना-अपना राग अलापने के आदी हैं।

[हिन्दी]

यह जो सामूहिक मण्डली एक समूह गीत गाने के लिए आई है यह अपना-अपना राग अलापने की इतनी आदी है कि गीत शुरू होने से पहले ये सिराटा बिखर जाएगा। लेकिन जितने दिन यह देश आपक हाथ में रहे ईश्वर इस देश की रक्षा करें, यह प्रार्थना करते हुए मैं इस विश्वास मत का विरोध करती हूं।

श्री कांशीराम (होशियारपुर) **:** सभापति महोदय, मैं इस विश्वास मत का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। इस विरोध के कई कारण हैं। सबसे पहला कारण तो यह है कि इस युनाइटेड फ्रंट के कई घटकों के खिलाफ अभी-अभी हम लोगों ने चुनाव लड़ा है। उस चुनाव में हम लोगों ने उनके खिलाफ बहुत सी बातें कही है। उन्होंने भी हमारे खिलाफ बहुत सी बाते कही है। चुनाव खत्म होने के बाद ये विरोध की बातें खत्म नहीं हुई है।

विरोध करने का मेरा दूसरा कारण यह है और बहुत से सदस्य पहले कह चुके हैं कि यह जो युनाइटेड फ्रंट है यह बहुत से घटकों से मिलकर बना है। उसमें हर किस्म के घटक की हर किस्म की अपनी शैली है। मेरा ऐसा विश्वास है कि यह युनाइटेड फ्रंट इस देश में गुंडागर्दी को रोक नहीं सकेगा। हम लोग इनमें से कुछ घटकों की गुंडागर्दी का शिकार हो चुके हैं।

इस सदन में मायावती का नाम लिया गया। मायावती को 2 जून 1995 को एक कमरे में बंद होना पड़ा। उसकी बिजली काट दी गई, पानी काट दिया गया। पूरे उत्तर प्रदेश से तीन हजार गुण्डे बुलाकर उनको मारने का प्रयत्न किया गया। 2 जून 1995 को यह घटना हुई और 3 जून 1995 को इस सदन में उसके बारे में चर्चा हुई। मायावती एक साधारण महिला नहीं है। उनके पीछे 282 एम.एल.ए. थे। 282 एम.एल.ए. बी.जे.पी., कांग्रेस, जनता दल सी.पी.आई. और स्वयं बी. एस.पी., इन पांच पार्टियों के थे। उन्होंने आकर यह अपील की कि उत्तर प्रदेश में गुंडागर्दी बहुत बढ़ गई है।

आपकी साझा सरकार है। इस गुंडागर्दी को रोकने के लिए आपको कुछ प्रयत्न करना चाहिए। उनके कहने से मैं सहमत हुआ। हमने सोचा कि मुख्य मंत्री को बदलना चाहिए और तब एक दलित महिला को मुख्य मंत्री बनने का मौका मिला। यह जो युनाइटेड फ्रन्ट है, यह सामाजिक न्याय की बात करता है। ये लोग सामाजिक न्याय की बातें तो करते हैं, लेकिन सामाजिक न्याय के आधार पर जब एक दलित महिला को मुख्य मंत्री बनने को मौका मिला, तो उस महिला को मारने के लिए तीन हजार गुंडे लखनऊ बुलाए गए। पुलिस की शक्ति का दुरूपयोग किया गया। ये सारी बातें हमारे सामने हैं। इसलिए मेरा ऐसा विश्वास है कि ये लोग कहते एक बात हैं और करते दूसरी बात हैं।

कहते हैं सामाजिक न्याय, लेकिन काम करते हैं सामाजिक अन्याय का। सामाजिक न्याय की बात करने वाले लोग जब सामाजिक अन्याय करते हैं, तो हमें ऐसा लगता है कि इस देश में जब ऐसे लोग सरकार चलाएंगे, तो गुंडागर्दी नहीं रूक सकती है।

दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि अभी हम लोग इस देश में डैमोक्रेसी की बात करते हैं और कहते हैं कि इंडिया की डैमोक्रेसी दुनिया की सबसे बड़ी डैमोक्रेसी है, लेकिन मेरा विश्वास है कि इस देश में कोई डैमोक्रेसी नहीं है। क्योंकि जिस देश में गरीबी के वोटों को खरीदा जाए, लूटा जाए, चोरी किया जाए, तो उस देश में डैमोक्रेसी नहीं चल सकती है।

सभापति महोदय, अभी शरद यादव जी ने कहा कि इस देश में उदारवादी हिन्दू और कट्टरपंथी हिन्दुओं में संघर्ष है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि हमें इन उदारवादी हिन्दुओं से बहुत खतरा है क्योंकि वे कमजोर वर्ग के लोगों को वोट नहीं डालने देते हैं। कमजोर वर्ग के हिन्दुओं को वोट नहीं डालने देते हैं। लोनी कांड अभी तक चल रहा है। इस सदन से सिर्फ 10 किलोमीटर दूर लोनी है। सात तारीख को जब वहां वोट पड़ने वाले थे और इस देश के दलित समाज के लोग इकट्ठे होकर जब अपनी पार्टी के लिए वोट डालने बूथ पर पहुंचे, तो जो वोट लूटने वाले थे, वे उनके वोट नहीं लूट पाए। इससे नाराज होकर उन वोट लूटने वालों ने उन दलितों के घरों को आग लगा दी। एक प्रधान के घर को भी आग लगा दी। हम इस देश में पंचायती-राज और ग्राम-पंचायत जैसी संस्था को ऊपर उठाने की बात करते हैं, लेकिन यहां पर हालत यह है कि एक दलित प्रधान भी अपनी मरजी से वोट नहीं डाल सकता है और अगर अपनी पार्टी को उसने अपनी मरजी से वोट डाल दिया, तो उसका घर जला दिया, उसकी दुकाने जला दी गई और आज हालत यह है कि जिस दिन से यह युनाइंटेड फ्रंट की सरकार बनी है उस दिन से वे आग लगाने वाले गुंडे बस्ती में घूम रहे हैं इसलिए कि अब हमारी सरकार आ गई है अगर किसी ने उस प्रधान की मदद की, तो उन सब लोगों के घर जला दिए जाएंगे। वह स्थान इस सदन से सिर्फ दस किलोमीटर दूर है।

इसलिए मेरा विश्वास है कि ये यूनाइटेड फ्रंट की सरकार गुंडागर्दी को खत्म नहीं कर पायेगी। मैं उन लोगों की रिप्रेजेंट करता हूं, उन लोगों की बात करता हूं जो इस देश में गुंडागर्दी के बड़े पैमाने पर शिकार हैं। उनकी तरफ से मैं यह बात कह रहा हूं। हमारे साथी यह कहते हैं कि हम इस देश में सामाजिक न्याय लाना चाहते हैं। मेरा यह विश्वास है और मैं पहले भी उनसे बहुत बार बहस कर चुका हूं कि इस देश में जब तक सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन नहीं होता है तब तक सामाजिक न्याय नहीं लाया जा सकता है। सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना और उसके आधार पर जो अर्थव्यवस्था बनी है, उसमें परिवर्तन होना चाहिए, यह बड़ा जरूरी है। जब तक व्यवस्था में परिवर्तन नहीं होता है तब तक समाज में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है।

21 जून 1990 को जनता दल की सरकार थी। सामाजिक व्यवस्था के बारे में श्री वी.पी. सिंह और जनता दल के बहुत से लोग यह तो बराबर कहते थे कि हम सामाजिक न्याय वाले लोग हैं लेकिन इस दिल्ली से 200 किलोमीटर दूर आगरा में 21 जून 1990 एक पनवाड़ी कांड हुआ। उस पनवाड़ी कांड में दलितों का बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ। उस पनवाड़ी कांड का कारण क्या था? कारण है कि दलित समाज के लोग गलियों में से अपनी शादी की बारात नहीं ले जा सकते क्योंकि इस देश की सामाजिक व्यवस्था इस एलाऊ नहीं करती है। इस देश की सामाजिक व्यवस्था कहती है कि दलित समाज के लोग गलियों में से बैंड बाजा बजाते हुए घोड़ी के ऊपर दूल्हे को लेकर नहीं जा सकते हैं। यह व्यवस्था कहती है। उस व्यवस्था के कारण वह कांड हुआ। इससे बहुत ज्यादा लोगों का नुकसान हुआ।

अध्यक्ष महोदय, उस समय दिल्ली में श्री वी.पी. सिंह प्रधान मंत्री थे। दिल्ली में जनता दल की सरकार थी, उत्तर प्रदेश में जनता दल की सरकार थी। सामाजिक न्याय का नारा लगाने वालों की दोनों जगह सरकार थी। मैंने उस वक्त भी उनसे कहा कि जब तक सामाजिक परिवर्तन नहीं होता है तब तक सामाजिक न्याय का नारा एक धोखा है। एक फरेब है। लोगों को वोट हथियाने का, लूटने का एक ढोंग है। इसलिए अध्यक्ष जी, हमारे इस किस्म के विरोध हैं। इन विरोधों के कारण हम इस सरकार में अपना विश्वास नहीं रख पाते। ...**(व्यवधान)** इसलिए यह सरकार इस देश के हित की सरकार नहीं होगी। यह बहुत सी बातें हमारे दूसरे साथियों ने कही हैं, उनको मैं रिपीट नहीं करना चाहता हूं। उनसे भी मैं सहमत हूं। जैसे चुनाव के दौरान में हमारी पार्टी के बारे में कहा गया, बहुत बड़े पैमाने पर कहा गया कि ये बहुजन समाजवादी पार्टी, ये जीतने के बाद, अपने एम. पी. जीताने के बाद ये बी.जे.पी.से मिलकर सरकार बनायेगी या कांग्रेस से मिलकर सरकार बनायेगी। कांग्रेस के खिलाफ बहुत कुछ कहा गया। लोगों को वोटरो को खासकर मुसलमान भाइयों को गुमराह करने के लिए कहा गया कि बाबरी मस्जिद को गिराने में कांग्रेस का बड़ा हाथ है, भारतीय जनता पार्टी का दोष कम है। कांग्रेस का दोष ज्यादा है और ऐसी कांग्रेस के साथ बहुजन समाजवादी पार्टी मिलकर सरकार बनायेगी।

लेकिन हुआ क्या? उसी कांग्रेस पार्टी के साथ मिलकर इन लोगों ने सरकार बनाई है, जिस कांग्रेस पार्टी का इन्होंने डटकर विरोध किया और उत्तर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी को कहीं का नहीं छोड़ा, उस कांग्रेस पार्टी के साथ मिलकर आज ये लोग सरकार बना रहे हैं। ...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : कांशीराम जी, कनक्लूड किया जाए।

श्री कांशी राम : एक मिनट में करता हूं। मैं तो डिसिप्लिन में रहने वाला आदमी हूं, यदि आप चाहें तो वैसे ही बैठ जाता हूं।

सभापति महोदय : नहीं, कागज के हिसाब से 8 मिनट का टाइम है, हम 15 मिनट दे चुके हैं, इसके बाद आपको कहा है।

श्री कांशी राम : जिस पार्टी के हमारे जितने सदस्य हैं, वे लगभग एक घंटा बोलकर गए हैं। श्री मिश्रा जी, अभी-अभी बोलकर गए हैं। वे एक घंटा बोले हैं। हमारे भी उतने ही सदस्य हैं।...**(व्यवधान)** इसलिए मैं सदन का ज्यादा समय न लेकर अपनी बात समाप्त करूंगा।

ऐसी सरकार में हमारा कोई विश्वास नहीं है, यह कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

(प्रो. रीता वर्मा पीठासीन हुईं)

अपराह्न 5.32 बजे

श्री आनन्द मोहन (शिवहर) : सभापति महोदय, मैं विश्वास मत के खिलाफ खड़ा हुआ हूं। मैं नया सदस्य हूं, विधान सभा का अनुभव है लेकिन लोक सभा का यह पहला अनुभव है। जहां अटल जी जैसे लोग हों, जहां माननीय देवेगौड़ा जी हों, जहां मुलायम सिंह जी हों, जहां बड़े भाई शरद जी हों, जहां हमारे आदरणीय अभिभावक, गुरुवर चन्द्र शेखर जी हों, हमारी पार्टी के नेता, अध्यक्ष माननीय जार्ज फर्नान्डीज और नीतिश जी हों, ऐसे बड़े लोगों के बीच यह पहला अवसर है जब मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं नया सदस्य होने के नाते माननीय वरिष्ठ सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे हमें प्रोत्साहन दें क्योंकि हमारी यह सदियों पुरानी परम्परा रही हैं कि जब भी कोई बड़ी सलाह ली जाती है तो घर के सबसे छोटे और नए सदस्यों को पहले अवसर मिलता है।

आज की बहस के दौरान सबसे ज्यादा चर्चा का विषय साम्प्रदायिकता रहा। बड़ी लम्बी-लम्बी बातें की गईं। हर चुनाव में लाल, हरी, पीली झंडियां लेकर लोग इन्कलाब की बातें करते हैं, क्रान्ति की बातें करते हैं, व्यवस्था परिवर्तन की बातें करते हैं, साम्प्रदायिक सद्भाव की बातें करते हैं। ऐसे में मुझे नीरज की कुछ पंक्तियां याद आती हैं—

और यहां इन्क्लाब इन्क्लाब नहीं पैसा है, सौदा है
इसकी दुकानें हैं, हाट, बाजार हैं
जिनमें वह कपड़ों के मोल-भाव बिकता है
चांदी और सोने के इसकी तराजू में
आदमी से लेकर ईश्वर तक तुलता है
और यहां दिल-दिल के बीच दीवारे हैं
जात-पांत, रंग-वर्ण, देश-काल वाली
बड़ी ऊंची मीनारें हैं
इसको गिराना आसान नहीं
यहां लगे बड़े-बड़े पहरे हैं
क्योंकि मठ, मस्जिद और गिरजाघर
जो पंडित और पादरी, शेख और मौलवी
मजहब के जितने भी ठग ठेकेदार हैं
सबके सब इन्हीं के सहारे तो ठहरे हैं
इसे लांघ जाने की सजा मौत पाना है
ईसा की भांति क्रास के ऊपर चढ़ जाना है।

"गांधी की तरफ गोली खाकर मर जाना है,
मरण क्या तुझको स्वीकार है,"

मैं सदन से यह सवाल करूंगा:

"मरण क्या तुझको स्वीकार है,
अर्थी उठाने खुद अपनी तैयार है।" **(व्यवधान)**

पप्पू चुपचाप रहो। हमें तुमसे नहीं सीखना है। बहुत हो गया। तुमसे हम पूर्णियां आकर समझ लेंगे।

"मरण क्या तुझको स्वीकार है,
अर्थी उठाने खुद अपनी तैयार है।"

अगर हां, तो निश्चित तौर पर देश में परिवर्तन आयेगा। क्रान्ति की लम्बी चौड़ी बातें निश्चित तोप पर क्रान्ति की गंगा आसमान से उतरेगी और जो दलित की बात हो रही है, जो गरीबी की बात हो रही है, जो पद-दलितों के उत्थान की बात हो रही है, जो दूसरी सार्थक बातें हो रही हैं, सब सार्थक होगी। लेकिन आज देखने को क्या मिल रहा है? वास्तविकता भिन्न है,

"कुपथ-कुपथ रथ दौड़ता जो, पथ-निदेशक वह है,
लाज लजाती जिसकी कृति से, धर्ति उपदेशक वह है।"

आज धर्म निरपेक्षता की बातें हो रही है। हम पर इल्जाम लगता है, जार्ज फर्नान्डीज पर इल्जाम लगता है, आदरणीय चन्द्र शेखर जी पर इल्जाम लगते हैं, नीतीश भाई पर इल्जाम लगते हैं, सम्पूर्ण समता पार्टी पर इल्जाम लगा कि हम कम्युनल ताकत की गोद में बैठ गये। मैं क्रान्तिकारी मित्रों से पूछना चाहता हूं कि 1967 में गैर कांग्रेसवाद के नाम पर, जब लोहिया जी ने गैर-कांग्रेसवाद का नारा दिया, तब जनसंघ के साथ आपने किस मुंह से 9-9 प्रान्तों में सरकार चलाई? मैं उन मित्रों से पूछना चाहूंगा, जो हिन्दुस्तान के विभाजन के जिम्मेदार हैं, मुस्लिम लीग उनके साथ केरल में जिनकी सरकार चली? मैं सैकुलरिज्म की बात करने वाले उन लोगों से पूछना चाहता हूं कि ललथन डलका, जो मुख्य मंत्री हुआ करते थे और जिन्होंने ईसाई स्टेट का नारा दिया, वह किस पार्टी के थे? मैं ऐसे लोगों से पूछना चाहूंगा, मैं वी.पी. सिंह जो से पूछना चाहूंगा, अगर वह नहीं हैं तो शरद जी से, उनकी हमारे जनता दल के मित्रों से पूछना चाहूंगा कि भाजपा के समर्थन से न केवल 1967 में, बल्कि 1977 में और फिर 1989 में आप चुने गये थे, आप कहते थे कि हम हुकूमत में नहीं आयेंगे, किसी पार्टी के अध्यक्ष नहीं बनेंगे, प्रधान मंत्री नहीं बनेंगे, मैं मिथिलांचल से आता हूं, मैथिली में कहावत है :

"नय खायिब, नय खायिब, खायिब भरि थारो,
नय सुतब, नय सुतब, सुतब सुतब गोरथारो।"

मतलब, नहीं खायेंगे तो नहीं खाते-खाते भी भर थाली खाएंगे और नहीं सोयेंगे तो नहीं जगह मिली तो गाय के पास सो जायेंगे। यह हुआ, इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि सैकुलरिज्म की बातें नहीं होनी चाहिए। सैकुलरिज्म की जो बातें करते हैं, उन लोगों को कम से कम

नैतिक अधिकार नहीं है, इसलिए हमारे जैसे छोटे लोगों ने भी विरोध किया था...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : मित्रों को नहीं, आप चेयर को बोलिये।

श्री आनन्द मोहन : हमारे जैसे छोटे लोगों ने विरोध किया था, तब यह तर्क दिया गया था कि बड़ा दुश्मन कांग्रेस पार्टी है और इसको खत्म करने के लिए छोटे दुश्मन से हाथ मिलाना होगा। यहां मुफ्ती मौहम्मद सईद साहब नहीं हैं, जिनके बंगले पर मैं और अखलाक अहमद जैसे छोटे लोग यह रिक्वैस्ट करने के लिए गए थे कि ऐसा मत कीजिए लेकिन वैसा हुआ और आज हमें कहा जा रहा है, इसलिए मैं लोगों से निवेदन करूंगा कि इस देश में सबों की हर मामले में वृद्धि हुई है, समस्या की वृद्धि हुई है, घोटालों की वृद्धि हुई है, जनसंख्या की वृद्धि हुई है, एक ही चीज का अकाल हुआ है, उसका नाम नैतिकता है और नैतिकता का घोर अकाल हुआ है।

सभापति महोदय : एक मिनट। शिष्टाचार को याद रखिये कि नये सदस्य की मेडन स्पीच को बार-बार इण्टरप्ट नहीं किया जाता है।

आप दस मिनट बोल चुके हैं, आप कितनी देर और बोलेंगे?

श्री आनन्द मोहन: नई सरकार के हुकूमत में आने के बाद एक संयुक्त साझा कार्यक्रम बना। उसको न्यूनतम साझा कार्यक्रम नाम दिया गया। मैं छोटा व्यक्ति हूं, यहां पर बड़े-बड़े लोग बैठे हैं। कुछ बातें हमारे प्रधान मंत्री जी ने प्रेस कांफ्रेंस में कही। मैं उसमें से कुछ यहां बताना चाहता हूं। उसमें कहा गया कि हम घरेलू उद्योग, कम प्राथमिकता वाले क्षेत्र, उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में विदेशी निवेश पर रोक लगायेंगे। यह कैसे लगायेंगे, यह मैं जानना चाहता हूं। आज मल्टी नेशनल कम्पनीज हमारे बैडरूम और बाथरूम तक में घुस आई हैं।

एक माननीय सदस्य : आपके चश्मे में भी घुस आई है।

श्री आनन्द मोहन : चश्मा हिन्दुस्तानी थाती है।

सभापति महोदय : आप अपनी स्पीच पर ही कंसंट्रेट कीजिए।

श्री आनन्द मोहन : आज आप देखें शैम्पू, साबुन, परफ्यूम, टुथपेस्ट, डिटर्जेंट, टी.वी., आफ्टर शेव, सौन्दर्य प्रसाधन और खाद्य सामग्री इन तमाम चीजों के माध्यम से ये बहुराष्ट्रीय कम्पनीज हमारे बैडरूम, बाथरूम और किचन तक में आ गई हैं, इन्हें कैसे निकालेंगे। आप लोग नई आर्थिक नीति का बड़े जोर-शोर से विरोध कर रहे थे। मैं कम्युनिस्ट पार्टी और जनता दल के साथियों से कहना चाहूंगा कि जिन लोगों ने नई आर्थिक नीति पर मनमोहन सिंह और नरसिंह राव को पानी पी-पीकर गालियां दी, उनके मुंह पर कैसे सांप बैठ गया है। आपके प्रधान मंत्री ने कहा कि हम पुरानी अर्थ-नीतियों को लागू करेंगे, चालू रखेंगे। इसलिए मैं कहना चाहूंगा चुनाव के दरमियान ये 13 दल एक दुसरे को गालियां देते रहे, हद की सीमा को पार करके, आलोचना की सीमा को पार करके, गाली-गलौच पर उतर आये, यह न्यूनतम साझा कार्यक्रम कुछ नहीं है, सिर्फ सत्ता में बने रहने का अनैतिक सहारा लिया गया है।

सभापति महोदय : आपको छः मिनट दिये थे, लेकिन आपने 12 मिनट ले लिये हैं।

श्री आनन्द मोहन : मैं अपनी बात को संक्षेप में कहकर समाप्त करता हूं। ये कौन लोग हैं, ये हवाला के लोग हैं, ये बोफोर्स के लोग हैं, ये सेंट किट्स के लोग हैं, ये जमीन घोटाला जो कर्नाटक में हुआ था, वे लोग हैं, ये यूरिया घोटाले के लोग हैं, ये चीनी घोटाले के लोग हैं और पशुपालन के लोग हैं।...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आनन्द मोहन जी आप चेयर को सम्बोधित कीजिये और जल्दी समाप्त कीजिए।

श्री आनन्द मोहन : आज यूरिया स्कैम का उद्घाटन हुआ है। बिहार में पशुपालन घोटाला हुआ, जोकि हिन्दुस्तान के इतिहास में सबसे बड़ा घोटाला है।...**(व्यवधान)**

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी (दरभंगा) : डी.एम. को मरवाने में इनका हाथ था।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : वे आपके सामने झुक नहीं रहे हैं। कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

जब आपका समय आयेगा तो जवाब दे दीजिये।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये। मैं बोल रही हूं।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये। आप जल्दी समाप्त करें।

[हिन्दी]

श्री आनन्द मोहन : हमारे समता पार्टी के लोगों ने पशु-पालन के घोटाले को सामने लाने का काम किया है...**(व्यवधान)** जो मुख्य अभियुक्त हैं...**(व्यवधान)** जग जाहिर हैं, अब नीतीश कुमार का नाम जोड़ने की कोशिश हो रही है, सं.मो. के सरकार में आने के बाद। इसलिए मैं कहना चाहूंगा...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय : जब आपका समय आएगा, तो जवाब दीजिएगा।...

(व्यवधान)

श्री आनन्द मोहन : बिहार में बहुत बड़ा घोटाला हुआ है। इसलिए हम डंके की चोट पर कहना चाहते हैं कि बंगला के

अपोजीशन की तर्ज पर किसी कीमत पर हम किसी से मांग नहीं करेंगे ...**(व्यवधान)**

अपराह्न 5.46 बजे

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आनन्द मोहन जी आप अपना भाषण समाप्त करें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं श्री आनन्द मोहन के भाषण समाप्त करने के लिए कह रहा हूं। आपने निर्धारित समय से अधिक वक्त ले लिया है।

[हिन्दी]

श्री आनन्द मोहन : अब इन के मार्क्स माननीय मुलायम सिंह जी, हमारे बड़े भाई, हो गए हैं। मार्क्स हो गए हैं मुलायम सिंह जी और कम्युनिस्ट के लैनिन हो गए हैं लालू प्रसाद। इनका कम्युनिज्म मार्क्सिज्म में बदल गया है।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब उनके बोलने में व्यवधान न करें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात समाप्त करें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह कार्यवाही-वृतान्त में शामिल नहीं किया जायेगा। श्री आनन्द मोहन जी आपको अपना भाषण समाप्त करना होगा। यह आपका पहला भाषण है। आपको बोलने का पर्याप्त समय दिया गया। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री आनन्द मोहन : हमारे चन्द्र शेखर जी ने बार-बार कहा, जार्ज साहब ने कहा यह देश गांधीवादी बातों पर चलेगा। यह देश गांधी के रास्तों पर चलेगा। स्वावलम्बन के रास्तों पर और स्वदेशी के रास्ते पर चलेगा।...**(व्यवधान)** आज बीकानेरी भुजिया नीलाम हो रही है **(व्यवधान)** नीलाम हो रही है।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया एक मिनट में अपना भाषण समाप्त कीजिये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह संसद है। आप ऐसा नहीं कर सकते हैं। कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री आनन्द मोहन : महोदय, मैं इस विश्वास प्रस्ताव का प्रतिकार और विरोध करते हुए, अपनी बात समाप्त करता हूं।

रक्षा मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव) : अध्यक्ष जी, माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो विश्वास मत का प्रस्ताव पेश किया है उसी के समर्थन के लिए मैं खड़ा हुआ हूं।...**(व्यवधान)** अध्यक्ष जी, आज आपके सामने जो बहस चली है उसी से जोड़ते हुए हम कहना चाहते हैं कि संसदीय लोकतंत्र का स्वरूप बदल रहा है।...**(व्यवधान)** हां बदल रहा है। कैसे बदल रहा है...**(व्यवधान)** पहले एक ही दल की सरकार केन्द्र में होती थी और अधिकतर राज्यों में होती थी। इसीलिए हमने कहा कि संसदीय लोकतंत्र का स्वरूप बदल रहा है। 1967 का अभी जिक्र आया था उस समय भी शुरुआत हुई थी। नौ प्रदेशों में मिलीजुली सरकारें बनी थीं। इसीलिए हम चाहते हैं माननीय भा.ज.पा. नेतागण एवं दल के साथियों से कि इस सच्चाई को स्वीकार करना पड़ेगा और हम यह बार-बार दोहराना नहीं चाहते कि यह मिली-जुली सरकार का जनादेश है। इसलिए अटल जी को सच्चाई से इसे आपको स्वीकार करना पड़ेगा। यदि आपकी सरकार भी होती तो आपको अकाली दल का समर्थन शिव सेना हरियाणा विकास पार्टी और समता पार्टी के एक गुट का भी समर्थन था। पूरी का नहीं था, आदरणीय चन्द्र शेखर जी का समर्थन नहीं था उसमें। अकेले चन्द्र शेखर जी की बहुत बड़ी हैसियत है यहां।...**(व्यवधान)** मिलीजुली सरकार आपको भी बनानी थी अगर आपका बहुमत हो जाता।

[अनुवाद]

श्री चन्द्र शेखर : वे ऐसा प्रशिक्षण दे रहे हैं। ठीक है ...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : तो आपके सामने भी साझा सरकार के अलावा कोई चारा नहीं था इसलिए इसे सहज स्वीकार करना चाहिए। आप कहते हैं कि यह साझा सरकार स्थाई सरकार नहीं है। पर आपकी साझा सरकार कैसे स्थाई सरकार हो सकती थी? यह सही है कि भाजपा कई बार इधर सत्तापक्ष के लोगों के साथ रही है लेकिन उस समय अयोध्या, मथुरा और काशी का मसला आप नहीं उठाते थे। अगर आप उस समय उठाते तो हम आपके साथ कभी नहीं रह सकते थे। कोई रहता लेकिन हम आपके साथ नहीं रहते। जब आपने अयोध्या, मथुरा एवं काशी का मुद्दा उठाया तो उत्तर प्रदेश की विधान सभा में हमने साफ कहा कि न हम आपका समर्थन मांगेंगे और न हमें आपका समर्थन चाहिए। आप देश को बंटवारे की तरफ ले जा रहे हैं।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवधान न डालें।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : बहुत सोच-समझ कर मोर्चा बना है और यह मोर्चा नीति और कार्यक्रम देश के समक्ष प्रस्तुत कर चुका है। अब यह सरकार स्थायी है, मजबूत जन-समर्थन की सरकार है और यह सरकार पांच साल चलेगी। आप इंतजार करते रहिये कि यह सरकार कब जाएगी। इसी इंतजार में आप जिंदा रहेंगे। न्यूनतम कार्यक्रम के बारे में आपकी कई तरह की धारणाएं हैं उसके बारे में मैं क्या कहूं? उसके बारे में आपने कई टिप्पणियां की हैं। उनको मैं आखिर में लेना चाहूंगा, मैं यहां यह कहना चाहता हूं कि आपने देश को लगभग एक माह तक असमंजस में रखा। आपका बहुमत नहीं था। और सूची जो दी थी वह गलत सूची थी। आपके साथ 194 सदस्य नहीं थे। 194 सदस्यों की सूची राष्ट्रपति जी को देना और विरोधी दल के नेता माननीय अटल जी जैसे नैतिकता की दुहाई वाले देने वाले नेता द्वारा देना कहां तक जायेज था।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : राष्ट्रपति महोदय को कोई सूची नहीं दी गई।

श्री मुलायम सिंह यादव : अटल जी गलत बात बोलते हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये। विपक्ष के नेता ने पहले ही स्पष्टीकरण दे दिया है।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : जिस वक्त चन्द्र शेखर जी ने समर्थन देने से मना कर दिया तब अटल जी तो वह वोट से भाग गये। वोटिंग इसलिये नहीं करवायी कि जितनी संख्या का राष्ट्रपति जी को बताकर आये थे, वह संख्या भी नहीं थी। उसका नतीजा यह हुआ कि आज हिन्दुस्तान की 90 से लेकर 95 करोड़ जनता उसे भोग रही है, कोई काम नहीं हो पा रहा है। हमने नैतिकता स्वीकार की...**(व्यवधान)** हमने फैसला लिया कि जब तक हमारी सरकार सदन में विश्वास मत प्राप्त नहीं कर लेगी तब तक नीतिगत कोई फैसला नहीं लेगी। उसका नतीजा यह हुआ कि हम लोग 12 दिन से लगातार असमंजस्य में रहे, कोई फैसला नहीं ले सके। जो देश के बहुत जरूरी काम थे, वे भी नहीं हो सके। इसके लिये उत्तरदायी वे लोग हैं जिन्होंने राष्ट्रपति जी को असत्य कहा कि हम बहुमत में हैं।

कुछ माननीय सदस्य : हमें इस शब्द पर ओबजैक्शन है। यह अनपार्लियामैंटरी है। इस शब्द को कार्यवाही से निकाला जाये।

श्री मुलायम सिंह यादव : असत्य लिख दीजिये। मुझे इसमें नहीं जाना है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

[अनुवाद]

श्री हरिन पाठक : महोदय, इसे कार्यवाही वृतान्त से निकाल दिया जाय।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने इसमें सुधार कर दिया है।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : जहां तक अंतरविरोध का सवाल है, इसको बार-बार नहीं दोहराना चाहिये। माननीय चटर्जी साहब ने बता दिया कि गुजरात में क्या हुआ?

[अनुवाद]

प्रो. रासा सिंह रावत : महोदय, कृपया आप उस शब्द को कार्यवाही वृत्तांत से निकालने का निर्देश दें।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने इस शब्द को बदल दिया है।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : गुजरात में जो कुछ हुआ क्या वह एकता का सबूत था और क्या एकता का प्रदर्शन था? माननीय अंतुले जी और आदरणीय चटर्जी जी भी इस पर बोल चुके हैं। इसलिये इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है लेकिन यही सबसे बड़ी नमूना फासिज्म का होता है कि जितना असत्य बोल सको उतना बोले। ...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष जी, उसे असत्य कर दीजिये। अब ऐसा शब्द नहीं निकालूंगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवधान न डालें।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य सदन में नये हैं लेकिन उन्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिये कि सदन में ऐसा शब्द बोलना अनपार्लियामैंटरी है।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैंने असत्य कह दिया है।... **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने अपना शब्द वापस ले लिया है।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : विरोधी दल के माननीय नेता बहुत वरिष्ठ और पुराने मेम्बर हैं। मैंने असत्य कह दिया। इसके बाद उन्हें ऐसा कहने का शौक था...**(व्यवधान)**

हमारी बहन स्वराज जी को और भारतीय जनता पार्टी को बड़ी परेशानी हो गई कि मैं रक्षा मंत्री बन गया...**(व्यवधान)**

सभापति महोदय, परेशानी का कारण उनका सही भी है कि यदि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और मुलायम सिंह कमजोर हो जायेंगे तो इनको मौका मिल जायेगा लेकिन समाजवादी पार्टी और मुलायम सिंह यादव के रहते उत्तर प्रदेश में फासीवाद को पनपने नहीं दिया जायेगा।

अपराह्न 6.00 बजे

अध्यक्ष द्वारा घोषणा

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण मुझे सभा को सूचित करना है कि 10 जून, 1996 को कार्य मंत्रणा समिति की बैठक के निर्णय के अनुसार मंत्रि परिषद में विश्वास पर चर्चा करने के लिए बुधवार 12 जून 1996 को भी लोक सभा की बैठक होगी। अतः, सभा की बैठक कल भी होगी, अब छः बज गए हैं। किंतु यह सहमति हुई कि भोजनावकाश नहीं होगा। चूंकि भोजनावकाश नहीं हुआ इसलिए सभा की अनुमति से मैं सभा की बैठक एक घंटे के लिए बढ़ाता हूं।

श्री निर्मल कान्ति चटर्जी : आपने विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा करने के लिए सात घंटे आवंटित किये हैं किंतु आपने यह नहीं बताया सभा के व्यवधान के लिए कितना समय आबंटित किया है।

अध्यक्ष महोदय : व्यवधानों को ध्यान में रखा जाता है और वक्ता को दिये गए समय में से व्यवधानों में नष्ट समय घटा देते हैं।

अपरान्ह 6.01 बजे

मंत्रि-परिषद् में विश्वास-प्रस्ताव—जारी

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : अध्यक्ष महोदय, हमें आपसे यह कहना है कि हम महिलाओं का बहुत आदर करते हैं। हमारी पार्टी की भी यही नीति है...**(व्यवधान)**...बीजेपी की एक महिला को प्रवक्ता बना दिया है...**(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह कहकर महिलाओं के घावों पर नमक मत छिड़किये। उत्तरांचल के बारे में इलाहाबाद हाईकोर्ट का जजमेंट आपके सामने है। इसलिये महिलाओं की इज्जत पर नमक छिड़कने की बात मत कीजिये।

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति जी, हम लोगों ने यह कहा है कि यह सही है कि जब यह मिनिमम प्रोग्राम बनाया है तो सारे चुनाव घोषणा पत्र सामने रखकर यह प्रोग्राम बनाया है। जहां तक बीजेपी का प्रवक्ता बोल रही थीं, इसलिये मैंने कहा कि वह हमारी बहिन हैं, इसलिये बहिन का आदर करते हैं। अगर दूसरी प्रवक्ता होती हो हम सख्त बात कह सकते थे लेकिन आप पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। मैं तो यह कहना चाहता हूं कि आप समाजवादी रही हैं। अगर आप भूल गयी हैं तो कोई बात नहीं है। ये 1977 में चौधरी चरण सिंह के साथ थीं, उसके बाद रही हैं मगर आप भूल गयी हैं।

सभापति महोदय, यहां पर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बांगला देश महासंघ की बात बहुत वर्षों से चल रही है। यह हमारी पार्टी का कार्यक्रम था और है लेकिन जब मिनिमम कार्यक्रम बना तो जब आपने मन्दिर निर्माण, काशी, मथुरा का कार्यक्रम छोड़ दिया तो हमने भी महासंघ का दबाव इस कार्यक्रम में नहीं दिया है। हमारी पार्टी का कार्यक्रम जनमत बनाना है जो अलग चीज है। इसलिये मैं बहिन जी से कहना चाहता हूं कि इसके पीछे केवल एक मंशा है कि हिन्दुस्तान को मजबूत बनाना है। अगर आपका लक्ष्य भी हिन्दुस्तान को मजबूत बनाना है तो जो हमने कहा उसको उल्टा-सुल्टा देश के सामने मत रखिये। हिन्दुस्तान के लोग पाकिस्तान में आयें, पाकिस्तान के लोग हिन्दुस्तान जायें, बांगला देश के लोग यहां आयें लेकिन देश विरोधी को कहीं कोई इजाजत नहीं दी जा सकती है चाहे बांगला देश में हो, चाहे पाकिस्तान में हो या हिन्दुस्तान में।

[हिन्दी]

श्री राम नगीना मिश्र (पडरौना) : सभापति जी, ये बतायें कि बांगला देश से जो घुसपैठिये आये हैं, उनके बारे में क्या राय है?

श्री मुलायम सिंह यादव : हमारी नीति है, कार्यक्रम है लेकिन फिलहाल हम सरकार पर दबाव नहीं दे सकते हैं। जो हमने मिनिमम कामन प्रोग्राम बनाया है, उस पर एक हैं। हमें एक होने के लिये किसने मजबूर किया? वह मजबूर आपने किया और आपने ही कराया है।

क्योंकि आपको संसद में विश्वास नहीं, आपको न्यायालय में विश्वास नहीं और हिन्दुस्तान के सर्वोच्च राजनीतिक मंत्र राष्ट्रीय एकता परिषद में आपको विश्वास नहीं है। उसमें भी आप असत्य बोले। आपने कहा कि मस्जिद की हिफाजत करेंगे और मस्जिद की हिफाजत नहीं की। उसके बदले में सुप्रीम कोर्ट ने एक दिन की सजा दी। चाहे एक दिन की सजा हो या 20 साल की सजा हो लेकिन सुप्रीम कोर्ट की सजा की अपील नहीं की जा सकती है। अगर दूसरे को अपराधी कहोगे तो अपने दिल पर हाथ रखो और अपना चेहरा शीशे में देखो। सुप्रीम कोर्ट ने साबित कर दिया है कि आप दोषी हैं। आपने अपराध किया है यह सुप्रीम कोर्ट ने कहा जिसकी कहीं अपील नहीं हो सकती है। आप देश में असत्य बयान देकर पेश को गुमराह करते हैं।...**(व्यवधान)**

श्री बच्ची सिंह रावत (अल्मोड़ा) : उत्तराखण्ड में जो हुआ है उसके बारे में कहे।...**(व्यवधान)**

श्री मुलायम सिंह यादव : हमारी लक्ष्य है कि देश मजबूत करना है। अगर आपका लक्ष्य है कि देश को मजबूत करना है तो एक वातावरण बनाना पड़ेगा तथा पड़ौसी देशों से मधुर संबंध बनाने पड़ेंगे। जहां तक हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश की जनता का सवाल है, उनका आपस में रुझान है। अगर लड़ाई है तो राजनैतिक है और उसका भी हल निकाला जा सकता है और उसका हल हम निकालेंगे और मुझे इस बात की खुशी है कि हमारी सरकार के बनते ही पड़ौसी देशों ने रिश्ते मधुर बनाने का प्रयास किया और पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने जो पत्र लिखा है इसका हम स्वागत करते हैं और उनको बधाई देते हैं। हमारी सरकार बनने पर उन्होंने बधाई दी है। अगर देश को मजबूत बनाने का लक्ष्य है तो आपको अच्छे संबंध बनाने पड़ेंगे, यह हमारी नीति है। आपने अभी जो बात कही उस पर मैं बोलना नहीं चाहता था। आपने कहा कि समाजवादी पार्टी के लोगों ने गोलियां चलाईं। बहन सुषमा स्वराज जी ने ऐसा कहा। यह सही है कि गोली चली और यह सही है कि 16 जानें गईं और 16 जानें जाने की मुझे बेहद अफसोस है। मैंने पहले भी कहा था और उस दिन भी कहा था कि हमें अफसोस है लेकिन अध्यक्ष महोदय हमारे सामने देश का सवाल था, देश की एकता का सवाल था और देश की अखण्डता का सवाल था। मस्जिद की हिफाजत करके केवल मुसलमानों की हिफाजत हमने नहीं की। मस्जिद की ही केवल हिफाजत नहीं की, मंदिरों की भी हिफाजत की, गिरिजाघरों की भी हिफाजत की, गुरुद्वारों की भी हिफाजत की और जैन मंदिरों की भी हिफाजत की। सारे हिन्दुस्तान के जितने धर्मस्थल थे, उन सबकी हिफाजत की। देश की एकता को बरकरार रखने के लिए 16 जानें गई इसका हमें अफसोस है लेकिन मेरे जैसे देशभक्त के लिए देश की एकता के लिए और देश की खातिर 16 जानें कोई महत्व नहीं रखती हैं। देश की एकता के लिऐ आदमी की जान की कोई कीमत नहीं होती। देश की अखण्डता के लिए हमने यह काम किया है, हम स्वीकार करते हैं। हमारी सरकार ने काम किया था और देश की एकता के लिए 16 तो बहुत कम हैं अगर 32 जानें भी जाएंगी तो देश की एकता के लिए उनकी कोई कीमत नहीं होगी। इसका नतीजा आपको मिला। 6 दिसम्बर को जब मस्जिद गिरी तो सारी दुनिया ने देख लिया, सारे हिन्दुस्तान ने देखा कि आपने मस्जिद गिरायी। मस्जिद गिराने के बाद सरकारी आंकड़ों के अनुसार चाहे ढाई हजार या तीन हजार करोड़ रुपए हो, लेकिन अकेले बंबई में दस हजार करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। क्या यह मुसलमानों का ही नुकसान हुआ? टैक्सी वालों का, मजदूरों का और कारखानेदारों का नुकसान हुआ। उसमें हिन्दू भी थे और मुसलमान भी थे। इसके लिए कौन जिम्मेदार था? पूरे हिन्दुस्तान में 20 हजार करोड़ रुपए की संपत्ति बरबाद हुई। चार हजार के आंकड़े हैं लेकिन आज भी हम कहते हैं कि साढ़े सात हजार लोगों की जानें गई और 30 अक्तूबर तथा 1990 नवंबर को हमारी सरकार ने मस्जिद की हिफाजत करके कम से कम सात हजार लोगों की जानें बचाई और गुरुद्वारे से लेकर मंदिर और मस्जिद सबकी हिफाजत की। इसलिए गोली चलानी पड़ी।

अध्यक्ष जी, रामभक्त कौन है? ये हमें तो मानते नहीं हैं। हम राम के भी भक्त हनुमान के भक्त हैं। अटल जी गाय के पुजारी हैं।

मुलायम सिंह से भी कहोगे कि गाय के पुजारी हो। हममें से गोपलक तो हो सकते हैं। नेता विरोधी दल आपके घर में गाय को पूंछ है। चलिए हमारे घर पर, गाय तो हमारे यहां देखिये। हम कहते हैं गोवध बंद हो लेकिन नरवध पहले बंद हो। गाय वध पहले बंद हो। हम चाहते हैं गोवध बंद हो लेकिन नरवध भी बंद हो। जो नरवध हो रहा है इसका जिम्मेदार कौन है। लेकिन आज बंबई में, गुजरात में, अहमदाबाद में, कानपुर में बनारस में मस्जिद गिराकर के आप सांप्रदायिकता नहीं कहेंगे। सांप्रदायिक नहो कहेंगे। आप कह रहे हैं गोली क्यों चलानी पड़ी। हमारी पुलिस क्यों मजबूर हुई? आपने कहा कि हमारी भावना का सवाल है, हमारी आजादी का सवाल है। नेता विरोधी दल आपको मैं नहीं समझा सकता हूं। आपको मैं संदेश नहीं दे सकता हूं। आप बहुत बड़े पद पर हैं, 13 दिन प्रधान मंत्री भी रह चुके हैं। नेता विरोधी दल हैं। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जिस तरह से हत्याऐं हुई हैं इनके लिए जिम्मेदार कौन है। बंबई में जो कुछ हुआ दुर्भाग्यपूर्ण हुआ।...**(व्यवधान)** अहमदाबाद में हुआ, बनारस या कानपुर में हुआ, इसके लिए जिम्मेदार कौन है? बाकी सब जगह के लिए कौन जिम्मेदार हैं।...**(व्यवधान)** ये जिम्मेदार हैं, इनके लिए जिम्मेदार हैं भारतीय जनता पार्टी, शिवसेना...**(व्यवधान)**

श्री राम नाईक : इसमें आपको कम से कम कुछ जानकारी नहीं है। मुंबई के नाम पर कुछ मत बोलिए। आपको मुबंई को बारे में जानकारी नहीं है। आप अंधेरे में बैठे हुए हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि हम दलितों, पिछड़ों और किसानों के हिमायती हैं और रहेंगे। इसलिए रहेंगे कि हमें इस हिन्दुस्तान को मजबूत बनाना है। आप जैसा नहीं बनेगा कि मोरार जी देसाई के नाम पर पुल बनाना था और एक नेता ने बम्बई में अपने बाप के नाम पर बना लिया। हम ऐसा नहीं करेंगे। इसलिए मैं आपके सामने कहना चाहता हूं कि अगर देश को मजबूत बनाना है तो आपको सोचना पड़ेगा। आज हमारे बरनाला जो बैठे हुए हैं। इनसे हमें शिकायत हैं, जबरदस्त शिकायत हैं। पीलीभीत काण्ड भूल गये और ठीक है उस वक्त हम थे, चौधरी साहब थे। चौधरी साहब की राय कुछ हो सकती है। लेकिन सबसे ज्यादा अगर किसी ने हमदर्दी जाहिर की थी, अगर कोई लड़ा था सेना का उपयोग बंद करने के लिए तो वह नेता चन्द्र शेखर जी थे। आपने नाम नहीं लिया। आप कैसे नाम लेंगे। चाहे शुरूआत किसी ने की हो पंजाब में आग लगाने के लिए जिम्मेदार जो लोग हैं, उनके साथ आप बैठे हैं।...**(व्यवधान)** जहां तक जात-पांत का सवाल है...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपको उत्तर देने का अवसर मिलेगा।

[हिन्दी]

श्री सुखबीर सिंह बादल (फरीदकोट) : एक मिनट के लिए प्लीज। जिन लोगों ने हमारे बाप-दादा पर गोली चलाई, जिन लोगों ने कत्ल किये उन लोगों के आप...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इसके बाद बरनालाजी बोलेंगे।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बरनालाजी आएंगे।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : उत्तर प्रदेश के अंदर...**(व्यवधान)** भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने क्या किया...**(व्यवधान)** आपको अपनी बात कहने का मौका मिलेगा। दिल्ली में बचाने के लिए राम विलास पासवान जी मैं कहूंगा हम लोग भी बचे थे। राम विलास और मुलायम सिंह साथ-साथ चल रहे थे।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला (संगरूर) : तीन हजार सिखों का कत्ल कर दिया।...**(व्यवधान)** हमारे भाइयों और बहनों को कत्ल करते रहे।

अध्यक्ष महोदय : मैं देखूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री राम नाईक : मुलायम सिंह जी, एक मिनट के लिये। अध्यक्ष जी, यहां बड़ी हल्की बातें कही जा रही हैं, जो ठीक नहीं हैं. ..**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : वह इसे स्वीकार नहीं कर रहे हैं। आपको चांस मिलेगा, तब बोलना।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : आपको पता होना चाहिये ...**(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : देश के रक्षा मंत्री होकर मुलायम सिंह जी को इतनी हल्की बातें नहीं बोलनी चाहिये।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात समाप्त करें। आप 25 मिनट तो चुके हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूं आपने विरोध किया है। इतना काफी है। एक ही बात को आप बार-बार क्यों कह रहे हैं, क्या जरूरत है?

श्री मुलायम सिंह यादव : हम कहना चाहते हैं कि 12-12 साल के लड़कों को टाडा में बंद कर दिया गया था, जब उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। जब हमारी सरकार बनी तो हमने उसकी जांच कराई और उनको छोड़ा, रिहा किया। हम बरनाला साहब से कहते हैं कि कांग्रेस से अगर उनको कोई शिकायत है तो आप बीच में ही हो जाते, न इधर न उधर, किसी का समर्थन नहीं करते, बीच में हो जाते...**(व्यवधान)** इन्होंने उत्तर प्रदेश में जिस तरह टाडा लगाया, पीलीभीत में निर्दोष लोगों को मारा, वह सब कुछ आपने देखा, इसलिये वे भी उतने ही दोषी थे...**(व्यवधान)** जहां तक जांत-पांत का सवाल है...**(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : मुजफ्फरनगर कांड का भी जवाब दे दीजिए...**(व्यवधान)**

श्री मुलायम सिंह यादव : उसका जवाब मैं दे चुका हूं। जहां तक जार्ज साहब का सवाल है, उनके बारे में हमें ज्यादा कुछ नहीं कहना लेकिन एक बात जरूर कहनी है कि वे कई बार करवट लेते रहे हैं और लेते रहेंगे। दो बार करवट लेते हमने देखा है-एक बार कलकत्ता में अधिवेशन था, हम उस समय नौजवान थे, डा. लोहिया फर्रूखाबाद से जीतकर आये थे तो जार्ज साहब ने आरोप लगाया था कि डा. साहब जनसंघ के समर्थन से जीतकर आए हैं, फर्रूखाबाद में आपका सहयोग किया है, आपका काला चेहरा है...**(व्यवधान)** आपका काला चेहरा है-यह कहा था। अब जार्ज साहब जिनका समर्थन कर रहे हैं, क्या उनका चेहरा साफ है, क्या शीशे में देखा है कि काला चेहरा है या गोरा है, कैसा है। लेकिन हमें उनके बारे में ज्यादा टिप्पणी इसलिये नहीं करनी क्योंकि पता नहीं जार्ज साहब शाम तक हमारे पास फिर आ जाएं।

रामभक्त का सवाल भी है। उत्तर प्रदेश में प्रतिबंध लगा तथा भाजपा ने घोषणा की कि अयोध्या में वही प्रवेश करेगा जो रामभक्त होगा। हम भी गये, हमें भी जाना था। बाराबंकी के पास, हमारे साथी बेनी प्रसाद वर्मा जी जा रहे थे, सबको रोक दिया-क्यों रोक दिया गया कि प्रमाण पत्र लाओ। प्रमाण पत्र कहां से आए कि हम रामभक्त हैं-कोई तहसीलदार या कलैक्टर ऐसा प्रमाण पत्र नहीं दे सकता, फिर प्रमाण पत्र कौन देगा-ये देंगे। फिर हम गांधी जी को राष्ट्रपिता नहीं कह सकते, जैसे इन्होंने ही उन्हें यह नाम दिया हो। हम कहना चाहते हैं कि हम देश को मजबूत करने के लिये दलितों, पिछड़ों और

अल्पसंख्यकों के मन में विश्वास पैदा करेंगे, वह इसलिये कि हिन्दुस्तान के मानचित्र को देखिए, आपको ख्याल करना चाहिए की सीमा पर पंजाब है, पंजाब में बसे हुए सिख हैं, सीमा पर कश्मीर बसा हुआ है। इसके अलावा केरल, गोवा जितने हमारे सीमा के आसपास बसे लोग हैं, उनमें अल्पसंख्यकों की तादाद ज्यादा है। हमारी सीमा पर बसे अल्पसंख्यकों के मन में यदि असंतोष रहेगा, अगर उन्हें लगेगा कि पक्षपात हो रहा है, उनकी उपेक्षा हो रही है, अन्याय है, अत्याचार है तो हमारा देश टूट जाएगा और इसलिये हम हिन्दुस्तान के अंदर, जहां हम गरीब ब्राह्मणों की मदद करते हैं, मा. अटल जी तो लखनऊ से पार्लियामेंट के मैम्बर हैं, आपसे कहां ज्यादा दूर हैं, आपकी बगल में सीतापुर जिले में, मोहाना क्षेत्र से लगा हुआ गांव है, वहां रमाकांत शुक्ला की जिस तरह हत्या की गई, उसकी विधवा पत्नी एवं बच्चे तीन दिन भूखे रहे। हमने अखबार में पढ़ा, दौरे पर गए, कुंतन भवंती जी को लेकर पहुंचे तो पता चला कि...**(व्यवधान)***...उनकी बेटी तीन दिन से भूखी थी जो 24-25 साल की थी। हम वहां गए हैं। ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया समाप्त करें।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : उस विधवा लड़की की हमने मदद की। हमने सरकार बनने पर एक लाख रुपए की मदद की... **(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यहां कुछ लोगों का नाम ले रहे हैं कि वे हत्या में शामिल थे, यह आरोप लगा रहे हैं और इसके लिए सदन का उपयोग कर रहे हैं। हत्या में कौन था, कौन नहीं था, इसका फैसला अदालत करेगी। इस सदन में नाम कैसे लिया जा सकता है?

श्री मुलायम सिंह यादव : नाम कहां लिया? नाम किसी का नहीं लिया, आप कार्यवाही रिकार्ड देख सकते हैं। जिसकी हत्या हुई उसका नाम लिया है।

श्री मनोज (हाजीपुर) : ये गलतबयानी कर रहे हैं। ये यहां पर किसी का नाम कैसे ले सकते हैं?...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं रिकार्ड देखूंगा। यदि उसमें कुछ आपत्तिजनक बात निकली तो उसे हटा दूंगा।...

(व्यवधान)

* अध्यक्षपीठ के आदेशानसार कार्यवाही वत्तान्त से निकाल दिया गया।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : हमने एक लाख रुपए की मदद की। हमने रमाकांत शुक्ला की पत्नी, जो गरीब थी उसको हमने हमारी सरकार बनते ही एक लाख रुपए की सहायता दी। हम हर गरीब की मदद करते हैं। आज हिन्दुस्तान के अंदर मुसलमानों की तादाद कम है। उनकी तादाद कम थी इसलिए आपने मस्जिद गिरा दी। अगर मुसलमानों का बहुमत होता तो आपकी मस्जिद गिराने की हिम्मत नहीं थी।...**(व्यवधान)** हम मुसलमानों की मदद करेंगे, ईसाइयों की मदद करेंगे, सिखों की मदद करेंगे, जैनों की मदद करेंगे, बैद्धों की मदद करेंगे। हिन्दुस्तान में जो कमजोर वर्ग है, जो दलित है, पिछड़ा है, वह चाहे मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो उसकी मदद करेंगे। अगर हिन्दुस्तान को मजबूत करना है तो हमें इनको विश्वास में रखना होगा और विश्वास में रखकर हिन्दुस्तान में अमन-चैन कायम रखना होगा, तब हम हिन्दुस्तान से गरीबी हटा सकते हैं।

हम खेती की पैदावार बढ़ायेंगे, किसानों को भी विशेष सुविधाएं देंगे। यह सच्चाई है कि आप पर कौन भरोसा करेगा? आपने 370 धारा का नाम लेकर वोट मांगा। आपने समान आचार संहिता के नाम पर वोट मांगा। आपने कांशी, अयोध्या, मथुरा का नाम लेकर वोट मांगा। अगर ये मुद्दे नहीं होते तो आपके 100 एम.पी. जीतकर नहीं आ सकते थे। उस वक्त गाय दिखाई नहीं दी थी? गाय तो बाद में दिखाई दी थी आपको। अगर आपने गाय का नारा नहीं दिया होता, 370 धारा का नारा न दिया होता और मंदिर निर्माण का नारा न दिया होता, काशी-मथुरा का नारा न दिया होता तो आप 160 कभी नहीं आ सकते।

अब आती है नैतिकता की बात, अहिंसा की बात और शांति की बात। इसी दिल्ली शहर में, यह कहना पड़ेगा, चाहे रक्षा मंत्री के रूप में गैर रक्षा मत्री के रूप में, हिन्दुस्तान के अंदर इतिहास को नहीं भुलायेंगे। गांधीजी जैसे लोगों को अगर भुला देंगे, उनके आदर्शों को भुला देंगे तो देश मतबूत नहीं हो सकता है। गांधीजी को इसी शहर में गोली से शूट किया गया था। करने वाले कौन थे? गोडसे किससे संबंधित था?

कुछ माननीय सदस्य : आर.एस.एस. से।

श्री मुलायम सिंह यादव : जब आप गांधीजी को नहीं छोड़ सकते हैं तो हम पर हमला होता है 4 अप्रैल, 1994 को।...**(व्यवधान)** आदरणीय नेताजी मैंने आपका नाम कभी नहीं लिया।

प्रो. रासा सिंह रावत : आप यों ही आरोप लगा रहे हैं। आप क्या दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं?...**(व्यवधान)**

श्री मुलायम सिंह यादव : हम देश को मजबूत करना चाहते हैं। मुसलमान को, सिख को, ईसाई को, दलित को, पिछड़े को, किसान को, गांव-देहात के लोगों को हम मजबूत करना चाहते हैं। हम महिलाओं

को विशेष अवसर देकर इस देश को मजबूत करना चाहते हैं। जो प्रस्ताव आया है उसका हम समर्थन करते हैं।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : माननीय अध्यक्ष जी, मैं इस प्रस्ताव के विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। देवेगौड़ा जी भले आदमी हैं। एक गरीब, किसान परिवार से ताल्लुक रखते हैं। हमें इस बात की खुशी है कि इस देश का प्राइम मिनिस्टर एक गरीब किसान का बेटा है। ये पहली बार सदन में बतौर प्रधान मंत्री आए हैं। इनको लैंग्वेज का हैंडीकैप्ड नहीं होना चाहिए। हिन्दी तो बहुत जल्दी सीख जाते हैं।

अध्यक्ष महोदय, कुछ ऐसी बातें इन्होंने आते ही कही, मिनीमम प्रोग्राम की बात इन्होंने कही, उनमें से कुछ बातें हमें अच्छी लगी। इन्होंने कहा कि धारा 356 अमेंड करेंगे, सूटेबली अमेंड करेंगे, ताकि इसका मिसयूज न हो सके। शायद हमें देखते हुए ही यह बात कही गई है क्योंकि इस धारा का मिसयूज बार-बार हमारे ऊपर ही होता रहा है। इसी आर्टीकल 356 का सहारा लेकर सात दफा हमारी सरकारें तोड़ दी गई। हमें बार-बार इसका शिकार होना पड़ा है। हम बहुत समय से कह रहे थे कि यह धारा ठीक होनी चाहिए या खत्म होनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, हम हमेशा राज्यों को अधिक शक्तियां देने की बात करते रहे हैं। स्टेट आटोनोमी की बात करते रहे हैं। उसके बारे में भी इस मिनीमम कामन प्रोग्राम में संकेत दिया गया है। हम यहां कहना चाहते हैं कि अगर धारा 356 के सम्बन्ध में कोई लैजिस्लेशन लाया जाएगा, तो हम उसके लिए इनके हक में वोट देंगे। हर बात पर ऐसा नहीं है कि हम इधर के कहने से वोट देंगे और हर बात पर ऐसा भी नहीं है कि हम इनको सपोर्ट करेंगे। जो कुछ अच्छी बातें कही हैं उनके लिए हम सरकार को सपोर्ट अवश्य करेंगे।

राज्यों को केन्द्र से ज्यादा शक्तियां दी जाएं, हमने यह बात हमेशा कही है और यह बात हम आनंदपुर साहब प्रस्ताव के माध्यम से अनेक वर्षों से कहते चले आ रहे हैं। रीजनल पार्टीज इस बात में हमारे साथ रही हैं, लेकिन किसी ने हमारी यह बात नहीं सुनी। जब हम औटोनौमी की बात करते थे तो हमें कहा जाता था कि ये सेसेनिस्ट हैं, देश को तोड़ना चाहते हैं। हमारे खिलाफ ऐसो इल्जाम लगाए जाते रहे हैं। लेकिन मुझे खुशी है कि आज की सरकार खुद यह बात लेकर आई है। इस मिनीमम कामन प्रोग्राम में ये बातें हैं। अब देखना यह है कि ये बातें कैसे पूरी करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, इन्होंने कहा कि सरकारिया कमीशन की रिपोर्ट जो इतने दिनों से रद्दी की टोकरी में पड़ी रही है, उसे झाड-पोंछकर लाएंगे और अपडेट करेंगे। बहुत मुश्किल से सेंटर-स्टेट रिलेशन की बात चली थी। सेंट्रल गवर्नमेंट ने आनंदपुर साहब रिजोल्यूशन के आधार पर पंजाब अकार्ड में इसका जिक्र किया कि सेंटर-स्टेट रिलेशंस को फिर से देखा जाए। सरकारिया कमीशन बना और उसने बड़ी कल्यूमिनस रिपोर्ट, दो वाल्यूम में तैयार की, लेकिन उस रिपोर्ट पर सेंट्रल गवर्नमेंट ने कोई ध्यान नहीं दिया। 10 साल गुजर गए। उस रिपोर्ट को तैयार करने पर बहुत मेहनत हुई, बहुत से लोगों को एग्जामिन किया, सारे स्टेट के रिप्रजेंटेटिव्स को सुना और उसके आधार पर रिपोर्ट तैयार की गई। उससे लगने लगा था कि थोड़े बहुत स्टेट-सेंटर रिलेंशंस ठीक हो जाएंगे, लेकिन उस पर सरकार ने ध्यान नहीं दिया और वह रिपोर्ट रद्दी की टोकरी में डाल दी गई।

अध्यक्ष महोदय, अब हुआ यह कि हमारे बहुत से दोस्त रिजनल पार्टियों में हैं। हम यह भी चाहते थे कि हम इकट्ठे होकर चलें। ऐसी भी हमारी कोशिश रही। उन्होंने अपना फैसला कर लिया। अब यहां पर 32 पार्टियां बताई गई हैं, अच्छी बात है। यह भी कहा गया कि युनाइटेड फ्रंट बन गया। मैंने तो यहां पर ऐसा कहा था कि अगर सब लोग इकट्ठे होकर एक नेशनल गवर्नमेंट बना लें और इस प्रकार से एक राष्ट्रीय सरकार साझा रूप से बन जाए, तो उसमें भी हमें कोई आपत्ति नहीं है। और देश का भला है। लेकिन 13 पार्टियां इकट्ठे हो गये। 14 इकट्ठे होने वाले हैं। ऐसा हो जायेगा तो यह बहुत अच्छी बात है। बात बुरी नहीं लेकिन हमें यह थोड़ी शंका है कि यह चलेगी कैसे? उनकी तादाद तो पूरी नहीं हुई। जब तादाद पूरी नहीं हुई तो सहारा चाहिए था। सहारे के लिए, थोड़ा चलने के लिए क्रचेस की जरूरत पड़ी। एक क्या कांग्रेस का लेकर और एक क्या सी.पी.एम. का, लैफ्ट पार्टी का लेकर दो क्रचेस के सहारे चलने लगे हैं। हमें इसकी चिन्ता है कि ये क्रचेस कही गिर न जाये। क्रचेस कही टूट न जाये और फिर हमारे मित्र भी न गिर जाये। ऐसी हमें थोड़ी चिन्ता है क्योंकि यह जो क्रचेस हैं, उनका इतिहास हमेशा ऐसा ही है कि यह बहुत दूर तक साथ नहीं देती। अभी देखिये लैफ्ट में थोड़ा सा फैक्चर आ गया है। सी.पी.आई. शामिल होने के लिए तैयार हो गये हैं। सी. पी.एम. वाले सोच रहे हैं कि शामिल हो जायें या नहीं हो जायें। बात चल रही है। फारवर्ड ब्लाक ने फैसला कर लिया कि हम शामिल नहीं होंगे। अलग-अलग ऐसा नजारा सामने आने लगा है कि क्या होने वाला है। जब उन बैचिस से कहा गया कि हम तो पूरे पांच साल चलायेंगे तो मुझे खुशी हुई।

श्री ए.आर. अन्तुले : बराबर चलायेंगे।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : अन्तुले जी ने कहा है, यह बड़े जिम्मेवार आदमी हैं। मुझे खुशी है कि ये ऐसी बात कह रहे हैं। ये हमारे मित्र हैं, चला लें। हमें दिक्कत नहीं है लेकिन इसमें उम्मीद नहीं दिखाई दे रही। क्योंकि जिन लोगों ने पहले इतिहास ऐसा बनाया न हो, उनकी कहानी उल्टी हो तो फिर वे तो मौके की तलाश में रहते हैं। ऐसा होता रहा, हमारे देखते-देखते होता रहा। इसी सदन में होता रहा। लोगों को तोड़ा गया। तोड़कर उनको कहा गया कि हम आपको समर्थन देंगे। बहुत जोर से हम आपके पीछे खड़े हैं लेकिन थोड़ी देर भी नहीं खड़े होते। मुश्किल यह खड़ी हो गयी है कि यह टोटली इन लोगों पर डिपेंडेंट हो गये हैं। उसके बिना कुछ भी नहीं है। यह सारा खेल तमाशा एकदम से बिगड़ जाता है जब यह थोड़ा सा परे हो जाते हैं। परे होने के मौके बड़े बन जाते हैं। आज ऐसा मौका बना हुआ है क्योंकि यूरिया का स्कैंडल चल रहा है। यूरिया स्कैंडल में

कौन-कौन आने वाले हैं। बहुत से लोग विचार कर रहे हैं कि कौन-कौन आ जायेगा। यह बहुत सीरियस बात है जो कि सुबह उठाई गयी थी। लेकिन इस पर जितनी तवज्जो देनी चाहिए थी उतनी नहीं दी गयी है।

अध्यक्ष महोदय, पंजाब एग्रीकल्चरल स्टेट है। आज वहां धान की बोआई हो रही है। धान बोया जा रहा है, देश के लिए बोया जा रहा है क्योंकि पंजाब धान नहीं खाता। हम 80 लाख टन धान पैदा करते हैं। 80 लाख टन कॉमन पूल में आ जाता है। यह बहुत बड़ी बात है लेकिन अफसोस इस बात का है कि इस वक्त हमें यूरिया चाहिए जो कि वहां पर नहीं मिल रहा। एन.एफ.एल. ने जो बात चलाई कि हम बाहर से मंगा रहे हैं, इम्पोर्ट कर रहे हैं। अगर वह आ जाता तो बड़ी अच्छी बात होती। लोगों को मिल जाता। समय पर यूरिया न मिले, फसल में न डाला जाये तो फसल की जैसी हम उम्मीद करते हैं वैसी फसल नहीं होगी। यह मुश्किल में पड़ जायेगे। इसलिए मैं आपसे विनती कर रहा था कि इस बात का कुछ थोड़ा सा हिसाब लगाया जाये कि आखिर क्या हुआ। 133 करोड़ रुपये की रकम थोड़ी नहीं है। 133 करोड़ रुपये एक ही कम्पनी को दे दिये गये जो शायद नॉन ऐगजिस्टैन्ट हैं। जो विदेश की कम्पनी हैं। वहां से एक बोरी भी यूरिया नहीं आया है। सारा का सारा पैसा खत्म हो गया। कहां गया, किसकी जेब में चला गया, यह सारी बातें कल तक आ जानी चाहिए क्योंकि लोग इसके इंतजार मे हैं कि यूरिया को क्या हो गया है? यूरिया तो आने वाला था, वह क्यों नहीं आया? ऐसी बात मुश्किल से फंसी हुई है। इस में से आप ही निकालेंगे।

यहां यह भी बात आयी कि उन्होंने माइनौरिटी की तरफ बहुत तव्वजो दी है। हम इस बात का स्वागत करते हैं कि माइनौरिटी को तव्वजो देंगे लेकिन बातें तो सभी करते हैं कि माइनौरिटी को तव्वजो देंगे। यह आज तक नहीं दिया। कांग्रेस वाले कहते रहे लेकिन दिया नहीं।

1984 के दंगों की आज तक सजा नहीं हुई। मुलायम सिंह जी ने अभी कहा कि पीलीभीत में कुछ वाकया हुआ था, उस पर हमने ऐसा किया था। मैंने उसी समय इनको धन्यवाद किया था। इन्होंने बहुत जल्दी एक्शन लिया, सही तरफ से एक्शन लिया गया। बहुत ज्यादती हो गई थी, जेल में ही लोगों को मार डाला गया। इसलिए जब हमने इनसे जाकर कहा तो इन्होंने फौरन एक्शन लिया। उस एक्शन का हमने वैलकम भी किया, अखबारों में भी ऐसा आया। लेकिन यहां दिल्ली में जो कत्लेआम हुआ, वह बहुत बड़ी बात है। आपने बम्बई की बात की है, और जगह की की है लेकिन सबसे बड़ी बात दिल्ली की है। दिल्ली जो देश को राजधानी है, उसमें ऐसी भयानक बात हो जाए, इन्नोसैंट लोगों के गले में टायर डालकर जला दिया जाए, हजारों लोग मरवा दिए जाएं, ऐसा कत्लेआम तो कहीं देखा नहीं था, सुना नहीं था। सब बैठे हुए हैं। इन्हीं लोगों के साथ ये इकट्ठे हो गए हैं। ये हम पर गिला करते हैं, हम इन पर गिला करते हैं। ये भाई हमारे साथ रहे हैं, हम इनके साथ रहे हैं, हमारी बहुत सी बातें इकट्ठी हैं लेकिन कांग्रेस की सपोर्ट लेना, जिसका बहुत डूबिअस रिकार्ड भी है...। हमारे खिलाफ कत्लेआम की जो बात चली, सीधा इल्जाम इनपर लगा। इनके बड़े-बड़े लीडर उसमें फंसते थे, उनको प्रोटैक्ट करने के लिए दस साल लगा दिए। दस साल में तो स्पीकर साहब, ऐवीडैंस खत्म हो जाता है, आप तो जानते हैं। सारी कोशिश यह की गई है कि किस तरह से यह बात ठप्प हो जाए। छोटी बात नहीं थी, बहुत बड़ी बात हो गई थी।

दिल्ली में ही नहीं, कानपुर में क्या कुछ नहीं हुआ। मुलायम सिंह जी जानते हैं, दूसरे भाई भी जानते हैं, सैंकड़ों लोग मार दिए गए। मैं उस इतिहास में नहीं जाना चाहता।...**(व्यवधान)**

श्री मुलायम सिंह यादव : हमने कानपुर के मामले में उसके खिलाफ कार्यवाही कर दी थी। आप पता लगा लीजिए।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : जहां-जहां कार्यवाही हुई, वहां बहुत अच्छा हुआ।

तमिलनाडु के एक शहर में सारे सिखों की दुकानें लूट ली गईं। उन्होंने कम्पैनसेट किया। ऐसा कहीं-कहीं होता रहा। लेकिन दिल्ली की जो बात थी, उसको छिपाने की कोशिश की गई। हम इस बात को लेकर प्राइम मिनिस्टर तक पहुंचे और एक बार नहीं, बार-बार कहा गया लेकिन अफसोस यह हुआ कि इस तरफ ध्यान नहीं दिया गया। इसलिए मजबूरी हुई कि हम उनके साथ खड़े नहीं हो सके। हमने बताया कि जहां कांग्रेस सपोर्ट करेगी, वहां हम सपोर्ट नहीं कर सकेंगे। इसलिए हम इन भाइयों के साथ खड़े हुए हैं क्योंकि इन्होंने हमदर्दी का इजहार किया था। हमदर्दी का इजहार कुछ और लोगों ने भी किया था। उस दिन समय कम था, मैं कह नहीं सका। चन्द्र शेखर जी बैठे हैं, इन्होंने हमदर्दी का इजहार किया था, वी.पी. सिंह ने इजहार किया था। उस दिन मेरे पास थोड़ा समय था इसलिए मैंने थोड़े में बात की थी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

[अनुवाद]

कुमारी ममता बनर्जी : उन्हें केवल 40 सीटें मिली हैं। कांग्रेस की क्या स्थिति...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया ऐसे नहीं। आप ऐसा नहीं कर सकते। प्रत्येक सदस्य को ऐसा कहने का अधिकार है।

(व्यवधान)

कुमारी ममता बनर्जी : यदि सभा में ऐसा हो रहा है तो बाहर क्या होगा।...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : यह तो बहुत अभद्र आचरण है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ठीक है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे बड़ा अफसोस है। संसद सदस्यों को इस ढंग से पेश नहीं आना चाहिये। यह हमारे लिये बड़े अफसोस की बात है।

(व्यवधान)

डा. मुरली मनोहर जोशी : महोदय, मैं मानता हूं कि सभा के एक माननीय सदस्य को ऐसा सलूक नहीं करना चाहिये। मैं इसके लिये अपनी पार्टी की ओर से माफी मांगता हूं कि...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने माफी मांग ली है।...

(व्यवधान)

डा. मुरली मनोहर जोशी : महोदय यह सही नहीं है। बारामती से चुने गये मेरे मित्र कहते हैं कि 'यह सब नाटक है।' यह ठीक नहीं है...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : उनकी नजर में महिलाओं की कोई इज्जत है?

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूं कि वह मामला समाप्त हो गया है।

(व्यवधान)

श्री शरद पवार : आपकी नजर में महिलाओं की कोई इज्जत नहीं है।...**(व्यवधान)** यह ऊपरी जाति का दर्द है।

अध्यक्ष महोदय : मेरे विचार से वरिष्ठ सदस्यों को आपस में ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। उन्होंने बिना शर्त माफी मांग ली है इतना काफी होना चाहिये।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इतना काफी है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बस कीजिये इतना काफी है। उन्होंने माफी मांग ली है।

(व्यवधान)

श्री दत्ता मेघे (रामटेक) : यह बारामती क्या है? वह बारामती का नाम क्यों ले रहे हैं?...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : मेघेजी कृपया चुप हो जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री दत्ता मेघे : आप उनका नाम लो न, आपको नाम लेने में शर्म आती है क्या? आप बारामती क्यों बोलते हैं?...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : अब काफी हो गया। कृपया अब अपनी सीट पर बैठ जाइये।

अपराह्न 6.42 बजे

(श्री पी.एम. सईद पीठासीन हुए।)

[अनुवाद]

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन (क्विलोन) : श्रीमन्, मैं इस सभा का एक नया सदस्य हूं और यह मेरा पहला भाषण है। मेरा विनम्र निवेदन है कि यदि अगर मेरे भाषण में कोई गलती रह जाए, तो उसे क्षमा कर दिया जाए।

श्रीमन्, मैं अपने दल आरएसपी की ओर से, माननीय प्रधान मंत्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा द्वारा मंत्री परिषद में विश्वास के लिए रखे गए विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्रीमन्, यह दूसरा मौका है जब यह सभा विश्वास प्रस्ताव पर मतदान के लिए बुलाई गई है। जैसा कि आप भलीभांति जानते हैं, 15 दिन पूर्व भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इस सभा में विश्वास प्रस्ताव रखा था। उन्होंने सभा में प्रस्ताव प्रस्तुत किया था, लेकिन दुर्भाग्यवश उन्होंने मतदान की प्रतीक्षा नहीं की। इसका कारण वे ही जानते हैं। बीजेपी को भरोसा था कि वे सभा में बहुमत प्राप्त नहीं कर सकेंगे, इसीलिए वे सभा से चले गए। उन्होंने सभा में मतदान की प्रतीक्षा भी नहीं की। पिछले सत्र में यही सब हुआ।

मुझे माननीय प्रधान मंत्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा पर गर्व है और मुझे विश्वास है कि मतदान का परिणाम जो कुछ भी निकले, वे मतदान अवश्य करायेंगे और सभा में अपना बहुमत सिद्ध करेंगे। इस विश्वास प्रस्ताव का यही परिणाम निकलेगा।

पिछले माह की 28 तारीख को बीजेपी और शिवसेना गठबंधन को छोड़कर सारी सभा धर्मनिरपेक्ष ताकतों के साथ थी।

भारतीय संसद के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि मंत्री परिषद में विश्वास प्रस्ताव पर मतदान ही नहीं हुआ और उसका कोई परिणाम नहीं निकलने दिया गया। पिछली बार यह सब हुआ था।

माननीय भूतपूर्व प्रधान मंत्री जोकि अब विपक्ष के नेता हैं, के प्रति आदर प्रकट करते हुए मैं एक साधारण प्रश्न पूछना चाहता हूं कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली बीजेपी सरकार सभा में विश्वास प्रस्ताव पर मतदान कराने से पहले सभा से क्यों चली गई? इस सभा में इस प्रश्न का उत्तर दिया जाना चाहिए। विद्वान नेता से हम इसका उत्तर चाहते हैं। मान लें अगर बीजेपी को पूरा विश्वास था कि

वे बहुमत प्राप्त करने में समर्थ नहीं होंगे, तो उन्होनें माननीय राष्ट्रपति का निमंत्रण जोकि परम्परा पर आधारित था, को स्वीकार ही क्यों किया? राष्ट्रपति परम्परा के अनुसार चल रहे हैं। यदि उन्हें पूरा विश्वास था कि वे बहुमत के आधार पर सरकार नहीं बना सकेंगे तो उन्होंने राष्ट्रपति का निमंत्रण स्वीकार क्यों किया? इस प्रश्न का भी इस सभा में उत्तर दिया जाना चाहिए।

जहां तक इस लोक सभा चुनावों में जनादेश का संबंध है, लगभग सभी प्रख्यात नेताओं ने इस पक्ष पर अपने विचार रखे हैं। किसी भी दल को बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है। अतः जनादेश से स्पष्ट होता है कि भारत के लोग एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और मिलीजुली सरकार चाहते हैं। जनादेश यही है। जनादेश साम्प्रदायिकता के विरूद्ध है और भ्रष्टाचार के विरूद्ध भी है। हाल के लोक सभा चुनावों में यही जनादेश है।

राष्ट्रपति द्वारा भी देवेगौड़ा को प्रधान मंत्री नियुक्त करने पर, इस जनादेश की पूर्ति हुई है। इस नई सरकार में जनादेश की झलक मिलती है। आज सुबह प्रधान मंत्री द्वारा दिए गए शानदार भाषण से सिद्ध हो जाता है कि इस देश के प्रधान मंत्री पद के लिए वही उपयुक्त व्यक्ति है।

यह सभा, जिसमें इस देश के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व है, धर्मनिरपेक्षवादी ताकतों के साथ है। हम धर्मनिरपेक्षता का समर्थन करते हैं। इस संयुक्त मोर्चा सरकार का मुख्य उद्देश्य, भारतीय लोकतंत्र के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की रक्षा करना है।

जहां तक संयुक्त मोर्चे के न्यूनतम साझा कार्यक्रम का संबंध है, संयुक्त मोर्चे में 14 दल सम्मिलित हैं हमारे अलग-अलग कार्यक्रम और नीतियां हैं, लेकिन हम भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बचाने, देश को साम्प्रदायिकता ताकतों से बचाने और देश को त्रासदी से बचाने के लिए ही एक हुए हैं। न्यूनतम कार्यक्रम को लागू करने के लिए, हम संयुक्त मोर्चा के रूप में इकट्ठा हुए हैं, हम अधिक ताकत से आगे बढ़ेगें और संयुक्त मोर्चा सरकार पांच वर्षों तक चलेगी।

इस बारे में हम बहुत आशातीत हैं। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि आर्थिक नीतियों के संबंध में आर.एस.पी. और वामपंथी दलों के विचारों में कुछ मतभेद है। हम इस बात को स्वीकार करते हैं। साथ ही साथ हम इस आशा के साथ इस सरकार का समर्थन करते हैं कि यूनाइटेड फ्रंट सरकार उन लोकतांत्रिक उपायों, जो गरीबों के पक्ष में है, को सुनिश्चित करेगी और पिछली सरकार की जन विरोधी नीतियों को भी रद्द कर देगी। हम यह भी जानते हैं कि भारत के मेहनतकश लोगों की मूल मांगों को इस सरकार द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता, लेकिन फिर भी हम इस सरकार का समर्थन करते हैं। मैंने पहले ही कहा है कि हम इस सरकार का समर्थन इसलिए कर रहे हैं ताकि इस देश को साम्प्रदायिक शक्तियों से बचाया जा सके और हमारे धर्मनिरपेक्ष ढांचे की भी रक्षा की जा सके।

भ्रष्टाचार के संबंध में मैं पहले ही कह चुका हूं कि यह भ्रष्टाचार के विरूद्ध जनादेश है। महोदय, भ्रष्टाचार एक बढ़ता हुआ रोग है। यह एक कैंसर जैसा रोग है जो भारतीय राजनीति में फैल रहा है। इस बीमारी को रोकना होगा, इसे दूर करना होगा। मुझे अपने प्रधान मंत्री जी पर बहुत गर्व है जिन्होंने आज प्रातः यह कहा था कि भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के संबंध में सरकार की ओर से किसी प्रकार का राजनैतिक हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।

मैं एक बार फिर से मंत्रि-परिषद में इस विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि आर.एस.पी. का यह दृढ़ विश्वास है कि गत पांच वर्षों में जो भी घोटाले सामने आए हैं उनकी जांच की जाएगी और जो इसके लिए उत्तरदायी हैं उनको दंडित किया जाएगा। इस समय मैं भारत के माननीय प्रधान मंत्री के यह कहने पर कि भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के संबंध में किसी भी प्रकार का राजनैतिक हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, उन्हें बधाई देता हूं।

आदरणीय प्रधान मंत्री जी, सम्पूर्ण देश की नज़रे आप पर टिकी हुई हैं क्योंकि आप उनमें से एक हैं। अतः भारत के लोग पूरी तरह से आपके साथ हैं भारत के लोग, युवा, बच्चे, विद्यार्थी, भूमिक-वर्ग, मेहनतकश लोग आपके साथ हैं। प्रधान मंत्री जी आप साम्प्रदायिक शक्तियों का मुकाबला करें और भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ें। हम सब आपके साथ हैं।

इन शब्दों के साथ मैं विश्वास प्रस्ताव के समर्थन के लिए आर. एस.पी. के दृष्टिकोण को पुनः दोहराता हूं। महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री चित्त बसु (बारसाट) : महोदय, विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करना मैं एक महत्त्वपूर्ण विशेषाधिकार समझता हूं।

महोदय, श्री एच.डी. देवेगौड़ा के नेतृत्व में संयुक्त मोरचा सरकार की स्थापना का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। नई सरकार की स्थापना देश की सभी प्रगतिशील, लोकतांत्रिक, धर्म निर्पेक्ष तथा वामपंथी शक्तियों की उचित समय पर बहुचर्चित विजय का प्रतीक है। यह हमारी भारतीय राजनीति में एक नए युग का प्रतिनिधित्व भी करता है। नया युग के बारे में जनमत द्वारा स्पष्ट हो गया है कि यह एक सम्मिलन का युग है। हमें अब सम्मिलन अथवा रामलयन के प्रश्न का उत्तर देना है। इसके लिए संयुक्त मोरचा प्रगतिशील वामपंथी लोकतांत्रिक तथा देश भक्ति शक्तियों का सम्मिलन करके साझा सरकार बनाने के लिए सहमत हुआ है, ताकि भारत की राजनीतिक में एक बदलाव लाया जाए।

महोदय, दूसरी ओर मैं भारतीय जनता पार्टी के अपने मित्रों को भी याद दिलाना चाहता हूं कि वे भी मुली-जुली सरकार बनाने चाहते थे या इसकी मांग कर रहे थे। उन्होंने रामलयन किया और रामलयन भी प्रतिक्रियाशील शक्तियों का नहीं अपितु सांप्रदायिक शक्तियां, धार्मिक कट्टरपंथियों और पुनर्जागरणवाद का है। यदि इस प्रकार का संलयन सत्ता में रहता है तो यह हमारे देश की एकता और अखंडता

के लिए एक भारी खतरा होगा। दोनों सम्मिलनों में यही अंतर है। एक सम्मिलन देश को पीछे की और धकेलने वाला है और दूसरा सम्मिलन देश को कुशल आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति की ओर ले जाना चाहता है।

महोदय, जहां तक सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम का संबंध है यह एक प्रकार से जनता के संघर्ष की एक महान उपलब्धि है।

महोदय, जहां तक सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम का संबंध है, यह जनता के संघर्ष की एक ऐतिहासिक घटना है।

सभापति महोदय : कृपया अपना भाषण समाप्त कीजिए।

श्री चित्त बसु : महोदय, मैं अधिक समय नहीं लूंगा। यह केवल सरकार का कार्यक्रम नहीं हैं। ऐसा कहते हुए मुझे विश्वास हो रहा है। यह न्यूनतम कार्यक्रम हमारे देश में निरन्तर सामूहिक संघर्ष का परिणाम है। यह कार्यक्रम कर्मकारों और किसानों के संघर्ष कृषि कर्मकारों, युवाओं, विद्यार्थियों, महिलाओं तथा हमारे समान के अन्य शोषित वर्गों के परिणाम स्वरूप सामने आया है। यह हमारे देश की जनता को गतिशील बनाने में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इस सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम से न केवल प्रकासन के प्रति एक वैकल्पिक दृष्टिकोण की व्यवस्था हुई है बल्कि इससे हमारे देश की सामाजिक-आर्थिक नीतियों के लिए भी एक वैकल्पिक व्यवस्था हुई है। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

सभापति महोदय : कृपया भाषण समाप्त कीजिए।

श्री चित्त बसु : इसमें कहा गया है कि इस मिले-जुले अथवा सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम में संघवाद, विकेन्द्रीकरण, उत्तरदायित्व समानता, सामाजिक न्याय, आर्थिक तथा राजनीतिक सुधार मानव स्वतन्त्रता के प्रति सम्मान, खुलेपन और पारदर्शिता पर आधारित एक वैकल्पिक आदर्श शासन की आशा प्रकट की गई है।

सभापति महोदय : हम 7.00 बजे सभा स्थगित करेंगे। मुझे एक और वक्ता को बोलने का अवसर देना है।

श्री चित्त बसु : आज सवेरे मुझे प्रधान मंत्री का भाषण सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा कि पारदर्शिता, उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए, सरकार के उचित कार्यकरण के लिए वे हाल ही के वर्षों में और अपने नोटिस में लाई गई सभी भ्रष्ट प्रथाओं के विरूद्ध कार्यवाही करने में संकोच नहीं करेंगे। यह सरकार के दृढ़ संकल्प की घोषणा है कि सार्वजनिक जीवन सदाचार और कर्त्तव्यनिष्ठा को प्रोत्साहन देकर सार्वजनिक जीवन को स्वच्छ बनाएं और मेरा विचार है कि यह हमारे देश में मूल्यों पर आधारित राजनीति को बनाए रखने का और देश के प्रशासन में मूलभूत और गुणात्मक परिवर्तन लाने का भी एक कार्यक्रम है।

अंत में, मैं इस संदर्भ में कहूंगा कि इस कार्यक्रम से एक नए सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सहायता मिलेगी मैं समझता हूं कि इस सभा को लिए इस नए मंत्री परिषद् के प्रति विश्वास व्यक्त करना एक महान विशेषाधिकार होगा, और मेरा विचार है कि प्रधान मंत्री भी इस सभा को आश्वासन देंगे और इस सदन के द्वारा देश वे न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अनुसार अपना कार्यक्रम लागू करने का प्रयास जारी रखेंगे।

श्री बीरेन्द्र प्रसाद वैश्य (मंगलदोई) **:** माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा द्वारा पेश किये गए प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

सभापति महोदय, हाल ही में संपन्न हुए आम चुनाव में जनता ने धर्मनिरपेक्षता के पक्ष और साम्प्रदायिकता के विपक्ष में मतदान किया है। हमारी पार्टी असम गण परिषद एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक क्षेत्रीय पार्टी है जिसका दृष्टिकोण राष्ट्रीय है। हम धर्मनिपक्षेता में विश्वास रखते हैं। प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा के नेतृत्व में संयुक्त मोर्चा सरकार धर्मनिरपेक्षता के प्रति प्रतिबद्ध है। इसलिए हम संयुक्त मोर्चा सरकार को पूर्ण समर्थन और सहयोग देते हैं।

जैसा कि आप लोग जानते हैं कि ऐतिहासिक असम आन्दोलन के बाद असम कुछ गंभीर समस्याओं का सामना करता रहा है। वर्ष 1985 में तत्कालीन प्रधान मंत्री ने अखिल असम छात्र संघ और असम गण संग्राम परिषद के साथ असम समझौते पर हस्ताक्षर किये थे। किंतु बाद में आने वाली सरकारों की अज्ञानता और उपेक्षा के कारण असम समझौते की अधिकतर धाराओं को लागू नहीं किया गया।

असम में प्राकृतिक और खनिज संसाधनों की प्रचुरता है। असम में नाम कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, प्लाईवुड, विशाल जंगल और जल संसाधन पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं।

किंतु आर्थिक दृष्टि से सम्पूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्रों और विशेषकर असम बहुत पिछड़ा राज्य है।

अपराह्न 7.00 बजे

महोदय, कई वर्षों से राज्य में देशद्रोही गतिविधियां जारी है। असम की अल्फा और बी आर डब्ल्यू एस एफ की समस्या को सेना की तैनाती या बंदूक से हल नहीं किया जा सकता है। सार्थक राजनीतिक बातचीत और आर्थिक विकास से ही राज्य में शांति स्थापित की जा सकती है।

महोदय, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि हाल ही में संयुक्त मोर्चा ने अपने न्यूनतम साझा कार्यक्रम की घोषणा की है जिसमें असम समस्या को भी सम्मिलित किया गया है। माननीय प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा ने असम और पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर हल करने का वचन दिया है ... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री ब्रह्मानन्द मंडल (मुंगेर) **:** सभापति महोदय, 7 बजे हैं।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया अपना भाषण समाप्त कीजिये।

(व्यवधान)

श्री बीरेन्द्र प्रसाद वैश्य : महोदय, 1987 में मंगलदोई में असम गण परिषद का सम्मेलन हुआ था। जिसमें हमारी पार्टी ने एक संकल्प पारित कर तत्कालीन केन्द्र सरकार से सरकारिया आयोग को सिफारिशों को लागू करने के लिए कहा था। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि वर्तमान प्रधान मंत्री श्री देवेगौड़ा ने सरकारिया आयोग की सिफारिशों को लागू करने में दिलचस्पी दिखाई है।

उस सम्मेलन में एक दूसरे संकल्प के माध्यम से हमारी पार्टी में तत्कालीन सरकार से भारतीय संविधान के अनुच्छेद 356 का दुरूपयोग न करने के लिए कहा था। असम पद कई बार अनुच्छेद 356 की मार पड़ी है। वर्ष 1990 में बिना किसी वैध कारण के राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू किया गया था। मुझे प्रसन्नता है कि वर्तमान प्रधान मंत्री ने घोषणा की है कि संयुक्त मोर्चा सरकार भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 का दुरूपयोग नहीं करेगी।

महोदय, असम गण परिषद की और से तथा असम की जनता की ओर से मैं संयुक्त मोर्चा सरकार का तहेदिल से समर्थन करता हूं। मुझे आशा है कि यह सरकार सकारात्मक कार्यवाही कर असम और पूर्वोत्तर क्षेत्र की जनता की भावना के अनुरूप कार्य करेगी।

अपराह्न 7.04 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा बुधवार, 12 जून, 1996/22 ज्येष्ठ, 1918 (शक) के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

© 1996 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (आठवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और **डाटा प्वांईट**, 615, सुनेजा टावर–II, डिस्ट्रिक्ट सैन्टर, जनक पुरी, नई दिल्ली–58 (फ़ोन–5505110) द्वारा मुद्रित।